khallaas

an A to Z guide to the underworld

J. Dey

खल्लास

a glimpse into the world of dons, gangsters and cops

JAICO

Table of Contents

परिचय

स्वीकृतियाँ

ए

बी

सी

डी

ई

एफ

जी

एच

मैं

जे

के

एल

एम

एन

पी

क्यू

आर

एस

टी

यू

वी

डब्ल्यू

X, Y और Z

khallaas

an a to Z guide to the underworld

J. dey

खल्लास

a glimpse into the world of dons, gangsters and cops

JAICO

गंदा

एक ए से जेड गाइड

पाताल लोक

गंदा

एक ए से जेड गाइड

पाताल लोक

खल्लास

डॉन, गैंगस्टर और पुलिस की दुनिया की एक झलक

जे. डे

जैको पब्लिशिंग हाउस

अहमदाबाद, बैंगलोर, भोपाल, भुवनेश्वर, चेन्नई

दिल्ली हैदराबाद कोलकाता लखनऊ मुंबई

जैको पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित

A-2 Jash Chambers, 7-A Sir Phirozshah Mehta Road

फोर्ट, मुंबई - 400 001

jaicopub@jaicobooks.com

www.jaicobooks.com

© जे. डे

गलती:

अंडरवर्ल्ड का ए टू जेड गाइड

ISBN 978-81-7992-850-9

जैको के बारे में पहली राय: 2008

जैको की पांचवीं छाप: 2011

इस पुस्तक का कोई भी भाग पुनरुत्पादित या उपयोग नहीं किया जा सकता है।

किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या

फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी अन्य यांत्रिक विधि सहित

सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली,

प्रकाशकों से लिखित अनुमति के बिना।

द्वारा मुद्रित

रिप्रो इंडिया लिमिटेड

प्लॉट नंबर 50/2, टी.टी.सी. एमआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र

Mahape, Navi Mumbai - 400 710.

अंतर्वस्तु

परिचय

स्वीकृतियाँ

ए

बी

सी

डी

ई

एफ

जी

एच

मैं

जे

के

एल

एम

एन

पी

क्यू

आर

एस

टी

यू

वी

डब्ल्यू

X, Y और Z

एक पुरानी कहावत को दोहराते हुए, मुंबई में हर मिनट एक सपना जन्म लेता है। सतह पर भी और सतह के बाहर भी। पायधोनी और डोंगरी की घुमावदार गलियों और मोहल्लों में, उन सपनों की अपनी एक अलग भाषा और चरित्र है। अंधकारमय, निर्मम और बेहद रोमांचक।

यहां कोई भी तब भौंहें नहीं उठाता जब एक पुलिस कांस्टेबल का बेटा 'भाई' बन जाता है, या एक छोटा-मोटा चायवाला अपने मोहल्ले में दबदबा कायम करने लगता है। उनकी जीवन कहानियों में एक ही बात समान है: बिग डैडी बनने की ताकत और महत्वाकांक्षा। गॉडफादर बनने की चाहत।

दुर्गम इलाकों की कहानियाँ फिल्मों में जगह बना चुकी हैं और पूरे देश की कल्पना को झकझोर कर रख दिया है। करीम लाला और हाजी मस्तान से लेकर माया डोलास और दाऊद इब्राहिम तक, लगभग हर कोई इन किरदारों की प्रसिद्धि और दौलत में हुई अचानक वृद्धि से अचंभित है।

अपराध जगत की रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकार के तौर पर, मेरा कानून के रखवालों और कानून की दुनिया में रहने वाले लोगों से लंबा जुड़ाव रहा है। मैंने वर्दीधारी लोगों, अंडरवर्ल्ड के लोगों और पुलिस मुखबिर के रूप में काम करने वाले संदिग्ध लोगों से घंटों बातचीत की है।

मुंबई में एक दशक से अधिक समय तक अपराध की रिपोर्टिंग करते हुए मैंने जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसका अधिकांश हिस्सा छप चुका है। लेकिन कई कारणों से बहुत कुछ अनकहा भी रह गया। अक्सर, जब मैं अपने मित्रों को ऐसी कहानियों के कुछ अंश सुनाता था जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी थीं, तो वे अत्यंत प्रसन्न हो उठते थे।

यह विरोधाभासी लग सकता है, लेकिन अंडरवर्ल्ड में रहने वाले लोग काफी हद तक हमारे जैसे ही होते हैं, बस फर्क इतना है कि वे ज़्यादा जोखिम भरी ज़िंदगी जीते हैं। यह एक ऐसी दुनिया है जिसने अपनी एक अलग भाषा विकसित कर ली है—जिनमें से कई शब्द तात्कालिक परिस्थितियों में ही बन जाते हैं। इस प्रकार, अंडरवर्ल्ड में पुलिस, प्रतिद्वंद्वियों, जबरन वसूली, इनाम और यहाँ तक कि बड़े सरगनाओं का वर्णन करने के लिए भी अनोखे शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं, जिनमें से अधिकांश का उद्देश्य पुलिस या किसी विरोधी को बेवजह परेशान करना होता है।

यह एक ऐसी दुनिया है जो उद्यमशीलता की भावना पर फलती-फूलती है। यहाँ भी धंधा के नियम समान रूप से लागू होते हैं—जोखिम, लाभ और प्रतिस्पर्धा मूल तत्व हैं। एक मुखबिर अपने प्रतिद्वंद्वी के बारे में पुलिस को बहुमूल्य जानकारी बेचने से भी नहीं हिचकिचाएगा, अगर इससे उसे कुछ अच्छे पैसे या साख मिल सकती है। यहाँ नियम स्पष्ट हैं और नैतिकता सर्वोपरि है। उद्यमशीलता और व्यवस्था को मात देने के नए तरीके ऐसे कौशल हैं जिन्हें वर्षों के परिश्रम से निपुणता प्राप्त होती है।

अंडरवर्ल्ड भी सक्रिय रूप से खतरे और मौत को न्योता देता है। कई मायनों में, इसने हम जैसे आम इंसानों के डर पर विजय प्राप्त कर ली है - इस किताब को लिखने के दौरान, अंडरवर्ल्ड में मेरे चार सूत्रों की मौत हो गई - कुछ पुलिस की गोलियों से, तो कुछ गिरोहों के आपसी संघर्ष में।

आगे के पन्नों में, मैं आपके साथ कुछ ऐसी कहानियाँ साझा करूँगा जो आपको इस ब्रह्मांड से रूबरू कराएँगी - जो जीवंत, गतिशील और हाँ, खतरनाक भी है।

ये कहानियां और शब्द वर्षों से अंडरवर्ल्ड के हाशिये पर रहने वाले सैकड़ों लोगों के साथ मेरे संवाद से एकत्रित हुए हैं।

डी. शिवानंदन, जो उस समय केंद्रीय जांच ब्यूरो के संयुक्त निदेशक थे, ने मुझे महत्वपूर्ण आंकड़े उपलब्ध कराए। उन्हें मुझ पर भरोसा था और उन्होंने कई घंटे मुझे अंडरवर्ल्ड के बारे में विस्तार से समझाने में बिताए।

मैं मुंबई स्थित द इंडियन एक्सप्रेस के रेजिडेंट एडिटर उन्नी राजेन शंकर का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे अखबार में लगभग तीन वर्षों तक 'नोट्स फ्रॉम द अंडरवर्ल्ड' नामक कॉलम लिखने के लिए प्रेरित किया।

मेरी वर्तमान कंपनी मिड डे ने मेरे साथ धैर्य रखा और मुझे किताब पूरी करने के काम पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति दी।

मैं मिनी पंत ज़ाचरिया, श्वेता रामानुजम दीक्षित, निखिल दीक्षित, मोहन भानुशाली, सतीश पुरोहित और अपनी पत्नी शुभा का आभारी हूँ। उनके बिना यह पुस्तक कभी पूरी नहीं हो पाती। मेरी माँ और बहन ने भी कमरे में बिखरे हुए ग्रंथों के ढेर को लगन से व्यवस्थित किया।

स्वर्गीय श्रीमती कोरिया ने बड़ी कृपा करके बांद्रा स्थित अपने जर्जर आवास को कुछ गिरोह के सरगनाओं के लिए बैठक स्थल के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति दी थी। मैंने शहीद अमजद खान के कार्यालय को पुलिसकर्मियों के लिए बैठक स्थल में परिवर्तित कर दिया था। ज़ीशान, योगेश और दिलीपभाई ने रिकॉर्ड रखने में मेरी भरपूर मदद की।

युवा प्रकाशक आकाश शाह और मुख्य संपादक रायसम शर्मा शुरू में अंडरवर्ल्ड विषय पर लिखने को लेकर संशय में थे और नहीं चाहते थे कि गुंडे उनके दफ्तर में फोन करें। लेकिन उन्होंने आखिरकार इस विषय पर लिखने का फैसला किया।

डॉ. सत्य पाल सिंह, राकेश मारिया, परमबीर सिंह और प्रदीप सावंत जैसे अधिकारियों ने मुझे पुस्तक पूरी करने के लिए प्रेरित किया है।

आप जहाँ सीखते हैं

मुंबई की आर्थर रोड जेल का अंडा सेल, जो कड़ी सुरक्षा वाला हिस्सा है और जहां देश के कुछ सबसे कुख्यात गैंगस्टरों, मनोरोगियों और आर्थिक अपराधियों को रखा जाता है, के पास सुनाने के लिए सैकड़ों कहानियां हैं।

इस कोठरी की भयावह दीवारों के भीतर अबू सलेम, दाऊद इब्राहिम के भाई इकबाल, छोटा राजन के गुर्गे डी के राव, विक्की मल्होत्रा और फरीद तनाशाह जैसे सरगनाओं को रखा गया था। इस कोठरी की चारदीवारी के भीतर सैकड़ों नापाक साजिशें रची गईं और मुंबई की सड़कों पर भाड़े के गुंडों द्वारा उन्हें अंजाम दिया गया।

अंधेरी कोठरी अंडे के आकार की बैरक में बने नौ खाली कमरों से मिलकर बनी है, और इसी से इसका नाम 'अंडा' पड़ा है। मूल रूप से 1926 में एकांत कारावास क्षेत्र के रूप में निर्मित, प्रत्येक कोठरी में अब दो कैदी रहते हैं। हर कोठरी में एक टेबल फैन और एक बिस्तर है। बड़े-बड़े गैंगस्टर मोबाइल फोन और महंगे म्यूजिक सिस्टम जैसी सुविधाओं का भी लाभ उठाते हैं। अधिकतम सुरक्षा वाले इस क्षेत्र में भीतरी और बाहरी बाड़ पर पहरेदार तैनात रहते हैं।

अंदर साबुन की चटाई लगाना

साबुन ने ओपी को कैसे मार डाला

छोटा राजन के पूर्व सहयोगी, ओम प्रकाश सिंह उर्फ ओपी उर्फ विल्सन ने वह काम किया जिसे कुख्यात गैंगस्टर एक घातक पाप मानते हैं - उसने अपने दो साथियों को अपने चेहरे पर साबुन लगाने की अनुमति दी।

यह 24 नवंबर, 2002 की बात है। ओपी नासिक जेल में रविवार की दोपहर स्नान का आनंद ले रहा था। उसके दो साथियों ने साबुन लगाकर उसे नहलाया।

कुछ ही देर में कुछ लोगों ने ओपी को वॉशरूम क्षेत्र में फर्श पर गिरा दिया, जहां उनमें से एक ने फंदा तब तक कस दिया जब तक उसकी मौत नहीं हो गई।

जेल के अंदर किसी सहयोगी की हत्या करने के लिए बस कुछ सौ रुपये ही काफी होते हैं।

जेल अधिकारियों ने मौत का कारण दिल का दौरा बताया। उन्होंने नासिक जेल के अंदर नायलॉन की रस्सी, क्रिकेट का सामान और कुछ हथियारों की तस्करी को छिपाने की कोशिश की।

अब्दुल कयूम करीम शेख

दाऊद इब्राहिम गिरोह का प्रमुख सदस्य जिसे 2006 के अंत में दुबई से भारत प्रत्यर्पित किया गया था।

केंद्रीय जांच ब्यूरो के पास मौजूद रिकॉर्ड के अनुसार, शेख ही वह व्यक्ति था जिसने 9 मिमी कैलिबर की पिस्तौल पहुंचाई थी जो 1993 में बॉलीवुड अभिनेता संजय दत्त के पास से बरामद हुई थी। दरअसल, यह बंदूक अभिनेता को गैंगस्टर अबू सलेम ने पहुंचाई थी, जो 1993 के बम विस्फोट का आरोपी भी है।

दुबई में अपने कार्यकाल के दौरान शेख डी-कंपनी की गतिविधियों को संभाल रहे थे। यह भी कहा जाता है कि शो के लिए रेगिस्तानी राजधानी में आने वाली कई बॉलीवुड अभिनेत्रियों से उनके अच्छे संबंध थे।

दुर्घटना/स्वीकारोक्ति (पुलिस द्वारा पीछा किया गया और गिरफ्तार किया गया)

जब कोई गैंगस्टर गिरफ्तार होने वाला होता है, तो वह अपने साथियों को चेतावनी देते हुए कहता है, 'दुर्घटना हो गई है।' और अगर वह गिरफ्तार हो जाता है, तो वह कहता है, 'भर्ती हो गई है।'

ये सांकेतिक संदेश उनके साथियों को यह चेतावनी देने के लिए काफी होते हैं कि पुलिस जल्द ही उनका पीछा करने वाली है। इस संकेत का अक्सर मतलब होता है कि अभी तक गिरफ्तार न हुए साथी अपने मोबाइल फोन फेंक देते हैं और इसी तरह की 'दुर्घटना' या 'स्वीकृति' से बचने के लिए किसी दूसरे ठिकाने पर चले जाते हैं।

Aftab Ansari (Farhan Bhai)

आफताब अंसारी अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम के लिए खतरा बनता जा रहा था।

दाऊद की तरह, कोलकाता के अंसारी उर्फ फरहान भाई ने भी महज तीन साल में मुंबई से काठमांडू और यहां तक कि दुबई तक अपना साम्राज्य फैला लिया। उसके साथियों को लश्कर-ए-तैबा जैसे संगठनों के साथ युद्धग्रस्त अफगानिस्तान में गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया था।

अंसारी, अपने गुरु बबलू श्रीवास्तव की तरह, अपहरण में माहिर थे। कोलकाता में दो स्टॉक ब्रोकर, निरंजन शाह और खादिम ग्रुप के मालिक पार्थो रॉय बर्मन का अपहरण उनके कुछ 'सफल कारनामों' में शामिल था। हालांकि, 2003 में दुबई में उनकी गिरफ्तारी के साथ ही उनकी तेजी से बढ़ती लोकप्रियता पर विराम लग गया। उसी वर्ष उन्हें भारत प्रत्यर्पित कर दिया गया।

अली बुदेश (एनआरआई गैंगस्टर)

गली के गुंडे से डॉन बनने तक, बहरीन स्थित गैंगस्टर अली बुदेश का उदय बहुत ही तेजी से हुआ।

भारतीय माता और अरब पिता के पुत्र बुदेश, सत्तर के दशक के उत्तरार्ध में घाटकोपर के पंकेशाह बाबा दरगाह के पास एक जाना-पहचाना चेहरा थे, जहाँ वे भारत की यात्राओं के दौरान रहते थे। अली, जैसा कि उन्हें तब जाना जाता था, अक्सर विक्रोली पार्क साइट के कैरम क्लबों में एक पुरानी नॉर्टन मोटरसाइकिल पर सवार होकर जाते हुए देखे जाते थे। वे वहाँ सभी खिलाड़ियों के लिए नियमित रूप से शीतल पेय प्रायोजित करते थे। स्थानीय लोगों का मानना था कि वे बहरीन से छुट्टी पर आए एक सीमा शुल्क अधिकारी थे। लेकिन उनकी विलासितापूर्ण जीवनशैली ने उन्हें 1978 और 1980 के बीच इलाके के बदमाशों और जेबकतरों के बीच लोकप्रिय बना दिया। इन्हीं यात्राओं के दौरान बुदेश ने स्थानीय गुंडों से संपर्क स्थापित किया, जिनमें से कई नवगठित दाऊद इब्राहिम गिरोह से जुड़े थे।

बुदेश ने जल्द ही बड़े दांव-पेच में हाथ आजमाना शुरू कर दिया और अपने गुरु दाऊद इब्राहिम की तरह जबरन वसूली के धंधे में शामिल हो गया। इस धंधे में जाने-माने नाम सुभाष सिंह ठाकुर और श्यामकिशोर गरिगापत्ती उसके करीबी सहयोगी थे। मुठभेड़ में अपने प्रमुख लेफ्टिनेंट रफीक डब्बावाला के मारे जाने के बाद बुदेश के गिरोह को बड़ा झटका लगा। अरब से संपर्क होने के कारण उसे बहरीन में सुरक्षित पनाह मिल गई।

अमीरजादा (अमीरजादा नवाब खान)

मुंबई के रेड-लाइट इलाकों में जेबकतरों के रूप में शुरुआत करने के बाद, उसने सईद बाटला के साथ हाथ मिलाया। पठान आलमजेब, जानजरेज़ खान और जाफ़र

जमाल सिद्दीकी जैसे अन्य लोगों के दाऊद के गिरोह, जिसे अक्सर कोंकणी कहा जाता है, के खिलाफ़ हाथ मिलाने से गिरोह और भी मजबूत हो गया। दाऊद से टकराव से पहले पक्तुनी पठानों का नागपाड़ा और आसपास के इलाकों पर दबदबा था। दाऊद के बड़े भाई शब्बीर की हत्या में अमीरज़ादा मुख्य शूटर था।

प्राचीन औषधि मार्ग

सरगना नारी खान मुंबई में मादक पदार्थों की तस्करी के नए रास्ते खोलने के लिए अंडरवर्ल्ड से सक्रिय रूप से समर्थन मांगने वाला पहला व्यक्ति था।

पाकिस्तान में जन्मे नूर मोहम्मद पठान उर्फ नारी खान का एक मध्यम आकार का गिरोह था, जिसमें करीम लाला, इकबाल मिर्ची, मिनी मस्तान, लाल खान, मुबारक खान और माजिद जैसे अनुभवी लोग शामिल थे, जो सभी इस कारोबार में अपना हिस्सा पाने के लिए होड़ कर रहे थे। सीमा पार से आने वाली हेरोइन और भूरी चीनी से नशीले पदार्थों का बाजार भरा पड़ा था। सबसे लोकप्रिय ब्रांड 777, 999 और बिच्छू (स्कॉर्पियन) थे।

कुछ ही समय में, खान ने अपने मशहूर 555 ब्रांड की भूरी चीनी के साथ बाज़ार में धूम मचा दी। यह बेहद सफल रही और पठान की किस्मत चमक उठी। 1990 में एक तस्करी अभियान के दौरान, खान को नशीली दवाओं के खिलाफ अभियान चलाने वालों ने गिरफ्तार कर लिया और आर्थर रोड जेल भेज दिया। जेल में बिताया गया समय उनके लिए सौभाग्यशाली साबित हुआ क्योंकि इसी दौरान उनकी मुलाकात अमर नायक गिरोह के कुछ सदस्यों से हुई।

खान का गिरोह सरगना अमर नायक उर्फ रावण के साथ संबंध होने से उसे प्रतिद्वंद्वी तस्करों से मिल रही धमकियों को बेअसर करने के लिए आवश्यक ताकत मिली,

जिनमें से कई शहर के कई अंडरवर्ल्ड गिरोहों से जुड़े हुए थे। इस नई दोस्ती के चलते खान का कारोबार शहर में तेजी से बढ़ा। उसने और अमर नायक ने श्रीलंका और कनाडा में अपने संपर्कों का फायदा उठाकर मुंबई तक रास्ते खोले। 1990 के दशक के मध्य तक, खान का कोलाबा में एक पॉश इलाका था, जहां ए. पटेल संचालन प्रमुख थे। अबू हमजा और हाजी पप्पू मुंबई के उत्तर-पश्चिमी उपनगरों में कारोबार की देखरेख करते थे।

इस बीच, खान अपना अधिकांश समय दक्षिण मुंबई के आलीशान होटलों में सूखे मेवों से भरी जेब के साथ बिताता था। 11 अगस्त, 1996 को विक्रोली के पास एक मुठभेड़ में उसकी हत्या कर दी गई। ठीक एक दिन बाद, उसके सहयोगी अमर मारुति नायक की एक अन्य मुठभेड़ में मौत हो गई।

अमर नायक

दो ग्लॉक पिस्तौल की कुंजी

यह सन् 1995 के उत्तरार्ध की बात है। क्राइम ब्रांच के अधिकारियों ने पूछताछ के लिए एक संदिग्ध को हिरासत में लिया और पूछताछ के दौरान, संदिग्ध से एक चाबी बरामद की, जो अब पुलिस का मुखबिर बन चुका था।

संदिग्ध टूट गया और उसने कबूल किया कि चाबी कुख्यात गैंगस्टर अमर नायक की थी, जिसका गोरेगांव के बांगुर नगर में एक अपार्टमेंट था। तत्कालीन पुलिस उपायुक्त (अपराध) राकेश मारिया ने बताया कि वह तो सिर्फ एक केयरटेकर था।

संदिग्ध ने जांचकर्ताओं को बताया कि घर की एकमात्र दूसरी चाबी नाइक के पास थी। इन दोनों व्यक्तियों के अलावा, किसी को भी उस गुप्त अपार्टमेंट के बारे में पता नहीं

था, जहां नाइक सप्ताह में एक बार जाता था। नाइक आखिरी बार तीन दिन पहले उस फ्लैट में गया था।

रात के 11:15 बज रहे थे। मारिया ने समय बर्बाद नहीं किया। उसने दो पुलिस अधिकारियों को गुप्त रूप से अपार्टमेंट में प्रवेश करने और नाइक का इंतजार करने का आदेश दिया। रात 1:15 बजे तक दोनों अधिकारी अपार्टमेंट में पहुँच गए थे। वे अपने साथ कुछ राशन का सामान भी ले गए थे क्योंकि उन्हें वहाँ कुछ दिन बिताने की उम्मीद थी।

सुबह 7:30 बजे, मारिया को एक फोन कॉल आया जिसमें उसे बताया गया कि नाइक भाग गया है।

नाइक फ्लैट में दाखिल हुआ और अपने फ्लैट में एक अजनबी को देखकर चौंक गया, पुलिस अधिकारी भी हैरान रह गया, क्योंकि उसे नाइक के इतनी जल्दी आने की उम्मीद नहीं थी। दोनों एक पल के लिए थम गए। नाइक ने अपने दाहिने कंधे पर टंगे सूती बैग में अपना दाहिना हाथ डालने की पुरजोर कोशिश की। लुंगी पहने पुलिस अधिकारी उसे ऐसा करने से रोकने की पूरी कोशिश कर रहा था। अचानक गैंगस्टर ने बैग छोड़ दिया और सीढ़ियों से नीचे भाग गया। लुंगी पहने पुलिस अधिकारी के लिए उसे पकड़ना मुश्किल हो गया। बैग में दो अत्याधुनिक ग्लॉक पिस्तौल, तीन पासपोर्ट और कुछ बैंक पासबुक थीं।

जांचकर्ताओं को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि नाइक अमेरिका, कनाडा, नीदरलैंड, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका की यात्रा कर चुका था। उसके बैंक खातों में जमा पांच लाख रुपये से अधिक की राशि भी फ्रीज कर दी गई।

महज आठ महीने बाद, 10 अगस्त 1996 को, विदेश भागने से पहले ही, नाइक एक मुठभेड़ में मारा गया।

अनार (ग्रेनेड)

अनार का मतलब अंडरवर्ल्ड में बम होता है। ये दिखने में एक जैसे होते हैं, लेकिन मुंबई में इनका इस्तेमाल बहुत कम होता है। 1988 में कंजरमार्ग पुलिस द्वारा धोखे से गिरफ्तार किए जाने के बाद गैंगस्टर अशोक जोशी चिल्लाया, "अनार फोड़ दूंगा"।

अनिल परब (रॉबिन)

एक ऑटो रिक्शा चालक से शीर्ष दर्जे के निशानेबाज बनने तक परब का सफर अभूतपूर्व था। 1984 से 1987 के बीच, परब चार गोलीबारी की घटनाओं में शामिल था, जिसने शांत कंजूर गांव को कत्लगाह में बदल दिया। वह न केवल अशोक जोशी का भरोसेमंद सहयोगी बना, बल्कि खुद को खूंखार भाड़े के हत्यारों के एक गिरोह में शामिल पाया, जिसमें सदा पावले, केशव उत्विल, विनय करंजेकर, पांडुरंग माडवी, योगेश पराडकर और किरण वालावलकर शामिल थे।

लेकिन 1987 में जब अशोक जोशी ने यौन उत्पीड़न के आरोप में परब पर हमला किया, तो यह गिरोहीय दोस्ती खत्म हो गई। हमले के समय उसके गिरोह के सदस्य मौजूद थे, लेकिन किसी ने भी उसकी मदद नहीं की। गिरोह के सदस्यों द्वारा धोखा दिए जाने के अपमान ने परब को दाऊद के प्रमुख सहयोगी छोटा राजन की शरण में धकेल दिया। परब ने न केवल पाला बदला, बल्कि 4 दिसंबर, 1988 को पनवेल के पास कालोके गांव में अशोक जोशी की हत्या में शामिल शूटरों की टीम में शामिल होकर बदला भी लिया। गोलीबारी के बाद उसके पास दुबई भागने के अलावा कोई चारा नहीं बचा था।

जब राजन 1993 में दाऊद से अलग हो गया, तो परब ने राजन का साथ छोड़ दिया। 1995 में, परब पर अपनी पत्नी नेहा की हत्या की साजिश रचने का आरोप लगा, जब वह 1995 में दुबई से लौटी थी। परब को शक था कि उसकी पत्नी का दाऊद इब्राहिम के साथ विवाहेतर संबंध था।

डी-कंपनी में परब की उपयोगिता जल्द ही समाप्त हो गई और 21 अप्रैल, 2003 को उसे भारत प्रत्यर्पित कर दिया गया। वह 6 जून, 1984 को जोशी के इशारे पर व्यवसायी हंसराज शाह पर गोली चलाने के आरोप में आजीवन कारावास की सजा काट रहा है।

अन्ना (शरद शेट्टी)

शरद राजन्ना शेट्टी डी-कंपनी के वित्तीय सलाहकार थे और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट सट्टेबाजी सिंडिकेट से अंडरवर्ल्ड की प्रमुख कड़ी थे। अन्ना डी-कंपनी के उन कुछ लोगों में से एक थे जो दाऊद से दोस्त की तरह बात कर सकते थे या उसे उसके नाम से पुकार सकते थे।

शेट्टी उर्फ अन्ना, जैसा कि वह मुंबई और मंगलौर के होटल व्यवसायियों के बीच जाना जाता था, माफिया डॉन दाऊद इब्राहिम को क्रिकेट सट्टेबाजी पर सलाह देने के लिए जिम्मेदार प्रमुख व्यक्ति था।

दाऊद-शेट्टी की साझेदारी के कारण वर्षों में कई लोगों की मौत हुई थी। शेट्टी उस साजिश में शामिल था जिसके तहत 16 सितंबर, 2000 को बैंकॉक में प्रतिद्वंद्वी डॉन छोटा राजन पर हमला हुआ था।

1986 में होटल व्यवसाय को लेकर हुई दुश्मनी के बाद, शेट्टी ने जयंता शेट्टी और अरविंद ढोलकिया के साथ मिलकर एक छोटे-मोटे गुंडे विजय कंजरि को मध्य मुंबई

के एक पुलिस लॉकअप में पूर्व डॉन बाबू रेशिम की हत्या करने के लिए काम पर रखा। ऐसा माना जाता है कि शेट्टी पाकिस्तान में भट्टी बंधुओं की हत्या में भी शामिल था, जिनकी हत्या दाऊद को अंडरवर्ल्ड की कमाई में अपना हिस्सा हासिल करने में सक्षम बनाने के लिए की गई थी।

इन मामलों के अलावा, पुलिस रिकॉर्ड से पता चलता है कि शेट्टी का नाम कम से कम तीन अन्य हत्याओं में भी आया था। इनमें से प्रमुख हत्या 1997 में कांदिविली में होटल व्यवसायी रामनाथ पायर्डे की थी। उनके अन्य शिकारों में पश्चिमी उपनगरों के लक्ष्मण और जौहरी प्रभाकर आचार्य शामिल थे। शेट्टी जोगेश्वरी में एक शॉपिंग सेंटर और दुबई में एक होटल के मालिक भी थे। 19 जनवरी, 2002 को दुबई में प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर छोटा राजन के गुर्गों ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी थी।

Anwar Yusuf Sheikh (Mamaji/Annu/Badshah)

उसे अपराध की दुनिया में उसके बहनोई मोहम्मद अली कंजारी उर्फ विक्रम परमार ने 1996 में शामिल किया था, जो माफिया सरगना छोटा शकील का एक भरोसेमंद सहयोगी था।

जल्द ही वह कुख्यात गैंगस्टर नीलेश कोकम और चांद मस्तान उर्फ कंजरी जैसे कुछ बड़े हत्यारों के साथ जुड़ गया। जब छोटा शकील शहर के राजनेताओं में दहशत फैलाना चाहता था, तो उसने तुरंत इसी खूंखार गैंगस्टर को चुना। 16 जुलाई 2000 को प्रफुल भोसले के नेतृत्व वाली एक टीम ने मुठभेड़ में बादशाह को मार गिराया।

कलाकार (निशानेबाज)

रंगों और ब्रश के ख्यालों को त्याग दीजिए। अंडरवर्ल्ड का कलाकार किसी काम को अंजाम देने के लिए बंदूक का इस्तेमाल करता है और अपनी कला के लिए मोटी कीमत वसूल सकता है, जैसा कि फिरोज कोंकणी करता था। कोंकणी, जो सबसे अधिक वेतन पाने वाला कलाकार था, एक काम के लिए 50,000 रुपये लेता था, जबकि आम निशानेबाजों को एक काम के लिए मात्र 5,000 रुपये मिलते थे।

फिरोज कोंकणी को सुपारी लेकर हत्या करने के लिए मिलने वाली भारी भरकम रकम के अलावा अंधेरी के वर्सोवा के पास एक कार और फ्लैट भी दिया गया था। अपराध जगत में उसका उदय उतना ही रहस्यमय था जितना 1998 में उसका गायब होना। माना जाता है कि उसकी हत्या उसके पूर्व गुरु छोटा शकील के इशारे पर की गई थी। एक स्थानीय गुंडे से शुरुआत करके, वह 1990 के दशक के मध्य में 18 से अधिक हत्याओं में शामिल हो गया, जिससे वह छोटा शकील गिरोह के सबसे अधिक भुगतान पाने वाले अपराधियों में से एक बन गया। शहर भर में हुई 30 लूटपाट, चाकूबाजी और गोलीबारी की घटनाओं में भी उसका नाम दर्ज है।

तीन भाइयों और एक बहन के परिवार में तीसरे नंबर पर आने वाले कोंकणी ने 1988 में नौवीं कक्षा में पढ़ते समय वडाला के शेख मिस्त्री दरगाह के पास स्थित नगर पालिका स्कूल से पढ़ाई छोड़ दी। स्कूल छोड़ने के बाद वह डोंगरी की गलियों में छोटे-मोटे काम करके सादा जीवन व्यतीत करता था। वडाला के शेख मिस्त्री रोड का रहने वाला यह 16 वर्षीय लड़का डोंगरी के निशांतपाड़ा रोड पर एक शराब तस्कर को चाकू मारने के बाद लगभग रातोंरात फिरोजदादा के पद पर पहुँच गया। उसकी इस बहादुरी पर सबकी नजर पड़ गई। उसकी क्षमता को भांपते हुए, गैंगस्टर छोटा शकील ने फिरोज को तुरंत अपने गिरोह में शामिल कर लिया। उसने जल्द ही पुलिस मुखबिर सनी मनन की हत्या कर दी। इसके बाद 1993 के दंगों के दौरान डोंगरी में एक मठड़ी

मजदूर की हत्या कर दी गई। लेकिन उनकी सबसे बड़ी सफलता 1994 में बांद्रा में भारतीय जनता पार्टी के विधायक रामदास नायक की हत्या थी। अचानक, मुंबई के अंडरवर्ल्ड में उनका नाम हर जगह जाना जाने लगा। वह 6 मई, 1998 को जे जे अस्पताल से फरार हो गए।

Arvind Dholakia's Murder

ढोलकिया बंधुओं के स्वामित्व वाला खार स्थित सीज़र्स पैलेस होटल। इसकी सजावट बेहद खूबसूरत थी और किसी सेट डिज़ाइनर का सपना हो सकती थी। यह वेश्याओं के साथ खुलकर बातचीत करने या उनके साथ अर्ध-अंधेरे हॉल में जोशीले संगीत पर पत्नी की जानकारी के बिना नाचने के लिए एक सुरक्षित ठिकाना था—और इन सबके बीच बाउंसर किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर नज़र रखते थे।

सरगना महेश ढोलकिया खुद अक्सर बंदूकधारी गुंडों के साथ घूमता था। लेकिन महेश की मौत के दो महीने बाद उसके छोटे भाई अरविंद की भी अंडरवर्ल्ड के नाटकीय अंदाज में गोली मारकर हत्या कर दी गई। यह बेहद सुनियोजित हत्या रात करीब 8 बजे अंजाम दी गई, जब सीज़र पैलेस में काला धंधा अपने चरम पर था।

दो बंदूकधारी मारुति कार से उतरे और काउंटर पर ढोलकिया से मिले। दोनों से बातचीत करने के बाद, सरगना अपने अंगरक्षकों को वहीं छोड़कर हत्यारों के साथ अपने केबिन में चला गया।

कुछ ही मिनटों में केबिन से गोलियों की आवाज गूंज उठी, जिससे बार में बैठे ग्राहक और बगल के कमरों में मौजूद जोड़े इधर-उधर भागने लगे। अंगरक्षक तुरंत मौके पर पहुंचे, लेकिन हमलावर जा चुके थे और अरविंद ढोलकिया की मौत हो चुकी थी। तारीख थी 1 दिसंबर, 1987।

चंदनवाड़ी श्मशान घाट में अंतिम संस्कार की चिता जलाते समय ढोलकिया ने घोषणा की थी कि वह अपने भाई महेश की हत्या में शामिल सभी लोगों को खत्म कर देगा। दूसरी परिकल्पना यह थी कि उसने रामा शेट्टी पर झूठा मुकदमा करके बांद्रा स्थित उसके बार पर कब्जा कर लिया था। इसके परिणामस्वरूप, बार मालिक सड़कों पर आ गया था और उसने अपमान का बदला लेने की कसम खाई थी।

अशरफिबी (अंतिम दांव)

पठान गिरोह के शहीद लेफ्टिनेंट महमूद कालिया की खूबसूरत विधवा अशरफीबी (जिन्हें सपना दीदी के नाम से भी जाना जाता था) ने दाऊद से बदला लेने की उम्मीदें खो दी थीं, जब 22 फरवरी, 1990 को दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों द्वारा अरुण गावली के छोटे भाई किशोर गावली उर्फ पापा की हत्या कर दी गई थी।

उन्हें अपने पति की हत्या में दाऊद का हाथ होने का पूरा यकीन था। पापा के साथ मिलकर रची गई साजिश बुरी तरह नाकाम हो गई थी। शेख मोहम्मद हुसैन उर्फ उस्तारा (जिसका अर्थ है तेज चाकू) से मिलने के बाद अशरफीबी का अपने पति की मौत का बदला लेने का संकल्प और भी मजबूत हो गया।

हुसैन स्वाभाविक रूप से सहयोगी थे क्योंकि 1995 में उनका भी दाऊद से टकराव हुआ था।

हुसैन ने अगले छह महीने पायधोनी स्थित अपने गुप्त ठिकाने के तहखाने में अशरफीबी को प्रशिक्षण देने में बिताए। जल्द ही वह खूबसूरत लड़की माउजर से लेकर एके 47 असॉल्ट राइफल तक, किसी भी हथियार का इस्तेमाल करने में माहिर हो गई - इस बात की पुष्टि खुद उस गैंगस्टर ने बाद में की थी।

अशरफीबी ने संयुक्त अरब अमीरात के शारजाह में एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच के दौरान दाऊद पर अचानक हमला करने की योजना बनाई। हुसैन ने अपने विदेशी संपर्कों का इस्तेमाल करते हुए पुष्टि की कि दाऊद और उसके निहत्थे साथी रेगिस्तानी शहर में क्रिकेट मैचों के नियमित दर्शक थे। खेल में मग्न होने के दौरान डॉन को चाकू मारना आसान होगा।

मजबूत कद-काठी वाले अशरफीबी ने स्वेच्छा से यह काम अपने हाथ में लिया। हुसैन के छिपने के ठिकाने में शारजाह स्टेडियम का एक प्रोटोटाइप बनाया गया। हुसैन और उसके आदमियों ने दाऊद को अचानक घेरने की बारीक योजना बनाई। लेकिन दाऊद को जल्द ही योजना का पता चल गया। छोटा शकील को यह सुनिश्चित करने का आदेश दिया गया कि अशरफीबी मर चुका है।

अशोक जोशी

अशोक जोशी की कहानी मध्य मुंबई के डॉन रमा नाइक की मौत से शुरू होती है, जिसके बाद दाऊद इब्राहिम जोशी को अपना नया कट्टर दुश्मन मानने लगा।

लंबे-दुबले कद के इस गैंगस्टर ने टेमकर मोहल्ला की 'यंग कंपनी' के सदस्यों को खत्म करने की कसम खाई थी और उसने दाऊद के सहयोगी सतीश राजे की दिनदहाड़े हत्या करके पहली बार खून बहाया था।

जल्द ही, जोशी ने शांत कंजूर गांव को एक बड़े कत्लगाह में बदल दिया, जहां दो साल से भी कम समय में 20 से अधिक हत्याएं हुईं। कहा जाता है कि 1980 के दशक में, पूर्व पूर्वी भारतीय बस्ती में कॉलेजों की तुलना में किशोरों की संख्या अंडरवर्ल्ड में शामिल हो रही थी। उसका दबदबा इतना था कि दो साल के भीतर ही जोशी के पास युवाओं की एक ऐसी फौज तैयार हो गई, जो उसके लिए अपनी जान कुर्बान करने को

तैयार थे, जिनमें केशव उचिल उर्फ अन्ना, योगेश पराडकर, अनिल परब उर्फ रॉबिन, विनय करंजिकर, किरण वालवलकर, पांडुरंग माडवी और सुधीर सर्वे शामिल थे।

जोशी कंजर मार्ग के अपराधियों का सरगना क्यों बन गया, यह समझना मुश्किल नहीं है। वह अपना लूटा हुआ माल बाँटता था और बेहद सादा जीवन जीता था। जैसे-जैसे जोशी का दबदबा बढ़ता गया, कंजर के इस छोटे से गाँव की गलियाँ मध्य मुंबई की दगड़ी चॉल के उत्तरी हिस्से में बदल गईं। यहाँ मनमाने ढंग से हत्याएँ की जाती थीं और कत्ल आम बात हो गई थी। 4 दिसंबर 1988 को दाऊद के करीब दो दर्जन आदमियों ने, जिनके पास कई बंदूकें थीं, पनवेल के पास पुराने मुंबई-पुणे राजमार्ग पर स्थित कालोके गाँव में एक मारुति वैन में जोशी को घेर लिया। बाद में राजमार्ग पर उसकी और उसके चार साथियों की गोलियों से छलनी लाश मिली।

अथाइस (28)

अथाईस, अंडरवर्ल्ड में शराबियों के लिए इस्तेमाल होने वाला एक संक्षिप्त शब्द है। इसका संबंध शराब से भी है। यह शब्द, जो मुख्य रूप से दक्षिण मुंबई के डोंगरी और भिंडी बाजार इलाकों में प्रयोग किया जाता है, 1950 के दशक के उत्तरार्ध में 'चाइना पेटी' नामक एक शब्द-खेल के दौरान प्रचलन में आया।

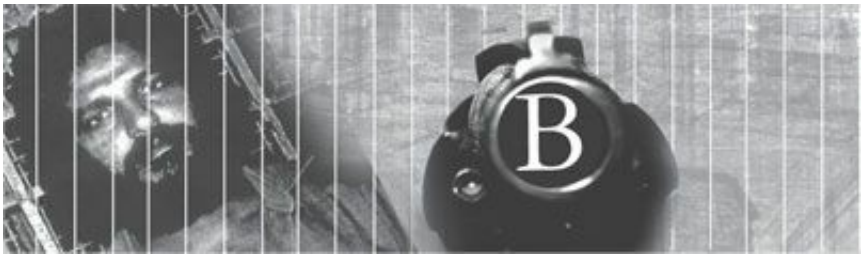

बब्लू श्रीवास्तव (ए फेल्योर इन मुंबई)

ओम प्रकाश श्रीवास्तव उर्फ बबलू मुंबई के अंडरवर्ल्ड में बड़ी कामयाबी हासिल नहीं कर सका। शहर की अनोखी भौगोलिक स्थिति उसके और उसके गिरोह के लिए बेहद पेचीदा साबित हुई।

उसने 1992 में दक्षिण मुंबई के गामदेवी के व्यवसायी दिलीप जैन के अपहरण की साजिश रची थी। पीड़ित को उपनगरीय जुहू के पास एक गुप्त ठिकाने पर ले जाया गया था, जहां से उसे चेंबूर में रिहा कर दिया गया था।

श्रीवास्तव ने अपने प्रमुख सहयोगियों संजय खन्ना और विक्रम तिवारी के साथ मिलकर इस ऑपरेशन की योजना बनाई थी, जिनमें से विक्रम तिवारी जल्द ही मध्य मुंबई में एक मुठभेड़ में मारा गया। मुंबई के अंडरवर्ल्ड में पैठ बनाने के उनके अंतिम प्रयास तब विफल हो गए जब उनके लेफ्टिनेंट शाहिद और दिनेश 18 अगस्त, 1997 को मारे गए।

विक्रम वाही, मन मोहन सहगल और श्वेता के गिरोह ने 21 जून, 1994 को नरीमन प्वाइंट स्थित एयर इंडिया भवन के पास व्यापारी विश्वनाथ मित्तल का अपहरण करने का प्रयास किया। यह मिशन फिर से विफल रहा क्योंकि मुंबई में गिरोह के संपर्क में आए अमित कटियार और अशोक तिवारी ने गलती कर दी थी। पुलिस ने कुछ ही घंटों में पास के एक होटल में बदमाशों का पता लगा लिया।

बाबा रेड्डी

छोटा राजन और नाना कंपनी ने वेंकटेश बुग्गा रेड्डी उर्फ बाबा रेड्डी उर्फ मोहम्मद भाई में पहली बार क्षमता तब देखी, जब उन्हें 1997 में गिरफ्तार किया गया था।

यह सुनिश्चित करने के लिए व्यवस्था की गई थी कि रेड्डी देश से भाग जाए और राजन के लेफ्टिनेंट संतोष शेट्टी से मिल जाए।

रेड्डी—जो बॉक्सिंग चैंपियन माइक टायसन से हूबहू मिलते-जुलते थे, जिनकी छाती 46 इंच और कमर 36 इंच थी—जल्द ही खुद को 'क्लिंटन' या नकली डॉलर के कारोबार में शामिल पाया, जो मलेशिया के एक सुरम्य द्वीप पर रहते थे और मुंबई में अपने पुराने शिकारों को फोन करना शुरू कर दिया।

जब मुंबई में राजन उर्फ सेठ के सहयोगियों ने उसे रेड्डी के 'दुराचार' के बारे में बताया तो वह बेहद क्रोधित हो गया।

रेड्डी जल्द ही शेट्टी से अलग हो गया। लेकिन इससे पहले उसने जमकर उत्पात मचाया और मलेशिया के एक द्वीप पर स्थित शेट्टी के बंगले को तहस-नहस कर दिया।

लेकिन गुंडे पुराने कुत्तों की तरह होते हैं जिन्हें नई चालें नहीं सिखाई जा सकतीं। रेड्डी जल्द ही अपने पसंदीदा धंधे, जबरन वसूली पर लौट आया।

उन्हें आंध्र प्रदेश के हैदराबाद में गिरफ्तार किया गया था। उनके पास से 14 से अधिक अत्याधुनिक हथियार बरामद किए गए थे। उन्हें 28 सितंबर, 2007 को जमानत पर रिहा कर दिया गया था।

बाबू रेशिम (बायकुला कंपनी के वास्तुकार)

बाबू रेशिम शहर में संगठित माफिया गिरोहों की नींव रखने के लिए जिम्मेदार थे।

1975 में माज़गोआन में एक जहाज निर्माण कार्यशाला में एक साधारण कैंटीन कर्मचारी से, रेशिम का अपराध की दुनिया में उदय बहुत ही स्थिर था।

दुबई स्थित गैंगस्टर शरद शेट्टी, अप्पू शेट्टी और महेश ढोलकिया ने अपने प्रतिद्वंद्वियों पर जवाबी हमला करने की योजना बनाने के लिए विक्रम कंजारी को काम पर रखा था। 1987 में बायकुला के एक्स-लेन में रेशम पर हुए जानलेवा हमले में बाल-बाल बच गया।

उसी वर्ष विजय कंजरि, राजू भैया, महेश मस्कर और अप्पू शेट्टी ने सात रास्ता या जैकब सर्कल स्थित पुलिस लॉकअप पर हथगोले और हथियारों से हमला कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप शरद शेट्टी की हत्या कर दी गई। हालांकि शरद शेट्टी दाऊद इब्राहिम का करीबी सहयोगी था, लेकिन वह मध्य मुंबई में रमा नाइक और रेशिम के दबदबे से ईर्ष्या करता था, जिसके कारण 5 मार्च, 1987 को यह हत्या हुई।

Bada Kala Coat

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'बड़ा काला कोट' अक्सर जज को संदर्भित करता है। 'बड़ा' (बड़ा) जज की हैसियत को दर्शाता है।

Bada Rupaiya

इसका मतलब खोका (एक करोड़) हो सकता है। गैंग की भाषा आमतौर पर गैंग के सदस्य और उससे बात करने वाले व्यक्ति पर निर्भर करती है। अगर उत्तर प्रदेश का कोई गैंगस्टर दक्षिण महाराष्ट्र के कोंकण के किसी गैंगस्टर से बात कर रहा है, तो भाषा अलग होगी। गैंगस्टर छोटा राजन को अक्सर खोका शब्द का इस्तेमाल करते सुना जाता है। अबू सलेम गैंग के सदस्य बड़ा रुपया कहते हैं।

बाजा (संगीत वाद्ययंत्र)

बाजा, जो एक संगीत वाद्ययंत्र है, का प्रयोग अक्सर हैंडगन के लिए किया जाता है। यह नाम इस तथ्य से लिया गया है कि बंदूक से गोली चलने पर ध्वनि उत्पन्न होती है, ठीक वैसे ही जैसे संगीत वाद्ययंत्र चालू होने पर ध्वनि उत्पन्न होती है।

बकरी

अंडरवर्ल्ड की भाषा में बकरी का मतलब हत्या के लिए इस्तेमाल की जाने वाली कार या कोई भी चार पहिया वाहन होता है।

बकरी पशु

किसी गैंगस्टर की गिरफ्तारी को बकरी डिब्बा कहा जाता है। शब्दों को तोड़कर देखें तो समझ में आ जाता है कि ऐसा क्यों है: बकरी का अर्थ है बलि का बकरा और डिब्बा का अर्थ है पिंजरा। जब किसी गैंगस्टर को गिरफ्तार करके पुलिस वैन में ले जाया जाता है, तो ऐसा लगता है जैसे कोई बकरी पिंजरे में फंसी हो।

Bali Ka Bakra

29 जून, 1998। विनम्र स्वभाव वाले संयुक्त पुलिस आयुक्त, डी. शिवानंदन, क्राइम ब्रांच कार्यालय के ग्रेनाइट गलियारे में कार्यभार संभालने के लिए दाखिल ही हुए थे कि तभी उनका मोबाइल फोन बज उठा।

यह भारतीय पुलिस सेवा के 1976 बैच के अधिकारियों के लिए बुरी खबर थी। कुछ ही मिनट पहले, छोटा राजन के आदमियों ने खार में 1993 के मुंबई बम विस्फोट के

आरोपी मोहम्मद जिंद्रान और उसके दोस्त कृष्णा पांडे को गोली मारकर हत्या कर दी थी।

"क्या मैं बलि का बकरा तो नहीं बन गया हूँ?" (क्या मैं बलि का बकरा बन रहा हूँ?) शिवानंदन ने तर्क दिया, जिसे लगा कि इन गोलीबारी की घटनाओं से उसका करियर कलंकित हो जाएगा।

11 नवंबर 1998 को दादर के पास चार छोटा राजन गैंगस्टरों की हत्या के साथ ही बदलाव की शुरुआत हुई। "वास्तव में यह एक निर्णायक मोड़ था," शिवानंदन याद करते हैं। बाद में, 1998 से 2000 के बीच शिवानंदन के आदमियों ने उनके कार्यकाल में 204 गैंगस्टरों को मार गिराया। अब कोई पूछ सकता है, "बकरा कौन?" (पीड़ित कौन है?)

Bapat

अमर नायक कुख्यात बापट गिरोह का सरगना था, जिसकी शुरुआत सीताराम दादा ने 1970 के दशक में की थी और दादर क्षेत्र में उसका दबदबा था। दादर के थोक सब्जी बाजार में बापट आज भी अनौपचारिक मुद्रा है।

दादर के सब्जी बाजार और भीड़भाड़ वाले गली-नुक्कड़ 70 के दशक में वाल्गी-पालगी और गोल्डन गैंग के बीच नियमित झड़पों का स्थल बन गए थे।

वाल्गी-पालजी गिरोह का नेतृत्व दिलीप रामजी बोरिचा उर्फ वाल्गी और गोल्डन गैंग का नेतृत्व चंद्रकांत कोपड़े उर्फ बेबीया कर रहे थे, जिन्हें वर्धराजन मुदलियार उर्फ वर्धाभाई का आशीर्वाद प्राप्त था।

वाल्गी ने 1972 में पूर्व नेता सीताराम दादा से सत्ता संभाली थी। वाल्गी के बाद अमर नायक ने पदभार ग्रहण किया।

गोल्डन गैंग के उदय ने यह स्पष्ट कर दिया कि अंडरवर्ल्ड अपने क्षेत्रों को लेकर कितना अधिक अधिकार जताता था। चंद्रकांत खोपड़े कहते हैं, "प्रत्येक गिरोह व्यापारियों और मटका ऑपरेटरों से माफिया द्वारा ली जाने वाली सुरक्षा राशि का बड़ा हिस्सा हासिल करना चाहता था।"

10 अगस्त 1996 को एक मुठभेड़ में नाइक शहीद हो गए और उनके छोटे भाई अश्विन ने कमान संभाली।

1983 बैच

पिछले कुछ वर्षों में, मुंबई में बढ़ते अंडरवर्ल्ड के प्रभाव को रोकने का अभियान 'मुठभेड़ विशेषज्ञों' के एक समूह द्वारा चलाया गया है, जो संयोगवश पुलिस भर्ती के एक ही बैच से हैं।

पिछले कुछ वर्षों में मुंबई भर में अलग-अलग मुठभेड़ों में मारे गए लगभग 600 कुख्यात गैंगस्टरों के रिकॉर्ड की जाँच करें। यह लगभग निश्चित है कि हर बार गैंगस्टर को पुलिस सब-इंस्पेक्टरों के 1983 बैच के अधिकारियों की एक टीम ने मार गिराया था।

अरुण गावली के शीर्ष सहयोगी सदा पावले उर्फ मामा का मामला लीजिए। उनकी हत्या 1983 बैच के विजय सालस्कर ने की थी। छोटा राजन के प्रमुख गुर्गे विनोद मतकर को उनके ही बैच के प्रदीप शर्मा ने गोली मार दी थी। गैंगस्टर छोटा शकील के प्रमुख लेफ्टिनेंट अनवर बादशाह की हत्या 1983 बैच के ही प्रफुल भोसले ने की थी।

Similarly, Shashikant Sagvekar alias Chikna Babu was done in by Ravindranath Angre, Mangesh Shinde by Arun Borude and D.K. Rao was the target of Rajan Ghule, all three policemen of the same vintage.

पिछले कुछ वर्षों में, अनंत केंजले, राजन पिल्लई और पूर्व पुलिसकर्मी असलम मोमिन जैसे अन्य नाम भी अंडरवर्ल्ड के सदस्यों के लिए अभिशाप साबित हुए हैं।

खोज

अंडरवर्ल्ड की भाषा में बटला का मतलब छोटे कद के व्यक्ति से होता है।

सरगना हाजी मस्तान ने कार्नाक बंदर स्थित अपने कार्यालय का दरवाजा खोला ही था कि एथलेटिक कद-काठी वाला बटला कार्यालय में दाखिल हुआ, एक कुर्सी पर बैठ गया, अपने पैर मेज पर रख दिए और डॉन की आंखों में घूरने लगा।

"बटला किसी का गुलाम नहीं कि तुम उसके गले में पट्टा डाल दो।" (बटला तुम्हारा गुलाम नहीं है कि तुम उसके गले में पट्टा डाल दो,) कमरे से बाहर निकलते हुए उस छोटे गुंडे ने कहा।

हाजीभाई, जिसे मस्तान के नाम से जाना जाता था, ने बाटला के साहसिक कारनामों के बारे में सुना था और वह चाहता था कि यह गैंगस्टर उसके लिए काम करे। हाथ मिलाने का मतलब था डॉन के व्यापारिक हितों की रक्षा करना।

मस्तान का कारोबार वर्षों से बढ़ता जा रहा था। उसे किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत थी जो बंदरगाह से लेकर अंतिम गंतव्य तक उसके तस्करी के सामान की रक्षा कर सके।

सैयद लतीफ काजी के रूप में जन्मे, बाटला (छोटे कद के कारण मिला उपनाम) डोंगरी में कुख्यात था। उसने स्थानीय गुंडे अयूब लाला के साथ मिलकर एक

खतरनाक गिरोह बना रखा था।

बटला का नाम पहले से ही कुछ डकैती और जबरन वसूली के मामलों में दर्ज था। उसके पूर्व सहयोगी इकबाल येदा ने याद करते हुए बताया कि डोंगरी में डगली मिल्स के पास स्थित अपने अड्डे से वह एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में जाना जाता था।

Bakhshish (Good Luck)

पाकमोडिया हाउस ने दाऊद इब्राहिम गिरोह के उदय को देखा, लेकिन परिवार ने कुछ बुरे दिन भी देखे थे।

पुलिस में जमादार इब्राहिम कास्कर सीनियर को 11 लोगों का पेट पालना था, और उनके पास कभी भी पर्याप्त पैसा नहीं होता था।

कभी-कभी, वरिष्ठ कास्कर अपने पुराने मित्र हाजी मस्तान से 'शुभकामना' की उम्मीद करते थे, जिसका उन दिनों अर्थ 'बख्शीश' होता था। दाऊद के दत्तक भाई हनीफ सावेन याद करते हैं कि 'शुभकामना' मिलने पर खुशमिजाज युवा कास्कर रात के खाने के लिए राशन खरीदने दौड़ पड़ते थे।

Bandiya Adilkar (The Man Who Challenged The Golden Gang)

संतोष आदिलकर का पहला प्यार कबड्डी था। इतना कि बाद में उन्होंने खेल के नियमों को बदलने के लिए शारीरिक बल का इस्तेमाल करने की कोशिश की और अपने दोस्तों को राज्य टीम में भर्ती कराया।

जिम में कसरत और कबड्डी के मैदानों पर अभ्यास सत्रों के बीच, आदिलकर उर्फ बंद्या, बेबीया खोपड़े के नेतृत्व वाले गोल्डन गैंग के लिए छोटे-मोटे काम करता था। वह

गिरोह के सदस्यों के बीच लोकप्रिय था और उन्हें नियमित रूप से सिगरेट और शराब की आपूर्ति करके कुछ जेब खर्च कमाता था, इसीलिए गिरोह के वरिष्ठ सदस्यों के बीच उसे 'बंद्या' के नाम से जाना जाता था।

सब कुछ ठीक चल रहा था, जब तक कि सन मिल कंपाउंड के पास छेड़छाड़ की एक घटना के बाद खोपड़े ने बंद्या की पिटाई नहीं कर दी। सन मिल कंपाउंड 1990 तक गिरोह का अड्डा हुआ करता था। यह घटना बंद्या के जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुई। इसके बाद उसने अपमान का बदला लेने की कसम खाकर अरुण गावली के लिए काम करना शुरू कर दिया।

1992 तक, गिरोह जगत में लगातार ऊपर चढ़ते हुए बंद्या गावळी के काफी करीब आ गया था। उसने खोपड़े के भरोसेमंद लेफ्टिनेंट रतीश भाइयों को खत्म करके खोपड़े गिरोह के सदस्यों के लिए एक बड़ा खतरा पैदा कर दिया था।

इन हत्याओं का प्रभाव इतना गहरा था कि खोपड़े बायकुला पश्चिम स्थित सन मिल्स कंपाउंड के आसपास के इलाके से भाग गया और बोरीवली में सुरक्षित पनाहगाह की तलाश की।

इसके कुछ ही समय बाद, 1997 और 1998 के बीच गामदेवी में केबल नेटवर्क के अधिकारी राम पंजाबी और बिल्डर मनीष शाह की हत्या सहित कम से कम चार हत्याओं में उसका नाम सामने आया।

पुलिस रिकॉर्ड से पता चलता है कि वह कबड्डी टीमों के कोचों को डरा-धमकाकर अपने दोस्तों को राज्य चैंपियनशिप के लिए चयनित करवाने में शामिल था। बंद्या 15 जनवरी 2000 को एक मुठभेड़ में मारा गया।

अन्य

बंदी का अर्थ है जेल में बैरकों को बंद करना। रात को मुख्य द्वार बंद करने से पहले आम तौर पर कैदियों की गिनती की जाती है।

बैंगड़ी (चूड़ी)

बंगदी का सामान्य अर्थ हथकड़ी होता है। यह शब्द मुंबई में पुलिसकर्मियों और गैंगस्टरों द्वारा अक्सर इस्तेमाल किया जाता है।

बीटा (पुत्र)

जब गिरोह का दूसरा सबसे बड़ा नेता उसे 'बेटा' जैसे शब्दों से सम्मानपूर्वक संबोधित करता है, तो एक नया सदस्य अक्सर जोश में आ जाता है। जल्द ही वह गिरोह के लिए काम करने के लिए राजी हो जाता है।

"बेटा, तुम्हें क्या लगता है मैं इस सारे पैसे का क्या करूंगा? यह हम सबके लिए है। मुंबई में कुछ अच्छा काम करो और फिर दुबई या कराची निकल जाओ," छोटा शकील अक्सर अपने रंगरूटों से यही कहा करता था।

इसे युवाओं की वफादारी और विश्वास हासिल करने के लिए चापलूसी और भावनात्मक रणनीति के रूप में देखा जाता है।

Beta Paise Jama Nahin Karvaya ? (The Money Has Not Been Deposited Yet?)

दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्य आम तौर पर इस शब्द का इस्तेमाल अपने शिकार को फिरौती की रकम चुकाने की याद दिलाने के लिए करते हैं। इस विनम्र अनुरोध के

बाद अक्सर जान से मारने की धमकी दी जाती है।

भाई

डी-कंपनी के मुख्य कार्यकारी को महज भाई कहा जाता है। वर्षों के उपयोग के बाद, यह उपनाम न केवल अंडरवर्ल्ड डॉन के लिए, बल्कि इस पद के इच्छुक अन्य लोगों के लिए भी प्रचलित हो गया है; दाऊद इब्राहिम एक तरह से असली भाई है, जैसा उससे पहले कोई डॉन नहीं था।

Bhai Kasle

1960 के दशक के उत्तरार्ध में, भाई कासले मध्य मुंबई के परेल इलाके की गलियों पर राज करते थे। उनकी अधिकांश कमाई अवैध शराब और मटका अड्डों से होती थी। उनके समकालीन गैंगस्टर राम तलवार थे। (उन्हें तलवार चलाने में महारत हासिल होने के कारण 'तलवार' उपनाम मिला था।)

भट्टा (कैदी का भोजन)

मुंबई की जेलों में मिलने वाले 'भट्टा' या रात के खाने में तीन सूखी चपातियां, एक कप पतली दाल और लगभग 500 ग्राम वजन की एक कटोरी चावल शामिल होते हैं।

बिल लीना (जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए)

बिल लेना एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग आम तौर पर तब किया जाता है जब कोई गैंगस्टर किसी हत्या की जिम्मेदारी स्वीकार करता है। अक्सर, यह एक सोची-समझी

जोखिम भरी चाल होती है जिसे वह अंडरवर्ल्ड के शीर्ष स्तरों में अपनी जगह बनाने के लिए उठाता है।

नीला (100 रुपये)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'ब्लू' का मतलब 100 रुपये होता है। 'हाफ ब्लू' का मतलब 50 रुपये होता है। ये शब्द 1950 के दशक में प्रचलन में आए। ये डोंगरी और उसके आसपास के इलाकों में काफी प्रचलित हैं।

दिव्य

मुंबई के अंडरवर्ल्ड के शुरुआती विकास की जड़ें 1970 के दशक के मध्य में तस्करी किए गए बोस्की कपड़े में देखी जा सकती हैं। लेकिन जैसे-जैसे गिरोहों का महत्व बढ़ता गया, तस्करी की जगह वसूली या 'वसूली' ने ले ली।

महेश और अरविंद ढोलकिया जैसे व्यापारियों ने अपना बकाया वसूलने के लिए शब्बीर कास्कर और उनके छोटे भाई दाऊद इबाहिम को काम पर रखा। पठान भाई अमीरजादा और आलमजेब को हाजी मस्तान ने अपने वसूली एजेंट के रूप में नियुक्त किया।

बोस्की कपड़े की तस्करी की शुरुआत गुजरात के एक गिरोह ने की थी, जिसमें ज्यादातर मछुआरे शामिल थे जो जल्दी पैसा कमाना चाहते थे। इसके अलावा, लौंग, दालचीनी, लाइटर स्टोन, ट्रांजिस्टर और सिगरेट जैसे अन्य उत्पाद भी तस्करी में शामिल थे।

उस समय इसे खुदरा व्यापार कहा जाता था और 1960 के दशक के उत्तरार्ध में लगभग सभी प्रतिबंधित सामान दुबई से तस्करी करके लाया जाता था।

हारून तालाब का कच्छ तट पर दबदबा था। सूरत के पास का तटीय क्षेत्र रतिलाल नाविक के अधीन था। बाना खलप और लालू जोगी दमन तट पर सक्रिय थे। सुकुर नारायण भाकिया एक साधारण मछली पकड़ने वाली नाव के मालिक से उठकर पूर्व पुर्तगाली उपनिवेश के सबसे बड़े तस्करों में से एक बन गया।

जल्द ही तस्करों ने सूची में सोना, 80-20 कैरेट स्ट्रेचलॉन ट्राउजर मटेरियल, 66/67 कैरेट टैन टन स्ट्रेच, 1470 स्ट्रेचलॉन ट्राउजर फैब्रिक और 644 साड़ियाँ जैसी अन्य वस्तुएँ भी जोड़ दीं। दमन में लगभग 225 रुपये में मिलने वाला 25 मीटर का बोस्की कपड़ा मुंबई में दोगुनी कीमत पर बेचा गया।

महेश और अरविंद ढोलकिया जैसे तस्करों ने मुंबई से लगभग 200 किलोमीटर दूर स्थित दमन केंद्र शासित प्रदेश से प्रतिबंधित सामान की तस्करी के लिए वाहनों का एक बेड़ा किराए पर लिया था। कभी-कभी कपड़ों की तस्करी के लिए कोयले से चलने वाले इंजनों के खोखले हिस्सों का इस्तेमाल किया जाता था।

अजीज कोंकणी कोंकण तट से अपना सामान तस्करी करके लाता था और उसका अधिकांश माल दक्षिण मुंबई के मनीष बाजार में बेचा जाता था।

जल्द ही, कुछ खुदरा विक्रेताओं ने लागत कम करने के उपाय के रूप में दुबई के व्यापारियों से सीधे संपर्क स्थापित कर लिए। माल की आपूर्ति मतुंगा के मुसाफिरखाना, मनीष मार्केट और गांधी मार्केट स्थित दुकानों को की जाती थी। शाम को नकदी इकट्ठा करने का काम उन गिरोहों को सौंपा गया था जो गुप्त जगत की कमाई का बड़ा हिस्सा पाने के लिए आपस में लड़ते रहते थे।

बोचकिया (हिरमन कोटेकर)

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, बोचकिया एक अकेला गिरोह चलाने वाला बन गया था, जो वर्ली और उसके आसपास के इलाकों में जमीन हड़पने से पहले कई डकैतियों और जबरन वसूली की घटनाओं में शामिल था। वह 1998 से 2001 के बीच दादर-प्रभादेवी क्षेत्र की झुग्गी-झोपड़ियों में कई बलात्कार के मामलों में भी संलिप्त था। कई अन्य मामलों में भी शक की सुई बोचकिया की ओर इशारा कर रही थी।

क्राइम ब्रांच के अधिकारी महेश देसाई ने 27 अक्टूबर, 2002 को प्रभादेवी के पास उसे देखते ही घेर लिया। पुलिस के अनुसार, गोलीबारी में उसकी मौत हो गई।

भूरा

'ब्राउन' मुंबई की गलियों में मिलने वाले स्मैक के छोटे पैकेट का संक्षिप्त रूप है, जिसे 'ब्राउन शुगर' या 'पुडिंग' भी कहा जाता है। यह हेरोइन का घटिया संस्करण है और ज्यादातर कूड़ा बीनने वाले इसका सेवन करते हैं। इसकी बिक्री कीमत 3 लाख रुपये प्रति किलोग्राम है।

बायकुला और डी-कंपनी के बीच टकराव

1989 में बायकुला की दगड़ी चॉल के गैंगस्टरों ने दाऊद इब्राहिम के प्रमुख सहयोगी और वित्तपोषक महेंद्र चोराडिया का अपहरण कर लिया था। इस खबर से स्वाभाविक रूप से डॉन गुस्से से भड़क उठा था।

दाऊद ने अरुण गावली से संपर्क करने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह बाहर थे। दाऊद अतीत में रामा नाइक और बाबू रेशिम से नियमित रूप से मिलने के कारण

दगड़ी चॉल से परिचित था।

दाऊद के किशोर गावळी उर्फ पापा को समझाने-बुझाने के प्रयास असफल रहे। गावळी भाई ने समझदारी से काम लेने से इनकार कर दिया।

चोराडिया को दागदी चॉल में निर्माणाधीन इमारत में तीन दिनों तक यातनाएं दी गईं। गिरोह के सदस्यों ने बचाव के प्रयास की आशंका जताते हुए अपने प्रतिद्वंद्वियों को बंधक की स्थिति की जानकारी दी। उन्होंने दाऊद को टेलीफोन पर चोराडिया की चीखें भी सुनाईं। वह व्यवसायी एक धनी व्यक्ति था और डी-कंपनी के निवेशों के बारे में सब कुछ जानता था।

तीन दिन बाद, चोराडिया प्रतिशोध में की गई हत्या का शिकार हो गया। उसकी हत्या से पहले गिरोह को पैसे की पेशकश की गई थी। उसका क्षत-विक्षत शव दगड़ी चॉल के बाहर मिला। बायकुला कंपनी को पैसे की पेशकश की गई, जिसे ठुकरा दिया गया।

दाऊद के आदमियों ने माहिम में पापा की हत्या करके जवाबी कार्रवाई की। इसके अलावा आठ अन्य हत्याएं भी हुईं। अब दोनों गिरोहों के बीच एक पूर्ण युद्ध छिड़ चुका था।

बुलेटप्रूफ ग्लास (इतना सुरक्षित नहीं)

1987 में बायकुला के एक व्यस्त चौराहे पर दिनदहाड़े सतीश राजे की गोली मारकर हत्या कर दी गई, यह घटना इस बात की भयावह याद दिलाती है कि कितनी कड़ी सुरक्षा भी कितनी असुरक्षित हो सकती है। यह पहली बार था जब किसी हत्यारे ने कार के शीशे को हथौड़े से तोड़कर बेहद करीब से गोली चलाई थी।

दाऊद इब्राहिम के प्रमुख सहयोगी सतीश राजे को दरअसल 1988 में ही उनकी हत्या की साजिश की जानकारी मिल गई थी। प्रतिद्वंद्वी गिरोहों के वित्त नियंत्रकों पर गैंगस्टरों के हमले शुरू होने के बाद से ही वह गैंगस्टरों के प्रमुख निशाने पर थे।

दाऊद के छोटे भाई नूरा ने राजे को एक बिल्कुल नई मर्सिडीज कार भेंट की। यह गिरोह के चंदा जुटाने की गतिविधियों के लिए एक निर्माण कंपनी को दिखावे के तौर पर चलाने के बदले में दिया गया एक प्रोत्साहन था।

राजे ने चेतावनियों को खारिज कर दिया। उन्होंने तर्क दिया कि क्या आयातित बुलेटप्रूफ कार को निशाना बनाया जा सकता है? उनका मानना था कि शीशे इतने मोटे थे कि गोलियां बस उनसे टकराकर वापस उछल जाएंगी।

प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर अशोक जोशी, राजे को अपना निशाना बना रहा था, जिसे वह एक आसान लक्ष्य मानता था। इसके पीछे मकसद जोशी के गुरु रमा नाइक की हत्या का बदला लेना था।

इससे एक घातक सिलसिला शुरू हो गया। यही कार्यप्रणाली 1994 में महालक्ष्मी में अमर नायक के आदमियों द्वारा खाटाऊ मिल मालिक सुनीत खाटाऊ की हत्या में भी देखी गई थी। ट्रैफिक चौराहे पर रुकी खाटाऊ की कार का शीशा तोड़ने के लिए एक हथौड़े का इस्तेमाल किया गया। इसके बाद उनके शरीर को गोलियों से छलनी कर दिया गया।

1995 में, छोटा राजन के पूर्व सहयोगी गुरु सतम और एक अन्य हत्यारे जो डिसूजा ने बांद्रा में उस मर्सिडीज कार का शीशा तोड़ दिया, जिसमें ईस्ट वेस्ट एयरलाइंस के निदेशक मोहम्मद तकीउद्दीन यात्रा कर रहे थे। तकीउद्दीन की कुछ ही मिनटों में कई गोलियों के घावों के कारण मृत्यु हो गई।

1998 में इस पद्धति का फिर से प्रयोग किया गया, जब छोटा शकील के सहयोगी शौकत सरकार को निशाना बनाया गया। तेज रफ्तार आयातित कारों के प्रति अपने जुनून के लिए जाने जाने वाले सरकार को भी दृढ़ विश्वास था कि बुलेटप्रूफ चश्मे उन्हें हमले से बचा सकते हैं। अन्य लोगों की तरह, उनका भी यह विश्वास गलत साबित हुआ।

कैमरा (हथियार)

जब कोई सरगना कलाकार से कैमरा लाने को कहता है, तो वास्तव में इसका मतलब होता है कि शूटर हथियार लेकर आए और कैमरे की तरह ही निशाना लगाकर एक बेहतरीन तस्वीर खींचे।

कैप्सूल (गोली)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में कैप्सूल को बुलेट भी कहा जाता है। यह शब्द इसलिए प्रचलित हुआ क्योंकि दोनों दिखने में एक जैसे होते हैं।

कैसेट (पत्रिका)

9 मिमी कैलिबर की स्टार पिस्टल में इस्तेमाल होने वाली मैगज़ीन को अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'कैसेट' कहा जाता है। इस हथियार का इस्तेमाल मुख्य रूप से दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्य करते हैं।

चीन में बनी स्टार पिस्टल, जिसमें नौ राउंड की कैसेट होती है, अवैध हथियार डीलर से 20,000 रुपये से लेकर 60,000 रुपये तक में खरीदी जा सकती है। कुछ गिरोह सीमा पार से अपनी आपूर्ति प्राप्त करते हैं।

अंडरवर्ल्ड में कैट का मतलब 10,000 रुपये होता है। कैट आम तौर पर ताश के पत्तों के एक पैक का संक्षिप्त रूप है। जब कोई गैंगस्टर अपने साथी को ताश के पत्तों का एक पैक लाने के लिए कहता है, तो अंडरवर्ल्ड की भाषा में इसका मतलब वास्तव में 10,000 रुपये होता है।

चब्बिस (26)

छब्बीस शब्द का प्रयोग एक युवा, अनैतिक लड़की के लिए किया जाता है। अंडरवर्ल्ड की भाषा में इसका अर्थ 'आइटम गर्ल' होता है। यह शब्द संभवतः बहुत पतली कमर से उत्पन्न हुआ हो सकता है।

चाड जाना

चाड जाना या चाडा एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल तब किया जाता है जब पुलिस की कोई टीम या प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर किसी परिसर में किसी गुंडे की जांच करने, उसे गिरफ्तार करने या उसे डराने-धमकाने के लिए प्रवेश करता है। इसे एक अपमान माना जाता है।

चाय पाउ

अंडरवर्ल्ड की भाषा में, चाय पाउ उस व्यक्ति को कहते हैं जो बॉस के बहुत करीब होता है; इतना करीब कि उसके साथ खाना खा सके।

चक्री (रिवॉल्वर का चैंबर और बालू डोकरे)

दक्षिण मुंबई में पेद्दार रोड से सटे समुद्र तट पर पुलिस द्वारा पीछा किए जाने के दौरान, एक 16 वर्षीय लड़का एक कुशल फुटबॉलर की तरह भीड़ को चकमा देते हुए आगे निकल जाता है।

अचानक, दुबले-पतले युवक ने अपनी रिवॉल्वर से 'चैंबर' (गोली) निकाली और उसे समुद्र में फेंक दिया। कुछ ही क्षणों बाद, पुलिस ने उसे पकड़ लिया।

संक्षिप्त सुनवाई के बाद गोली चलाने वाला और उसके दो साथी, भारकियाभाई और अंद्यभाई, नि:शुल्क छूट गए। पुलिस मजिस्ट्रेट को यह नहीं समझा पाई कि बिना चैंबर वाली पिस्तौल से गोली कैसे चलाई जा सकती थी।

सत्रह साल बाद, कोल्हापुर के पास चांदगढ़ का वह छात्र मुंबई के सबसे खतरनाक कॉन्ट्रैक्ट किलर में से एक बन गया—किरण केशव डोकरे उर्फ बालूभाई गैंगस्टर छोटा राजन का प्रमुख सहयोगी। 22 मई, 2005 को मलेशिया के कुआलालंपुर के पास उसकी हत्या कर दी गई।

चालू बैंक

बायकुला कंपनी ने आकस्मिक निधि के तौर पर 30 लाख रुपये अलग रखे थे। इस रकम का इस्तेमाल गिरोह के भीतर किसी आपात स्थिति में ही किया जाना था। मुठभेड़ में मारे जाने तक इस निधि का प्रबंधन शरद बंदवे करते थे।

चम्दा (स्त्रियों के प्रति आसक्त पुरुष)

चम्दा उन गैंगस्टरों के लिए इस्तेमाल होने वाला एक संदिग्ध उपनाम है जो महिलाओं के प्रति आसक्त होते हैं। आमतौर पर, इसका तात्पर्य लड़कियों को बार और रेड-लाइट इलाकों में या त्वरित यौन संबंध के लिए फुसलाने से होता है।

यह शब्द मुख्यतः मध्य मुंबई की तंग गलियों में प्रयोग किया जाता है। हिंदी में 'चमदा' का अर्थ त्वचा और देह व्यापार भी होता है।

चंदा (दान)

गैंगस्टर फ़ज़ल-उर-रहमान अक्सर अपने शिकारों को पैसे देने के लिए मनाते हुए सुना जाता था। वह फ़ोन पर अपने शिकारों से कहता था, "हम पैसे कहाँ माँगते हैं। हम तो सिर्फ़ चंदा माँगते हैं।" वह अपने साथियों को यह भी समझाता था कि भगवान ने कुछ लोगों को ज़रूरत से ज़्यादा धन दिया है और कहता था, "भगवान ने हमें अतिरिक्त धन लेने को कहा है। बिना किसी झिझक के माँग लो।"

अंडरवर्ल्ड की भाषा में चप्पल हथियार का दूसरा नाम है। 'एक जोड़ी 9 नंबर चप्पल भेज रहा हूं' का खतरनाक अर्थ है: 'मैं 9 मिमी कैलिबर की पिस्तौल भेज रहा हूं।'

Chappal Ki Jodi Le Kar Ana

'चप्पल की जोड़ी लेकर आना' का अर्थ है, हथियार लेकर मौके पर आना। 'जोड़ी' शब्द रिवॉल्वर के 'चक्कर' या घूमने वाले चैंबर से लिया गया है।

चार तंग पार (वाहन से भाग जाना)

रमेश सर्वे उर्फ राम्या बटलर, विनोद मतकर और संजय घाटे नेपाल में नेपाली सांसद मिर्जा दिलशाद बेग की हत्या करने गए थे। नेपाली गैंगस्टर करण सिंह मानसिंह भी इस हत्यारा गिरोह में शामिल था, जिसे बालू डोकरे ने अंजाम दिया।

छोटा राजन का सबसे भरोसेमंद सहयोगी बालू डोकरे 1990 के दशक में 50 हाई-प्रोफाइल हत्याओं के पीछे था। वह शांत स्वभाव का था लेकिन अपने कार्यों के लिए जाना जाता था।

16 नवंबर, 1998 की एक सर्द दोपहर थी। बेग अपनी एसयूवी की पिछली सीट पर बैठे काठमांडू के पास भक्तवा की ओर जा रहे थे, अपनी पत्नी से मिलने के लिए, जिससे उन्होंने गुपचुप तरीके से शादी की थी।

बैग को खत्म करने के लिए जाल बिछाया गया था। करीब 15 मिनट तक पीछा करने के बाद हमलावरों ने बैग के बंगले के प्रवेश द्वार से महज 50 मीटर की दूरी पर उनकी गाड़ी को रोक लिया। शुरू में योजना थी कि उन्हें एसयूवी के अंदर ही मार दिया जाए।

बैग किसी तरह गाड़ी से निकलकर अपने बंगले के गेट की ओर भागा। कुछ ही पलों में डोकरे ने अपनी 9 मिमी पिस्तौल निकाली और निशाना साध लिया। अगले ही पल गोली बैग के सिर के पिछले हिस्से में घुसी और उसके माथे से निकलकर फट गई।

जैसे ही बैग लड़खड़ाते हुए सड़क पर पहुँचा, डोकरे ने अपने लक्ष्य को पकड़ लिया। निर्मम शूटर लाश के पास बैठ गया और एहतियात के तौर पर दो और गोलियां दाग दीं।

इसी बीच, जब बेग का ड्राइवर या रक्षक गाड़ी से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था, तभी घाटे ने उसे करीब से गोली मार दी। गोलियों की आवाज से ही बेग के ठिकाने के अंदर मौजूद गार्ड सतर्क हो गए। खतरा भांपते ही मुंबई के गैंगस्टर भागने वाली गाड़ी में सवार हो गए। "चार टांग पे भागो!" डोकरे चिल्लाया। वे भागने वाली गाड़ी में कूदे और फरार हो गए।

चार्ली

मुंबई के अंडरवर्ल्ड और अफ्रीकी तस्करों के लिए 'चार्ली' का मतलब कोकीन है। प्रति ग्राम इसकी बाजार कीमत लगभग 3000 रुपये है, और खेप का वित्तपोषण करने वाले व्यक्ति को प्रति किलोग्राम 10,000 अमेरिकी डॉलर से अधिक मिलते हैं।

Chatis (36)

'चैटिस का अकड़ा' या संख्या 36 का अर्थ है किसी के साथ अच्छे संबंध न होना। यह शब्द भी 'चाइना पेटी' खेल से उत्पन्न हुआ है।

Chaubis (24)

चौबिस या 24 अंडरवर्ल्ड की भाषा में एक खूबसूरत लड़की के लिए इस्तेमाल होता है। यह शब्द 24 इंच की पतली कमर से आया है। यह गैंगस्टरों द्वारा इस्तेमाल किया जाने

वाला एक अपमानजनक शब्द है।

चीता

'चीता' या 'पेटी' का असल मतलब एक लाख रुपये होता है। यह बोलचाल का शब्द सट्टेबाजों के बीच पुलिस और गिरोह के सदस्यों को गुमराह करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जो उनसे सुरक्षा के नाम पर पैसे मांगते हैं।

Chhamiya (Damsel Who Started The Dawood-Pathan War)

कांग्रेस हाउस, अंडरवर्ल्ड के सरगनाओं का एक कुख्यात अड्डा था, जहाँ लड़कियाँ 'लटक-टक' करती थीं, जो मुंबई के रेड-लाइट इलाकों में आम बोलचाल की भाषा है। 12 फरवरी, 1981। आधी रात बीत चुकी थी और मुंबई सेंट्रल के एक आलीशान डांसिंग अड्डे, कांग्रेस हाउस में लड़कियाँ अपना नियमित मुजरा खत्म कर चुकी थीं। दाऊद के बड़े भाई शब्बीर उर्फ अरब को एक डांसर चित्रा पर दया आ गई थी। वह बेहद खूबसूरत थी और प्रतिद्वंद्वी उसे मोहरे के रूप में इस्तेमाल करने की सोच रहा था।

चित्रा चाहती थी कि शब्बीर उसे मुजरा हॉल से बाहर ले जाकर रात की रौनक का अनुभव कराए। शब्बीर मान गया और चित्रा को अपने साथ लेकर बांद्रा की ओर चल पड़ा। उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि प्रतिद्वंद्वी पठान गिरोह के सदस्य एक सफेद एम्बेसडर कार में उनकी फिएट कार का पीछा कर रहे हैं।

दरअसल पीछा करने की शुरुआत हाजी अली से हुई और पठान गिरोह ने प्रभादेवी में सिद्धि विनायक मंदिर के सामने एक पेट्रोल पंप पर रुकी फिएट कार को घेर लिया।

रात के करीब 1:30 बजे थे और शब्बीर अमीरजादा, आलमजेब, जाफर जमाल सिद्दीकी और दो अन्य लोगों को देखकर दंग रह गया। चित्रा कार से उतरी और अंधेरी रात में गायब हो गई।

शबीर अभी अपनी हैरानी से उबर ही रहा था कि तीनों ने अपने लक्ष्य पर पांच गोलियां दाग दीं, जिससे वह कार में ही बेजान पड़ा रह गया।

हमलावर एम्बेसडर कार में सवार हुए और कास्कर परिवार के निवास स्थान, पाकमोडिया स्ट्रीट की ओर तेज़ी से निकल पड़े। उनकी योजना दाऊद को उसके बड़े भाई की खबर पहुँचने से पहले ही अचानक घेरने की थी।

इससे एक ऐसे युद्ध की शुरुआत हुई जिसके परिणामस्वरूप अगले दस वर्षों में 50 से अधिक गैंगस्टरों का सफाया हो गया, जिनमें उनके रिश्तेदार भी शामिल थे।

चेरा (चेहरा)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'चेरा' का मतलब होता है पुलिस को वांछित अपराधी की पहचान करने में मदद करना। दरअसल, सैयद टोपी की हत्या इसलिए की गई क्योंकि उसने पुलिस को 'चेरा' की मदद की थी, यानी उसने गैंगस्टर छोटा शकील के साले आरिफ अबू बकर शेख उर्फ भाईजान की पहचान बताई थी।

सैयद टोपी को इस बात की जानकारी नहीं थी कि पुलिस अधिकारी छोटा शकील का करीबी था। पुलिसवाले के साथ हुई बातचीत को रिकॉर्ड कर लिया गया और दाऊद इब्राहिम के सामने सुनाया गया। सैयद की हत्या उसी अधिकारी ने की, जिसकी मदद से उसने भाईजान की पहचान करवाई थी।

Chhatri (Financer & Sympathizer)

ढोलकिया बंधुओं की कहानी आजकल बॉलीवुड की मसाला फिल्मों का आधार बन गई है।

गुजराती मूल के अरविंद और महेश का जन्म मध्य मुंबई के नल बाजार में एक छोटे कपड़े के व्यापारी के बेटों के रूप में हुआ था। पिता ने जल्दी पैसा कमाने के लिए कपड़े का व्यापार शुरू किया था और जब बेटों की हत्या हुई, तब तक वे मुंबई के अंडरवर्ल्ड की सीढ़ी के शीर्ष पायदान से बस कुछ ही कदम दूर थे।

13 अक्टूबर, 1987 को, अच्छे कपड़े पहने महेश ढोलकिया अपने पेद्दार रोड स्थित आवास से बाहर निकले, जब हाजी अली जंक्शन के पास प्रतिद्वंद्वी निशानेबाज दिखाई दिए।

करीब तीस गोलियां चलाई गईं, जिससे महेश की मौके पर ही मौत हो गई। इन सजे-धजे व्यापारियों को यह अंदाजा नहीं था कि जब वे 'भाईलैंड' के अंधेरे दलदल में उतरे तो उनका क्या अंजाम होगा। वे उन अग्रणी 'सेठों' में से थे जिन्होंने अंडरवर्ल्ड की गतिविधियों को वित्तपोषित करना शुरू किया था।

मुंबई में दो टकी (दो तालाब) के पास कपड़ा की दुकानें चलाने वाले ढोलकिया परिवार का पालन-पोषण दक्षिण मुंबई के खेतवाड़ी की संकरी गलियों में हुआ, इससे पहले कि वे दाऊद के संपर्क में आए, जिसे बाद में उनके बड़े भाई महेश ढोलकिया ने वित्तीय सहायता प्रदान की।

अरविंद और महेश ने कपड़ा तस्करी और मानव तस्करी का धंधा शुरू कर दिया, और मध्य मुंबई में अपने संचालन को चलाने के लिए येदा गोपाल जैसे स्थानीय गुंडों की बाहुबल का इस्तेमाल किया।

ढोलकिया परिवार ने अपनी पहली गलती तब की जब उन्होंने राजन नायर उर्फ बड़ा राजन की हत्या के लिए चंद्रशेखर सफालिका को काम पर रखा। इसके बाद जो कुछ हुआ वह किसी बॉलीवुड ब्लॉकबस्टर फिल्म की तरह घटित हुआ। इसका नतीजा तारदेव के पास एक घातक गोलीबारी के रूप में सामने आया। एक साल बाद, अरविंद को भी सीज़र पैलेस में अंडरवर्ल्ड के नाटकीय अंदाज में गोली मार दी गई।

बाद में पुलिस ने जगजीत सिंह, दिलीप कुलकर्णी और मतिक को गिरफ्तार कर लिया, ये सभी दाऊद के कथित गुर्गे थे।

छोटा बाबू का दोहरा धोखा

अशोक चौधरी उर्फ छोटा बाबू का सम्मान न केवल इसलिए किया जाता था क्योंकि वह गिरोह के सबसे पुराने सदस्यों में से एक था या गैंगस्टर से राजनेता बने अरुण गावली के गुरु रमा नाइक का करीबी दोस्त था। वह गिरोह का 'धन स्रोत' भी था, जो गिरोह के लिए "हजता" वसूलता था।

सब कुछ ठीक चल रहा था, जब तक कि गावळी गिरोह के कुछ वरिष्ठ सदस्यों को पता नहीं चला कि दाऊद इब्राहिम के हमदर्द अक्सर गावळी गिरोह द्वारा निशाना बनाए जाने पर समझौता करने के लिए छोटा बाबू से संपर्क करते थे।

गावली के प्रमुख सहयोगी सदा पावले उर्फ मामा को छोटा बाबू के हस्तक्षेप करने पर हर बार फिरौती की रकम लगभग 50 प्रतिशत कम करनी पड़ती थी। इससे उनके मन में संदेह पैदा हो गया। उनकी सतर्कता रंग लाई और कुछ ही समय बाद पावले ने दाऊद इब्राहिम से संबंध रखने वाले बांद्रा के एक बिल्डर को निशाना बनाया और सुरक्षा राशि के रूप में एक करोड़ रुपये की मांग की। जैसा कि उम्मीद थी, पीड़ित ने छोटा बाबू से संपर्क किया और फिरौती 20 लाख रुपये में तय हो गई।

छोटा बाबू को इस बात का पता नहीं था कि उसके साथी उस पर नज़र रख रहे हैं। कुछ महीनों बाद, पावले ने उसी बिल्डर को फोन किया और हफ्ता के तौर पर 5 लाख रुपये की किस्त की मांग की। जब बिल्डर ने बताया कि उसने छोटा बाबू को पहले ही 20 लाख रुपये दे दिए हैं, जो पहले की फिरौती की मांग को पूरा करने के लिए दिए गए 20 लाख रुपये के अतिरिक्त थे, तो पावले को आश्चर्य नहीं हुआ।

बाबू ने डॉन के भरोसे को धोखा दिया था और उसकी जानकारी के बिना 20 लाख रुपये वसूल लिए थे। उन्हें यह भी संदेह था कि वह पुलिस के लिए मुखबिर के रूप में काम कर रहा हो सकता है।

यह रहस्य तब उजागर हुआ जब क्राइम ब्रांच ने भुकारी हत्याकांड के सिलसिले में राजू सिरसात, मनोज राघवन, राहुल पोल और विजय नरसले को गिरफ्तार किया: गिरोह को शक होने लगा कि बाबू ने पुलिस को सूचना दी होगी।

जब गैंगस्टरों को पता चला कि पुलिस हत्या के संबंध में सभी सही सवाल पूछ रही है, तो उनका संदेह और भी मजबूत हो गया।

मारे गए गैंगस्टर विजय शिरोडकर उर्फ साडे तीन को बाबू की हत्या के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था। इस मामले में नामजद अन्य लोगों में गणेश भोसले उर्फ वकील और पावले शामिल थे, जो बाद में हुई मुठभेड़ों में मारे गए।

Chhota Ganya

गणेश साल्वी उर्फ छोटा गन्या को गणेश सावंत उर्फ गन्या सावंत ने लगभग 1993 में अपराध की दुनिया में शामिल किया था। अपने छोटे कद (पांच फीट) के कारण ही उन्हें 'छोटा गन्या' उपनाम मिला था। लूट के माल के बंटवारे को लेकर हुए विवाद के बाद, जिसमें दोनों ने एक-दूसरे को जान से मारने की कसम खाई थी, इस शागिर्द

हत्यारे ने 1997 में सावंत से नाता तोड़ लिया। 1998 में जेल में रहने के दौरान सुनील मदगांवकर ने गन्या को छोटा राजन गिरोह में शामिल कर लिया। रोहित वर्मा और जगगु शेट्टी जैसे प्रमुख सरगनाओं से दोस्ती करने के बाद वह गिरोह में ऊपर चढ़ता चला गया। 4 अप्रैल 2002 को रवींद्र आंग्रे के नेतृत्व वाली एक टीम ने ठाणे में मुठभेड़ में इस गैंगस्टर को मार गिराया।

Chhota Kasu (Dawood's Challenger)

दाऊद इब्राहिम अपनी भाग्यशाली चांदी रंग की टोयोटा 'ट्रिपल एक्का' में सवार थे, जब माहिम चर्च के पास एक ट्रैफिक सिग्नल पर कार रुक गई।

एक सफेद एम्बेसडर कार बगल में आकर रुकी। कुछ देर बातचीत के बाद, कार में सवार एक व्यक्ति नीचे उतरा और टोयोटा की ओर चल पड़ा।

"कल तक तुम कीड़े-मकोड़े की तरह रेंगते थे; अब जब तुम्हारे पंख निकल आए हैं, तो तुम पतंगे बन गए हो।" (कल तक तुम कीड़े-मकोड़े की तरह रेंगते थे। अब जब तुम्हारे पंख निकल आए हैं, तो तुम खुद को पतंगा समझते हो)। यह चुनौती चोर से ड्रग तस्कर बने छोटा कासु ने स्पष्ट शब्दों में दी थी।

टोयोटा में सवार अन्य लोग, लम्बू शकील और हनीफ कुत्ता, इस अपमान के गवाह थे। लेकिन दाऊद ने उसकी बातों में आने से इनकार कर दिया। उसने लम्बू शकील से रास्ता बदलने और आगे बढ़ने को कहा। विजयी कासू, अपने दो मुस्कुराते साथियों के साथ, दक्षिण मुंबई के नल बाजार के पास स्थित अपने गढ़ की ओर चल पड़ा।

मुंबई के कुख्यात अंडरवर्ल्ड में भी बहुत कम लोगों में दाऊद इब्राहिम को सार्वजनिक रूप से चुनौती देने का साहस होता। लेकिन छोटा कासू 1970 में अपने चरम पर था,

जब दाऊद खेल के नियम सीख रहा था—धैर्य रखना और सही अवसर की प्रतीक्षा करना सीख रहा था।

Chhota Rajan (Nana Ka Jai Hind)

राजेंद्र सदाशिव निकलजे के रूप में जन्मे छोटा राजन ने उत्तरी मुंबई के निर्विवाद सरगना राजन नायर के शिष्य के रूप में अपना करियर शुरू किया। नए सदस्य और उसके गुरु में अंतर करने के लिए, उनके नाम के आगे क्रमशः छोटा और बड़ा जोड़ा गया। 15 सितंबर, 1983 को दक्षिणी मुंबई के एस्प्लेनेड कोर्ट ले जाते समय बड़ा राजन की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

इसी दौरान मारे गए राजन के सरगना छोटा राजन ने गिरोह की बागडोर संभाली। बाद में, 1987 में, छोटा राजन दुबई भाग गया और दाऊद इब्राहिम का सबसे बड़ा सरगना बन गया, लेकिन छह साल बाद उसने डी-कंपनी से नाता तोड़ लिया। माना जाता है कि वह दक्षिण-पूर्व एशिया में छिपा हुआ है और उसे 'हिंदू डॉन' के नाम से जाना जाता है। वह भारतीय केंद्रीय खुफिया एजेंसी के कुछ अधिकारियों का करीबी भी माना जाता है।

Chhota Rupaiya

छोटा रुपया का अर्थ एक लाख हो सकता है। यह बहुत प्रचलित शब्द नहीं है, लेकिन मुंबई में सक्रिय उत्तर प्रदेश के कुछ गैंगस्टर इसका इस्तेमाल करते हैं।

छोटा शकील

अपने करियर के शुरुआती दिनों में, मुंबई के अंडरवर्ल्ड में कई शकील सक्रिय थे। इनमें से एक, शकील शेख, लंबा और तगड़ा था, इसलिए उसे स्वाभाविक रूप से 'लंबू शकील' उपनाम दिया गया। जब शकील मोहिउद्दीन बाबू शेख ने अपराध की दुनिया में कदम रखा और उसकी लंबाई पांच फीट से एक-दो इंच अधिक हो गई, तो उसे स्वाभाविक रूप से 'छोटा शकील' उपनाम मिल गया। आज वह गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम का दाहिना हाथ है।

शकील ने टेमकर स्ट्रीट स्थित अपनी तंग दुकान से एयर कंडीशनर मरम्मत का छोटा-मोटा काम शुरू किया था, बाद में वह दाऊद इब्राहिम के साथ जुड़ गया। वह क्रिकेट का शौकीन था और दुबई और फिर पाकिस्तान भागने से पहले मध्य मुंबई की संकरी गलियों में मैच खेलता था। छोटा राजन का कट्टर दुश्मन, जिसकी जगह उसने डी-कंपनी से अलग होने के बाद ली थी, अब गंजा होने के कारण 'पौ तकला' के नाम से भी जाना जाता है। पुलिस संयुक्त आयुक्त राकेश मारिया के अनुसार, शकील मुंबई में एक दर्जन से अधिक हाई-प्रोफाइल मामलों में वांछित है और अब मुस्लिम कट्टरपंथ की ओर झुकाव रखता है।

Chidiya (Bird/Pager)

मुंबई में गैंगस्टर छोटा शकील का प्रमुख शूटर सादिक इस्माइल जलवार उर्फ सादिक कालिया बेहद मायावी था। वह 1990 के दशक के मध्य में प्रतिद्वंद्वी छोटा राजन गिरोह के सदस्यों के बीच आतंक फैलाने वाले सबसे खूंखार कॉन्ट्रैक्ट किलर में से एक था।

अपराध शाखा की आपराधिक जांच इकाई को आखिरकार सादिक के पेजर नंबर की जानकारी मिल गई। इसे निगरानी में रखा गया।

लेकिन चिड़िया जल्द ही बंद हो गई। जाहिर तौर पर क्राइम ब्रांच के एक अधिकारी ने छोटा शकील को सूचना दे दी थी, जिसने बदले में अपने भरोसेमंद लेफ्टिनेंट को चिड़िया के टैप होने की सूचना दी।

सामान्य तौर पर, इस मामले की तह तक नहीं पहुंचा जा सकता था। लेकिन जांचकर्ताओं ने पेजर सेवा को चालू रखने के लिए बकाया के तौर पर 1,250 रुपये का भुगतान किया।

दो महीने बाद, ग्राहक को एक संदेश मिला जिसमें उसे 15 दिनों की मुफ्त सेवा और बकाया राशि का भुगतान करके अनुबंध नवीनीकृत करने का प्रस्ताव दिया गया था। ग्राहक को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि यह उसे ढूंढने की एक चाल थी।

पेजर अचानक फिर से सक्रिय हो गया। लेकिन एक समस्या थी। पेजर सादिक कालिया के पास नहीं, बल्कि उनके खास सहयोगी सलीम चिकना के पास था।

पुलिस को सूचना मिली थी कि सलीम चिकना और कालिया मुंबई और ठाणे में लगभग दस हत्याओं में शामिल थे। सूचना यह भी थी कि चिकना भागने वाली मोटरसाइकिल चलाता था, जबकि कालिया गोली चलाता था।

अपराध शाखा के अधिकारियों के सामने एक कठिन चुनौती थी क्योंकि कालिया सार्वजनिक टेलीफोन बूथ पर चिकना से जवाब पाने के लिए कभी भी पांच मिनट से अधिक इंतजार नहीं करता था। शहर भर से चिकना को संदेश भेजे जाते थे, जिससे उसकी स्थिति का सटीक पता लगाना मुश्किल हो जाता था।

अपराध शाखा के अधिकारी पूरे शहर में फैल गए, लेकिन कालिया हमेशा एक कदम आगे थी।

आखिरकार, चिकना को एक संदेश मिला जिसमें लिखा था, 'शाम 7 बजे मध्य मुंबई के अलेक्जेंडर सिनेमा में मौजूद रहें।' नव नियुक्त पुलिस सब-इंस्पेक्टर दया नायक, जो दस्ते के सदस्य थे, मध्य मुंबई में ही थे, इसलिए उन्होंने जोखिम उठाने का फैसला किया।

कम ही लोग इस बात से परिचित थे कि नायक मारुति जेन में बैठकर अपने शिकार का इंतजार कर रहा था। कुछ मिनट बाद, एक यामाहा मोटरसाइकिल जर्जर सिनेमा हॉल के बाहर आकर रुकी।

चिंतित सवार इंतज़ार कर रहा था, उसे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि पुलिस की एक टीम उस पर कड़ी नज़र रख रही है। कुछ मिनट बाद, जब उसने अपनी बाइक स्टार्ट करने की कोशिश की, तो चिकना यह देखकर दंग रह गया कि नायक पीछे बैठा है। चिकना, जिसने पहले सोचा था कि वह उसका साथी है, एक अपरिचित चेहरा देखकर थोड़ा चौंक गया।

“मैं दया नायक हूँ,” युवा पुलिसकर्मी ने फुसफुसाते हुए कहा। “मेरे पास हथियार है। गाड़ी में बैठ जाओ।” चिकना के पास आदेश मानने के अलावा कोई चारा नहीं था। हालाँकि कालिया तय स्थान पर नहीं आया, लेकिन पुलिस के पास अब एक ऐसा मोहरा था जो उसे पकड़ने में मदद कर सकता था। यह ट्रैकिंग तत्कालीन अतिरिक्त पुलिस आयुक्त डॉ. सत्य पाल सिंह ने की थी।

Chikna (Handsome)

चिकना के नाम से मशहूर नितेश कसारे का स्त्री-सुलभ रूप कई गंभीर अपराधों का राज था। 5 फीट 2 इंच से कुछ ही अधिक कद और आकर्षक चेहरे वाला कसारे पंजाबी युवती का वेश धारण करके रिहायशी इलाकों और शॉपिंग ज़ोन की

सावधानीपूर्वक निगरानी करता था ताकि किसी को शक न हो। वह महिलाओं की तरह चलता था, उनके हाव-भाव की नकल करता था और उसकी साफ दाढ़ी और चिकना रूप उसके वेश को छुपाने में मददगार साबित होता था।

मूल रूप से रायगढ़ जिले के श्रीवर्धन के रहने वाले कसारे की पहली घटना 1998 में खार में एक गली-मोहल्ले की लड़ाई में घटी थी। इसके बाद उन्होंने जेबकतरों का काम शुरू किया और फिर लुटेरों के एक गिरोह में शामिल हो गए। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, कसारे ने अपने प्रमुख साथियों राम बोराडे और अक्कपाड़ा के साथ मिलकर 1994 से 1996 के बीच मध्य मुंबई के ज्वैलर्स से 20 किलोग्राम से अधिक सोना और 103 किलोग्राम चांदी, जिसकी कीमत 1 करोड़ रुपये से अधिक थी, चुराई थी।

छोटे राजन ने कसारे को तब काम पर रखा जब उसकी करतूतों की खबर चारों ओर फैल गई। 30 से अधिक गंभीर अपराधों में नाम आने के बाद, कसारे ने अप्रैल 2000 में भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान मोहम्मद अजरुद्दीन के दोस्त और व्यवसायी अशरफ पटेल की गोली मारकर राजन गिरोह में अचानक अपनी स्थिति मजबूत कर ली। अशरफ पटेल को प्रतिद्वंद्वी दाऊद इब्राहिम के गिरोह से कथित संबंधों के कारण निशाना बनाया गया था। कसारे की हत्या 15 जून 2000 को हुई।

चिंदी (लुटेरे)

मुंबई के अंडरवर्ल्ड में लुटेरों को आमतौर पर चिंदी या फटेहाल कहा जाता है।

क्राइम ब्रांच के अधिकारी प्रदीप शर्मा बताते हैं कि चिंडी मूल रूप से लुटेरे होते हैं जिन्हें डॉन द्वारा शूटर के रूप में नियुक्त किया जाता है।

यह अपेक्षाकृत नया पेशा है, जिसकी मांग 1995 में तब बढ़ी जब चिंदी जगगु शेट्टी उर्फ फकीरा और उसके साथियों रोहित वर्मा, डी के राव और विनोद मतकर को ठाणे के

एक बैंक से 66 लाख रुपये लूटने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। मतकर ने गुरु सतम से संपर्क किया, जिन्होंने उसकी जमानत का इंतजाम किया। इसी दौरान वर्मा की मुलाकात छोटा राजन उर्फ नाना से हुई। बाद में राव और शेट्टी भी 'नाना कंपनी' में शामिल हो गए।

कुछ ही समय में, लुटेरों ने सुपारी लेकर हत्या करने को एक वैकल्पिक पेशे के रूप में अपना लिया, और इसके पीछे एक ठोस कारण था। यदि कोई लुटेरा गिरफ्तार हो जाता है, तो आमतौर पर पूरा गिरोह जल्द ही पकड़ में आ जाता है। इससे लुटेरों के पास जमानत का इंतजाम करने या जेल में घर का बना खाना (डब्बा) उपलब्ध कराने का कोई अच्छा जरिया नहीं बचता।

फिर इन चिंदियों को अपनी जमानत कराने और रिहाई के बाद 'नौकरी' मुहैया कराने के लिए प्रभावशाली डॉन और गिरोहों की जरूरत पड़ती है।

चिंदियों को अक्सर एक बोझ समझा जाता है, क्योंकि गिरफ्तारी होने पर वे पूरे गिरोह की योजनाओं का खुलासा कर देते हैं। इन कमियों के बावजूद, हाल के दिनों में छोटा राजन, अश्विन नायक और रवि पुजारी जैसे गैंगस्टरों ने कई चिंदियों को अग्रिम पंक्ति के निशानेबाजों के रूप में पदोन्नत किया है।

Chor Pakya

प्रकाश सकपाल उर्फ पाकया को सांपों से लगाव बचपन से ही था, जब सतारा के पास स्थित उनके पैतृक गांव में उन्हें सांपों को संभालना सिखाया गया था। विले पार्ले के पास स्थित उनके घर में सांपों का एक विशाल संग्रह था। सूत्रों के अनुसार, इनमें से कुछ खतरनाक दिखने वाले सरीसृपों को शहर आने वाले सपेरों से खरीदा गया था।

शुरुआत में, पाकया सहार-विले पार्ले इलाके में एक छोटे-मोटे लुटेरे के रूप में काम करता था। उसके ज्यादातर शिकार होटल मालिक होते थे। पाकया का तरीका यह था कि जब उसके शिकार पैसे गिन रहे होते थे, तब वह उन पर सांप फेंककर उन्हें डरा देता था। इससे पहले कि डरे हुए पीड़ितों को कुछ समझ आता, छोटा कद लेकिन मजबूत शरीर वाला यह लुटेरा लूट का माल और सांप, जिसे वह एक छोटे सूती थैले में रखता था, लेकर गायब हो जाता था।

घेरा

आर्थर रोड जेल में गिरोहों से संबद्ध न होने वाले लोगों के लिए प्रयुक्त शब्द 'सर्कल' संभवतः इस तथ्य से उत्पन्न हुआ है कि सामान्य कैदियों को जेल के भीतरी घेरे में रखा जाता है। उन्हें अतिरिक्त भोजन के लिए छोटे-मोटे काम करने पड़ते हैं।

क्लिंटन (नकली अमेरिकी डॉलर के नोट)

नकली अमेरिकी डॉलर के नोटों से जुड़े प्रमुख खिलाड़ियों में से एक की पहचान संतोष शेट्टी के रूप में हुई है, जो छोटा राजन गिरोह का पूर्व सदस्य है।

पुलिस की जांच से पता चला है कि शेट्टी चीन के एक संदिग्ध ऑपरेटर से नकली नोट खरीद रहा था। इन नोटों का इस्तेमाल नकली डॉलर छापने के लिए किया जाता है, जिसे अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'क्लिंटन' कहा जाता है।

मुंबई पुलिस को माइकल फर्नांडीज नाम के एक व्यक्ति का पता चला है, जिस पर नकली नोटों के गिरोह से जुड़े होने का संदेह है। उसे नोटों और कच्चे माल के परिवहन के लिए एक संदिग्ध शिपिंग कंपनी का इस्तेमाल करते हुए देखा गया है।

यह गिरोह इंडोनेशिया के जकार्ता के पास केबायोरन बारू में एक होटल का भी मालिक है। इसका इस्तेमाल नकली मुद्रा के सौदों के मुख्य केंद्र के रूप में किया जा रहा है।

शेट्टी ने लगभग 1996 में नासिक जेल से रिहा होने के बाद राजेश मदन शर्मा का नाम अपना लिया और 16 सितंबर, 2000 को बैंकॉक में अपने साथी रोहित वर्मा की हत्या के बाद वह गिरोह जगत में ऊपर चढ़ता चला गया।

कमांडर (उनके बिना मुकाबले नहीं जीते जा सकते)

वह आपका समझदार पड़ोसी हो सकता है, सोने की चेन शान से लहराता कोई सफल व्यवसायी या मोबाइल फोन का दीवाना कोई स्टॉक ब्रोकर। लेकिन वह निश्चित रूप से कोई पांडु या भेस बदला हुआ पुलिसवाला नहीं है... या ज़रा रुकिए, क्या वह ऐसा हो सकता है? अगर वह दया मोहिते है, तो उसे हेड कांस्टेबल या 'कमांडर' कहा जाएगा, जैसा कि मुंबई पुलिस में उन्हें प्यार से कहा जाता है। या फिर वह रंगीन मिजाज वाला अल्लाद गायकवाड़ हो सकता है, एक और हेड कांस्टेबल जो अंडरवर्ल्ड को अच्छी तरह जानता है।

विजय अंबेकर, अशोक पालंदे, प्रभु बेलकर, हरीश नाटू, कृष्णा जाधव, संतोष साठे और विनोद हातिस्कर उन 60 अन्य कांस्टेबलों में शामिल हैं जो उन दस्तों का मुख्य हिस्सा हैं जो गैंगस्टरों को उनके रास्ते में ही रोकते हैं और हाई-प्रोफाइल ऑपरेशनों के दौरान उन्हें मार गिराते हैं।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, जिन्हें 'मुठभेड़ विशेषज्ञ' कहा जाता है, ऑपरेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन ज़मीनी स्तर पर की जाने वाली कड़ी मेहनत कांस्टेबल या कमांडरों की होती है। उनके विविध कर्तव्यों में वाहन चलाना, घायल गैंगस्टरों को

अस्पताल पहुंचाना, संदिग्धों से निपटना, उनके बयान दर्ज करना, गैंगस्टरों और उनके बारे में व्यवस्थित रिकॉर्ड रखना शामिल है।

इनमें से अधिकांश बल में सबसे निचले पायदान पर होने के बावजूद एक प्रतिष्ठित स्थान रखते हैं और ये कांस्टेबल खाकी वर्दी में शायद ही कभी दिखाई देते हैं। वे अच्छे कपड़े पहनते हैं - कभी-कभी तो उनकी फैशन समझ भी आश्चर्यचकित कर देती है - जबकि अन्य कैजुअल कपड़े और जींस पहनना पसंद करते हैं। मोबाइल फोन उनके लिए अनिवार्य हैं, क्योंकि नेटवर्किंग ही उनकी सफलता की कुंजी है।

कंपनी

आर्थर रोड जेल में गिरोहों से जुड़े विचाराधीन कैदियों के लिए जीवन इतना कठिन नहीं है। उन्हें 'साथी' कहा जाता है, जिसका जेल की भाषा में अर्थ है अतिरिक्त आराम।

और 'साथी' के कैदियों और एक आम कैदी में ज़मीन-आसमान का फर्क होता है। 'साथी' के कैदियों के साथ बेहतर व्यवहार किया जाता है।

क्रिकेट इन गैंगस्टरलैंड

जब दाऊद इब्राहिम नाम के एक गैंगस्टर को बताया जाता है कि उसे 'सीजन बैट' भेजा जा रहा है, तो वह समझ जाता है कि उसे जल्द ही किसी महत्वपूर्ण लक्ष्य पर हमला करने के लिए कलासनिकोव जैसी अत्याधुनिक स्वचालित बंदूक मिलेगी।

इसी प्रकार, 'सामले के खेलना' का अर्थ है पुलिस से सावधान रहना। अंडरवर्ल्ड की भाषा में अंपायर का मतलब पुलिसवाला होता है। जब कोई गैंगस्टर कहता है 'अंपायर से बचो', तो इसका मतलब होता है पुलिस से सावधान रहो।

जानकारी साझा करना (सूचना/सूचना)

दाऊद इब्राहिम अपने बहनोई इब्राहिम पारकर की हत्या का बदला लेने के लिए बेताब था, जिसकी हत्या 27 जुलाई, 1992 को नागपाड़ा में कर दी गई थी। हमलावरों की पहचान प्रतिद्वंद्वी अरुण गावली गिरोह के सदस्य शैलेश हलदंकर और बिपिन शेरे के रूप में हुई।

हल्दंकर और शेरे ने दगड़ी चॉल में शरण ली थी और दाऊद के आदमी उन्हें निशाना बनाने में असमर्थ थे।

हालांकि, वी पी रोड पर एक टैक्सी चालक की हत्या करने की कोशिश करने पर भीड़ ने दोनों बदमाशों को पीट-पीटकर मार डाला। दोनों को गिरफ्तार कर 2 सितंबर, 1992 को जे जे अस्पताल में भर्ती कराया गया।

दाऊद के आदमियों को गिरफ्तारी की खबर लग गई और जल्द ही यह खबर डॉन तक पहुंच गई। इस खबर ने मास्टरमाइंड को बुरी तरह से परेशान कर दिया। वह जानता था कि उसे पारकर की मौत का बदला लेने का दूसरा मौका नहीं मिलेगा।

दाऊद जानता था कि जमानत पर रिहा होने पर गाव्लि के लोग भाग जाएंगे। जेल के अंदर उनकी हत्या करना एक मुश्किल काम था।

करीबी सहयोगी सुभाष सिंह ठाकुर और सुनील सावंत उर्फ सौत्या ने वांछित लोगों को खत्म करने की जिम्मेदारी स्वेच्छा से ले ली। मुख्य हमलावरों को दाऊद के साथियों श्यामकिशोर गरीगपत्ती और अजय शर्मा से रसद संबंधी सहायता मिली।

हत्यारों का गिरोह 12 सितंबर की रात को जे जे अस्पताल के कैदी वार्ड नंबर 18 में घुस गया और एके 47 राइफलों से गोलियां बरसाने लगा।

हलदंकर की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसका साथी शेरे हमले में गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस कांस्टेबल चिंताराम जसवर और कमलसिंह भानवत गोलीबारी में फंस गए और चोटों के कारण उनकी भी मौत हो गई।

हमलावर अजय शर्मा को यात्री के रूप में लेकर एक चोरी की फिएट कार में फरार हो गए। शर्मा को स्थानीय डॉक्टर द्वारा चिकित्सा उपचार दिए जाने के बाद, वाहन बाद में कमाठीपुरा के पास लावारिस हालत में मिला।

सुबह करीब 4 बजे, वे कल्याण-उल्हासनगर के मेयर जयंत सूर्यराव की सरकारी गाड़ी में भागने में कामयाब हो गए। हमलावर मलाड के पास एक ठिकाने पर पहुंचे जहां शर्मा के शरीर से गोली निकाली गई।

सूर्यराव की कार से न केवल पहला सुराग मिला, बल्कि उनकी गिरफ्तारी भी हुई। तीन दिन बाद, एक विशेष दस्ते ने मुख्तियार मंजिल से इकबाल इस्माइल पारकर, रहीम फाकी और इब्राहिम अंतुले को गिरफ्तार किया।

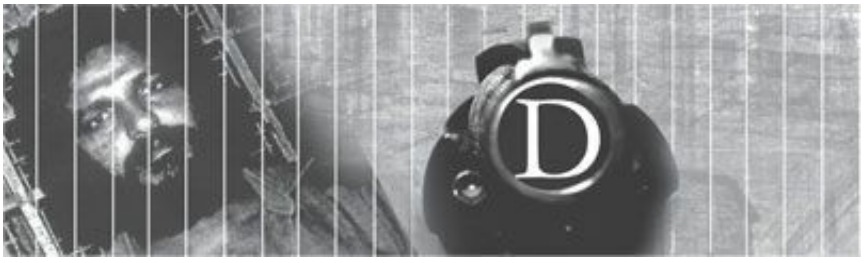

डी-कंपनी (दाऊद इब्राहिम गिरोह)

डी-कंपनी की शुरुआत मध्य मुंबई की तंग गलियों - पाकमोडिया स्ट्रीट, टेमकर स्ट्रीट और बोरी मोहल्ला आदि में हुई थी और यह आज भी इसके प्रमुख संचालन का केंद्र

बना हुआ है।

डी-कंपनी दाऊद इब्राहिम का करोड़ों का अंडरवर्ल्ड साम्राज्य है जो उपमहाद्वीप में फैला हुआ है और इसमें खुफिया एजेंसी के साथ उसकी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मित्रता शामिल है। डी-कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को केवल 'भाई' कहा जाता है।

उनके छोटे भाई नूरा, अनीस और मुस्तकिन कंपनी के संचालन में उनके प्रमुख सहयोगियों में से हैं।

डी-कंपनी की कहानी भारत की वाणिज्यिक राजधानी और बाद में दुबई और पाकिस्तान की पृष्ठभूमि में सीईओ के जीवन की कहानी से अनिवार्य रूप से और अटूट रूप से जुड़ी हुई है।

पुलिस के एक भाड़े के पंच (प्रत्यक्षदर्शी) के रूप में उनका उस 'दूसरी दुनिया' से पहला सामना हुआ, जो बाद में उनकी अपनी दुनिया बन गई।

डी-कंपनी के विकास के साथ-साथ जाली नोटों, मादक पदार्थों की तस्करी, जबरन वसूली रैकेट, बॉलीवुड वित्तपोषण, हवाला बाजार और सोने की तस्करी में भी वृद्धि देखी गई, क्योंकि राजस्व का कुछ हिस्सा दुबई और पाकिस्तान ले जाया जाता था।

छोटा राजन अब डी-कंपनी का सबसे बड़ा दुश्मन है। जिस व्यक्ति को उन्होंने मुंबई संचालन के लिए प्रशिक्षित किया और उस पर भरोसा किया था, वह 1993 में अलग हो गया और अपना खुद का व्यवसाय शुरू कर दिया। अबू सलेम, अली बुदेश और एजाज पठान जैसे अन्य लोग भी थे।

डब्बावालों

किसी अंडरवर्ल्ड डॉन के दिल तक पहुँचने का रास्ता उसके पेट से होकर ही जाता है। ऐसा लगता है, क्योंकि बड़ी संख्या में टिफिन वाले खाना पहुँचाकर अंडरवर्ल्ड में अपनी पैठ बना रहे हैं और अब कॉन्ट्रैक्ट किलर बनने की राह पर अग्रसर हैं। मुंबई पुलिस अधिकारियों का कहना है कि इसका एक कारण यह है कि टिफिन पहुँचाने वाला व्यक्ति जेल में बंद गैंगस्टर और जेल की सलाखों के बाहर की दुनिया के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करता है।

इस घटनाक्रम की शुरुआत शूटर दीपक गडवाल उर्फ मंगई से हुई, जो कुख्यात गैंगस्टर साइमन के यहाँ डब्बावाला के रूप में काम करता था, बाद में उसे शूटर के पद पर पदोन्नत किया गया। जल्द ही, गैंगस्टर छोटा शकील ने उसकी उंगली का इस्तेमाल शूटर के तौर पर करना शुरू कर दिया।

80 से अधिक मामलों में नामजद मोहम्मद शेख मोहम्मद रफीक डब्बावाला (37) बॉलीवुड निर्माता-निर्देशक राकेश रोशन पर हुए सनसनीखेज जानलेवा हमले के पीछे है।

एक और ज्वलंत उदाहरण पूर्व माफिया डॉन अरुण गावली के लेफ्टिनेंट रविंद्र मुगल पांडे उर्फ मेजर पांडे का है, जो एक डब्बावाले से गिरोह के प्रमुख निशानेबाजों में से एक बन गया। 1992 में वैभव कथारे की हत्या में नामजद पांडे गिरोह के प्रमुख योजनाकारों में से एक बन गया। उसे टीएडीए के प्रावधानों के तहत हिरासत में लिया गया है।

मारे गए गैंगस्टर रवींद्र सावंत ने गावली गिरोह में डब्बावाला के रूप में काम शुरू किया था, जिसके बाद उसे गावली के प्रमुख सहयोगी सदा पावले उर्फ मामा ने प्रशिक्षित किया था। एक वकील का वेश बनाकर सावंत ने 18 अप्रैल 1994 को अश्विन नायक पर गोली चलाई, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया।

अश्विन नाइक का मुख्य शूटर धनसिंह विश्वकर्मा उर्फ लाली, जिसका नाम भांडुप स्थित होटल व्यवसायियों, कुरुप बंधुओं सहित एक दर्जन से अधिक हत्याओं में आया है, की जड़ें डब्बावाला से जुड़ी हैं। गवली के सहयोगी राजू फिलिप्स उर्फ गायकवाड़, नंदू फाइटर और छोटा शकील गैंगस्टर यूसुफ डब्बा सभी टिफिन के वाहक के रूप में शुरू हुए।

इसके कारण स्पष्ट हैं। डब्बावालों को अक्सर उनके सरगना टिफिन कैरियर के एल्युमिनियम कवर के बीच महत्वपूर्ण जानकारी, पैसे और मोबाइल फोन पहुंचाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। इस दौरान जुटाई गई संवेदनशील जानकारी अक्सर गिरोह में उनकी पहचान स्थापित करने में सहायक होती है।

डैडी (अरुण गुलाब गावली)

अरुण गावली उर्फ डैडी ने अपनी खौफनाक छवि से लगभग छुटकारा पा लिया और खुद को एक नेक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में स्थापित किया। उन्होंने 1996 में दगड़ी चॉल की राजनीतिक शाखा, अखिल भारतीय सेना (एबीएस) की स्थापना की।

1998 में गाव्लि की गिरफ्तारी के बाद पार्टी का भविष्य अंधकारमय हो गया था। लेकिन डॉन से राजनेता बने गाव्लि को एबीएस एक राजनीतिक दल के रूप में विकसित होते दिख रहा है और वह इसे पुनर्जीवित करने की कोशिश कर रहे हैं।

महाराष्ट्र के मध्य मुंबई स्थित एक निर्वाचन क्षेत्र से विधायक चुने जाने के बाद गावळी के राजनीतिक करियर को एक बड़ा बढ़ावा मिला।

गावली का नाम इससे पहले हत्याओं सहित एक दर्जन से अधिक गंभीर अपराधों में दर्ज था। उन्हें लगभग सभी मामलों में बरी कर दिया गया है।

दगड़ी चॉल के पूर्व प्रमुख का कहना है कि पुलिस ने उन्हें फंसाया है। वह इस बात से इनकार नहीं करते कि उन्हें प्रतिद्वंद्वी दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों से अभी भी खतरा है।

जब उन्होंने अपने आस-पास रहने वाले लोगों की सेवा करने की इच्छा व्यक्त की, तो उन्हें 'डैडी' नाम से पुकारने लगे। उनकी पत्नी जुबेदा मुजफ्फर उर्फ आशा गावली जल्द ही 'मम्मी' के नाम से जानी जाने लगीं।

गावली की महत्वाकांक्षाएं अब भी बुलंद हैं। वह सामाजिक रूप से खुद को बदलने के लिए बेताब है।

पापा-मम्मी

अरुण गावली को 'डैडी' के नाम से जाना जाता है क्योंकि वे अपने पहनावे में एक पिता तुल्य व्यक्ति की तरह दिखते हैं। उनके साथी अक्सर उनकी पत्नी जुबेदा मुजफ्फर उर्फ आशा को 'मम्मी' कहकर बुलाते हैं।

दगड़ी चॉल

18 अगस्त, 1997। दोपहर लगभग 2:30 बजे, नरीमन प्वाइंट में एक व्यस्त सड़क पर स्थित शांति स्टार बिल्डर्स के कार्यालय के बाहर एक मारुति 1000 आकर रुकी। यह कार्यालय तुलसीयानी चैंबर्स में था और सड़क के अंत में एक बंद गली में जाकर समाप्त होता था। दोपहर के भोजन का समय था और इस व्यावसायिक क्षेत्र के कार्यालय जाने वाले लोग सड़क किनारे लगे कई स्टॉलों पर जल्दी से कुछ खाने के लिए बाहर निकल आए थे। जींस और शर्ट पहने तीन आदमी बिल्डर नटवरलाल देसाई के

पास पहुँचे, जो अभी-अभी अपनी सफेद मारुति 1000 से उतर रहे थे। पलक झपकते ही गोलियों की बौछार होने लगी और बिल्डर खून के तालाब में गिर पड़े।

दिनदहाड़े हुई इस जघन्य हत्या ने मुंबई पुलिस की विश्वसनीयता को पूरी तरह से धूमिल कर दिया था। पूर्व सेना अधिकारी और संयुक्त पुलिस आयुक्त आर एस शर्मा मीडिया के सवालों के लिए तैयार हो गए। "सर, कोई सफलता मिली?" शर्मा ने जवाब दिया: "अभी तक नहीं। लेकिन शक की सुई अरुण गावली गिरोह की ओर इशारा कर रही है। हमारे पास कुछ अहम जानकारी जरूर है।"

शायद शर्मा के मन में कोई तरकीब थी। पुलिस ने दागड़ी चॉल में स्थित उस किलेनुमा इमारत को घेर लिया था, जो वर्षों से उस गैंगस्टर का ठिकाना मानी जाती थी। लेकिन दागड़ी चॉल आसान नहीं थी। गुप्त तहखानों और अंधेरी, तंग गलियों वाली यह इमारत हॉगार्ट के महल को भी मात दे सकती थी और हैरी पॉटर को भी कड़ी टक्कर दे सकती थी।

"जब भी पुलिस दगड़ी चॉल पर छापा मारती थी, गावळी अपने तीसरे तल के आवास से एक गुप्त गुफा के रास्ते दूसरे तल पर निकल जाता था। रसोई में गुप्त तहखाने थे, जहाँ वह पुलिस दस्ते के आने पर छिप जाता था। हमें इन गुप्त ठिकानों का पता लगाने में कुछ महीने लग गए," अपराध शाखा के अनुभवी अधिकारी प्रफुल भोसले याद करते हैं।

यह किला रातोंरात नहीं बन गया। मुंबई के माफिया सरगना रामा नाइक और उसके खास साथी बाबू रेशिम ने 1970 के दशक के उत्तरार्ध से 1988 तक इसी ठिकाने से कुख्यात 'बायकुला कंपनी' का नेतृत्व किया। और सभी स्मारकों की तरह, दगड़ी भी सत्ता का प्रतीक था। ग्रेनाइट की मोटी दीवार इसकी भव्यता को और बढ़ा रही थी। इस ढांचे का निर्माण गैंगस्टरों को पुलिस छापों और प्रतिद्वंद्वी निशानेबाजों के हमलों से

बचाने के उद्देश्य से किया गया था। लेकिन फिलहाल, तनाव साफ महसूस हो रहा था और दीवारें हल्की-सी चरमरा रही थीं। गोली चलाने के लिए बेताब पुलिस उपायुक्त परमबीर सिंह अपने बड़े मौके का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। पूर्वी महाराष्ट्र के नक्सल प्रभावित भंडारा जिले में कुछ समय बिताने के बाद उनका अभी-अभी मुंबई तबादला हुआ था। उन्होंने अपने डिप्टी को चिल्लाकर कहा, "मुझे दगड़ी चॉल में आने वाले हर व्यक्ति का ब्यौरा चाहिए। मैं चाहता हूं कि विशेष टीमें चॉल के अंदर तलाशी अभियान चलाएं। गावली के साथियों के बारे में हर जानकारी जुटाने की कोशिश करो।"

19 अगस्त की दोपहर को भोसले, अनंत केंजले, वाई एल जाधव और अशोक खोट ने दगड़ी चॉल में धावा बोल दिया। आसपास की इमारतों की पूरी तलाशी लेने के बाद, दस्ते ने मुख्य भवन में प्रवेश किया, जहाँ गावळी छिपा हुआ था। साथ आए कांस्टेबलों में से एक के पास लोहे की रॉड थी।

गावली के पास बहुत कम विकल्प बचे थे, और वह एक असहाय बच्चे की तरह अपनी पत्नी जुबेदा मुजफ्फर उर्फ आशा गावली से लिपट गया। गिरोह के लोग आशा गावली को 'मम्मी' कहकर पुकारते थे, जो कि स्वाभाविक ही था। एक पत्रकार जो गश्त पर होता है, वह मूक दर्शक तो होता ही है, साथ ही पुलिस के लिए एक बड़ी बाधा भी होता है।

भोसले ने गाव्लि को अलग करने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। इसके बाद पुलिसकर्मी सीढ़ियों से नीचे उतरे तो देखा कि दूसरी मंजिल के दरवाजे बंद थे। उन्होंने लोहे की रॉड से दरवाजा तोड़ दिया।

विजय कांबले उर्फ मुचवा, विजय श्रीरोडकर उर्फ साडे तीन और पंकज पांडे उर्फ जीतू को गोलीबारी में मार दिया गया, जिसे euphemistically 'गोलीबारी का आदान-

प्रदान' के रूप में जाना जाता है।

दगड़ी शूटआउट

1991 में दाऊद इब्राहिम के प्रमुख निशानेबाज सुनील सावंत, अनिल परब, बाची पांडे, बाबा गैब्रियल और संजय रुग्गड़ ने दगड़ी चॉल में घुसकर एके 47 असॉल्ट राइफलों से अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। वे गैंग सरगना रामा नाइक की हत्या में शामिल आमिर लम्बू और यूसुफ लांबा की मौत का बदला लेने की कोशिश कर रहे थे।

इससे पहले, बायकुला कंपनी के निशानेबाज तान्या कोली, बंद्या आदिलकर और अप्पा राणे उर्फ कच्चा पापड़ ने अमीर-यूसुफ की जोड़ी को खत्म करने के लिए पाकमोडिया स्ट्रीट पर हमला किया था। पाकमोडिया स्ट्रीट दाऊद इब्राहिम का गढ़ माना जाता था।

दंबर (तार)

दंबर शब्द का प्रयोग अक्सर ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसका रंग सांवला हो। सांवले रंग के गैंगस्टर को 'दम्ब्रिया' भी कहा जाता है।

दाना (अनाज)

दाना का तात्पर्य जीवित गोलियों से है। यह एक अपेक्षाकृत पुराना शब्द है जिसका प्रयोग दाऊद इब्राहिम और उसके साथियों द्वारा 1980 के दशक के आरंभ में किया जाता था।

Dawood Shamsher Khan

दाऊद शमशेर खान उर्फ शफी खान को वह व्यक्ति माना जाता है जिसने दाऊद इब्राहिम को दुनिया भर में फैले उसके ड्रग कार्टेल को चलाने में मदद की।

हालांकि खान गुजरात से अपना काम करता है, लेकिन उसकी जड़ें मुंबई में हैं। उसने 1986 में डोंगरी में ड्रग तस्कर करीम लाला के निजी अंगरक्षक के रूप में काम शुरू किया था। लेकिन यह साथ ज्यादा समय तक नहीं चला - खान के अपने लिए बड़े सपने थे।

उसकी पहली हत्या स्थानीय गुंडे हामिद अजीज की थी, जिसे 1987 में दक्षिण मुंबई के फन एंड फूड बार के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसके बाद मुंबई सेंट्रल में नवजीवन सोसाइटी के पास मुन्ना नामक एक गैंगस्टर की हत्या हुई।

उसने अपना ठिकाना बदलकर गुजरात में स्थापित कर लिया, जहां उसने स्थानीय डॉन लतीफ खान और उसके छोटे भाई के साथ गठबंधन किया और अगले छह वर्षों में 30 से अधिक हत्याओं में उनका नाम सामने आया।

1999 में अहमदाबाद के पास एक मुठभेड़ में लतीफ की हत्या के बाद, खान पाकिस्तान जाने के लिए सुरक्षित मार्ग तलाशने के लिए दुबई भाग गया। हालांकि वह दाऊद इब्राहिम के करीब आ गया था, लेकिन गिरोह के कई अन्य सदस्य गिरोह में उसकी लगातार बढ़ती पदोन्नति से नाराज थे।

क्राइम ब्रांच के एक अधिकारी के अनुसार, डेविड परदेसी की हत्या करने के बाद खान अब दाऊद के सबसे भरोसेमंद लेफ्टिनेंटों में से एक है, क्योंकि उसने और अब्दुल वहाब ने मिलकर उसकी हत्या कर दी थी।

दाऊद ने करोड़ों कमाए

अंदरूनी सूत्रों ने बताया कि दाऊद इब्राहिम किसी बिल्डर या व्यवसायी को उसके प्रोजेक्ट की जानकारी मिलते ही फोन करता था। धूर्त गैंगस्टर फिर पुलिसकर्मियों और राजनेताओं से अपने संपर्कों का बखान करता था। इसके बाद वह अप्रत्यक्ष रूप से धमकी देता था कि अगर उसने दाऊद इब्राहिम को साझेदार नहीं बनाया तो उसे क्या नुकसान उठाना पड़ेगा।

"ज्यादातर मामलों में 30 प्रतिशत साझेदारी सद्भावना के रूप में पेश की गई थी," एक अंदरूनी सूत्र ने बताया।

कुछ ही समय बाद पीड़ित को एक और फोन आया जिसमें कहा गया कि साझेदारी की रकम तुरंत चुकाई जाए। परियोजना शुरू होने से पहले ही एक सहयोगी को रकम इकट्ठा करने के लिए भेज दिया गया।

यह रकम कई करोड़ में हो सकती है, दाऊद इब्राहिम को साझेदार बनाने के लिए यह बहुत बड़ी कीमत है। कुछ मामलों में, पैसा मिलने के बाद व्यवसायी की हत्या कर दी जाती थी और परियोजना को किसी 'व्हाइट कॉलर' गिरोह ने अपने हाथ में ले लिया।

दिल्ली (दुबई)

दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्य दुबई को दिल्ली के नाम से भी जानते हैं। इस नाम का इस्तेमाल प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टरों को भ्रमित करने और पुलिस के जाल से बचने के लिए किया जाता है।

Desh Bhakti

छोटा राजन गिरोह के सदस्य, अपने गुरु छोटा राजन की तरह, अक्सर राष्ट्र के प्रति अपनी महान सेवाओं का बखान करते हैं। उनमें से अधिकांश का दावा है कि उनका इस्तेमाल भारतीय केंद्रीय खुफिया एजेंसियों द्वारा किया जा रहा था।

प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर तथाकथित देशभक्ति का विरोध करते हुए जेल में कुछ अतिरिक्त सुख-सुविधाओं की मांग करते हैं। या मुठभेड़ों में मारे जाने से बचने की कोशिश करते हैं।

लेकिन इन बयानों के पीछे पूरी तरह से निराधार कारण नहीं हो सकते। राजन के पूर्व सहयोगी विक्की मल्होत्रा और फरीद तनाशा नई दिल्ली, पश्चिम बंगाल और नेपाल में सक्रिय थे और मुंबई पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए जाने और आर्थर रोड जेल में बंद किए जाने से पहले उन्हें सरकारी एजेंसियों द्वारा कुछ कार्य सौंपे गए थे।

Dhoka

सरगना करीम लाला की गुप्त गतिविधियों पर सैयद बटला और दाऊद इब्राहिम के बीच आंतरिक गिरोहीय प्रतिद्वंद्विता का भी गहरा असर पड़ा। अंततः, सरगना करीम लाला और उनके मित्र हैदरभाई ने दोनों गुटों के बीच सुलह कराने के लिए मध्यस्थता की।

दाऊद के पिता इब्राहिम कास्कर भी वार्ता में शामिल थे। यह बैठक 1983 के अंत में सिद्दी मोहल्ला की छत पर हुई थी। दोनों गिरोहों के सदस्यों ने पवित्र ग्रंथ पर शपथ ली कि वे एक-दूसरे से नहीं लड़ेंगे।

कुछ देर बाद गुस्से में बाल्टा छत से चला गया, लेकिन दाऊद और उसके भाई बस मुस्कुराते रहे।

बैठक के बाद, बटला अपनी निजी सुरक्षा को लेकर लापरवाह हो गया। दाऊद अभी भी अपने पूर्व शत्रु से सावधान था और उसकी गतिविधियों पर नजर रखता था।

समझौते के दो दिन बाद ही बाल्टा ने मोहम्मद अली रोड की बैरियर पार करके पीरखान स्ट्रीट पर रहने वाली अपनी बहन बानू अप्पा से मिलने का फैसला किया।

जल्द ही दाऊद को अपने दुश्मन के बारे में सूचना मिल गई। उसने अपने आदमियों को इकट्ठा किया और अपने पुराने दुश्मन पर हमला करने की योजना बनाई।

बटला अभी अपनी बहन के तंग कमरे में दाखिल ही हुआ था कि दोपहर के खाने से पहले नहाने लगा, तभी दाऊद और उसके आदमियों ने उस पर हमला कर दिया। आँखों में साबुन लगा होने के कारण, तगड़े शरीर वाला बटला खुद का बचाव करने की हालत में नहीं था। दाऊद और उसके आदमियों ने उसे चाकुओं और तलवारों से बार-बार वार किए और फिर मौके से फरार हो गए। बटला खुशकिस्मत था कि उसकी कुछ उंगलियां कट गईं।

इस हमले ने डोंगरी में गैंगवार को लगभग समाप्त कर दिया। बाटला जीवन भर के लिए अपाहिज हो गया और अक्सर अपनी बची हुई दो उंगलियों से इशारा करता था कि दाऊद को मारने के लिए वे काफी हैं। 2001 में मुंबई की सड़कों पर उसकी दर्दनाक मौत हो गई।

दाऊद के लिए अब मैदान बिल्कुल साफ हो गया था। एक और प्रतिद्वंद्वी बाहर हो गया और जल्द ही उसका सामना करीम लाला से हुआ, वही व्यक्ति जिसने बटला के साथ समझौता करवाया था।

शिकार

धूर एक ऐसा शिकार होता है जो अंततः जेल में गैंगस्टरों को सुरक्षा राशि के रूप में भारी रकम चुकाता है। व्यावसायिक अपराधों या 'सफेदपोश' अपराधों से जुड़े व्यक्ति को गिरोह आसान निशाना मानते हैं।

जेल में बंद गैंगस्टरों का सबसे लोकप्रिय शगल अखबारों की खबरें पढ़ना और अपराध में नवीनतम रुझानों पर चर्चा करना है।

गिरोह के सरगना आर्थिक रूप से संपन्न संभावित शिकार पर नज़र रखते हैं। गिरोह को जल्द ही इस बात का अंदाज़ा हो जाता है कि आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेजे जाने में कितना समय लगेगा। जेल में मौजूद सूत्रों से गिरोह को आरोपी की आर्थिक स्थिति के बारे में और अधिक जानकारी मिलती है।

उस पर दबाव डालकर उससे जेल में उसकी सुरक्षा के लिए पैसे वसूलने की कोशिश की जाती है।

उसके हाथ में एक मोबाइल फोन थमा दिया जाता है और उसे अपने रिश्तेदारों को फोन करने के लिए कहा जाता है। पैसा गेट पर पहुँचा दिया जाता है और फिर बैरक के अंदर पहुँच जाता है।

ऐसे मामले भी सामने आए हैं जिनमें विचाराधीन कैदी कुछ लाख रुपये अधिक कमाकर जेल से बाहर निकले हैं। और इससे सरकारी खजाने में घाटा होने लगा है।

डायमंड गैंग

हीरा गिरोह दादर से संचालित होता था और इसे वाल्गी-पालगी गिरोह के नाम से भी जाना जाता था। इसका नेतृत्व दलीप रामजी बोरिचा कर रहे थे, जिन्होंने लगभग 1972

में पूर्व नेता सीताराम दादा से कमान संभाली थी। जल्द ही सब्जी विक्रेता और स्थानीय व्यापारी गुंडों को रिश्वत देने लगे।

दादर, प्रभादेवी, लालबाग और गिरगाँव के आसपास कई जुआघर थे जो गिरोहों के लिए आसान लक्ष्य थे।

छोटे व्यापारी अमर मारुति नाइक उर्फ अमर बागवाला के वाल्गी गिरोह में शामिल होने के बाद, वे क्लब मालिकों और मटका संचालकों के साथ और अधिक आक्रामक हो गए।

By 1995, the gang was reinforced with members like Ramesh Bhogle, Harishchandra Mochi, Ashok Darekar and Dilip Prabhu.

चंद्रकांत खोपड़े उर्फ बेबी के नेतृत्व वाले प्रतिद्वंद्वी गोल्डन गैंग ने दिलीप प्रभु की हत्या करके पहला वार किया। डायमंड गैंग को प्रभादेवी के पास क्रांति नगर के कुख्यात गैंगस्टर धसरत रहाणे के शामिल होने से और मजबूती मिली।

गोल्डन गैंग ने रमेश भोगले की हत्या करके जवाबी कार्रवाई की। 1970 के दशक के अंत तक सत्ता का समीकरण अस्थिर बना रहा।

गली-मोहल्लों में होने वाली झड़पें अमर नायक के लिए वरदान साबित हुईं। खोपड़े और वल्गी के व्यस्त होने का फायदा उठाते हुए, उसने दक्षिण मुंबई में अपना नेटवर्क फैलाया और हफ्ता (समय-समय पर ली जाने वाली सुरक्षा राशि) वसूलने का अभियान शुरू कर दिया।

Diary Le Kar Ana

अंडरवर्ल्ड की भाषा में डायरी का मतलब पैसा भी होता है। इसलिए जब कोई गैंगस्टर अपने साथी से डायरी लाने को कहता है, तो इसका मतलब वास्तव में मीटिंग के लिए लूटा हुआ माल लाना हो सकता है।

दिलीप भुवा (भुवा उर्फ दिलीप कोकक)

टारगेट हंसराज शाह घाटकोपर पूर्व की एक दुकान में फोन करने के लिए मुश्किल से बैठे ही थे कि उन्हें एक परिचित आवाज सुनाई दी।

"क्या सेठ। फंस गया ना?" (अब तुम फंस गए हो?), ये शब्द कहने के कुछ ही सेकंड बाद एक गोली उसके सिर में जा लगी और उत्तरी मुंबई के कंजर मार्ग का वह व्यापारी बेजान होकर जमीन पर गिर पड़ा।

भुवा में रैटलस्नेक जैसी अचूक फुर्ती और जानलेवा प्रवृत्ति थी। गोलीबारी के दौरान वह मानो किसी जुनूनी व्यक्ति की तरह व्यवहार करता था।

बुवा और उसका साथी योगेश पराडकर इंतजार कर रहे ऑटोरिक्शा में बैठ गए, शाह के पुलिस एस्कॉर्ट को दुकान के अंदर मृत छोड़कर।

हंसराज को पकड़ने से पहले बुवा तीन महीने से अधिक समय तक उसका पीछा करता रहा। हत्या से पहले, वह तीन दिनों तक एक ऑटो रिक्शा में घात लगाकर बैठा रहा।

मूल रूप से कंजर मार्ग के रहने वाले भुवा ने अपने पूर्व गुरु अशोक जोशी से नाता तोड़कर दाऊद इब्राहिम गिरोह से हाथ मिला लिया। छोटा राजन उस समय दाऊद का भरोसेमंद सहयोगी था।

11 नवंबर, 1991 को लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त ए ए खान की टीम के साथ मुठभेड़ में उनकी और उनकी सहयोगी माया डोलास की मृत्यु हो गई।

दिलीप को उसके धार्मिक स्वभाव के कारण भुवा उपनाम मिला था। लगभग छह फीट लंबा दिलीप हमेशा काउबॉय हैट और एंकल बूट पहनता था, जिसमें वह अपना चाकू छुपाता था। वहीं दूसरी ओर, डोलस की लंबाई केवल पांच फीट छह इंच थी।

भुवा अपना अधिकांश समय उत्तरी मुंबई के कंजर गांव में एक मछली बाजार के पास बिताता था। वह नियमित रूप से बच्चों को चॉकलेट देता था और यह विश्वास करना मुश्किल है कि वह इतना खूंखार गैंगस्टर था।

Dimaag Me Bhukar Chad Gaya (He Is Suffering From Brain Fever)

A middle-level gangster is often heard saying 'Uska dimaag me bhukar chad gaya. Usko theek kar do". This term is used when a target refuses to pay up. 'Bhukar ko theek kar do' means pressurize the victim to pay the money.

'डीके' भाई (एक ब्रांड नाम)

डीके (दिलीप कुलकर्णी) पर जबरन वसूली के 125 से अधिक मामलों और हत्या के चार मामलों में नाम दर्ज है। दरअसल, क्राइम ब्रांच के एक अधिकारी का कहना है कि 1998 से पीड़ितों को अचानक डीके भाई के नाम से धमकियां मिलने लगीं। डर के मारे पीड़ित दगड़ी चॉल में अपनी मांगें पूरी करने पहुंचे, लेकिन उनमें से बहुत कम लोगों ने ही उस गैंगस्टर को देखा। कुलकर्णी को तब एक 'ब्रांड नाम' के रूप में

पहचान मिली जब उसके शीर्ष सहयोगी सदा पावले उर्फ मामा, गणेश भोसले उर्फ वकील और संतोष आदिलकर उर्फ बंद्या अलग-अलग पुलिस मुठभेड़ों में मारे गए। गिरोह एक ऐसे नाम की तलाश में था जो दहशत फैला सके और कुलकर्णी इस भूमिका के लिए बिल्कुल उपयुक्त था, क्योंकि वह दगड़ी चॉल के सबसे वरिष्ठ जीवित सदस्यों में से एक था।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, कुलकर्णी यह सुनकर स्तब्ध रह गए कि उनका नाम भय का पर्याय बन गया है।

दगड़ी चॉल के पास रहने वाले एक मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार से ताल्लुक रखने वाले कुलकर्णी को लगभग 1988 में आभाजी शेंटी उर्फ माली ने अपराध की दुनिया से परिचित कराया था। उन्होंने ओबेरॉय टावर्स में अटेंडेंट की नौकरी छोड़ दी और गावली गिरोह में शामिल हो गए। एक पुराने दोस्त का कहना है कि अंडरवर्ल्ड में काम शुरू करने से पहले कुलकर्णी शर्मीले और मेहनती थे। उनकी किस्मत ने उनका साथ नहीं दिया और 22 अप्रैल 2000 को एक मुठभेड़ में उनकी मौत हो गई।

'Do Bojey Ke Aadmi Hoon' (I am a petty businessman)

प्रशिक्षु के रूप में भी दाऊद इब्राहिम में कुछ रहस्यमय बात थी, उसके कार्यों में अक्सर उसकी महत्वाकांक्षाएं झलकती थीं। दाऊद 1970 के दशक के उत्तरार्ध में बोस्की वस्त्रों का बोझ सिर पर उठाकर ले जाया करता था, जिसे 'बोजा' के नाम से जाना जाता था। एक बोजा लगभग 200 मीटर का होता था और उसका काम कपड़ा बेचकर कमीशन अपने पास रखना था।

महेश डोलाकिया उस समय बोस्की का मुख्य विक्रेता था। वह ग्रांट रोड पर अलंकार सिनेमा के पास अपनी दुकान से कारोबार करता था। दाऊद और उसका बड़ा भाई

शब्बीर उसके ग्राहकों में से थे। यहीं पर डॉन शशि रसम की नज़र दाऊद पर पड़ी। उसने तुरंत डोलाकिया को चेतावनी दी कि वह इस नौजवान को अलंकार सिनेमा और खेतवाड़ी इलाके को अलग करने वाली सड़क पार न करने दे। रसम ने महेश को चेतावनी देते हुए कहा, "उसे फुटपाथ के अपने हिस्से में ही रखो। मैं शब्बीर पर भरोसा कर सकता हूँ, लेकिन दाऊद पर नहीं। वह बहुत धोखेबाज़ लगता है।" दाऊद ने जवाब दिया, "नहीं भाई। मैं दो बोस्की रोल बेचने वाला एक छोटा-मोटा व्यापारी हूँ।"

हालांकि रसम के शासनकाल के दौरान दाऊद ने कभी सड़क पार नहीं की, लेकिन महेश डोलाकिया को रसम को गंभीरता से न लेने की भारी कीमत चुकानी पड़ी - बाद में दाऊद के गुर्गों ने उसकी हत्या कर दी।

Doosre Ghar Pe Aana (Call Me On The Other Line)

यह एक ऐसा मुहावरा है जिसका इस्तेमाल गिरोहों की दुनिया में यह बताने के लिए किया जाता है कि या तो बातचीत को कोई सुन रहा है या फिर फोन लाइन टैप की जा रही है।

बस कर दो एना

Do tang le kar ana का मतलब है मोटरसाइकिल पर उस स्थान पर आना।

'दो तांग' सिद्धांत को तब महत्व मिला जब 1990 के दशक के मध्य में अंडरवर्ल्ड के हत्यारों द्वारा अपराध स्थल से भागने के लिए दोपहिया वाहनों का बेखौफ इस्तेमाल किया गया।

पुलिस ने दोपहिया वाहनों पर भाग रहे हत्यारों को रोकने के लिए सर्वव्यापी बीट मार्शल तैनात किए। मोटरसाइकिल पर सवार ये पुलिसकर्मी वास्तव में गैंगस्टरों के लिए एक निवारक साबित हुए और उन्हें अपने तरीके बदलने पर मजबूर कर दिया।

चिकित्सक

डॉक्टर एक कानून प्रवर्तन अधिकारी होता है जो अंडरवर्ल्ड के लिए काम करता है। इस शब्द का प्रयोग तब किया जाता है जब कोई गैंगस्टर अपने साथी को किसी अधिकारी से मदद लेने के लिए कहता है। 'जा डॉक्टर को मिल ले' (जाओ और डॉक्टर से मिलो) का असल मतलब है, जाओ और अधिकारी से मिलो, वह तुम्हारी मदद करेगा।

ड्रम (एक करोड़)

अंडरवर्ल्ड में 'ड्रम' का मतलब एक करोड़ रुपये होता है। क्रिकेट मैचों के दौरान सट्टेबाजी करते समय सट्टेबाज इस शब्द का इस्तेमाल करते हैं। नई दिल्ली और मुंबई के सट्टेबाज पुलिस से बचने के लिए सौदेबाजी के दौरान इस शब्द का इस्तेमाल करते थे।

दुबई हत्याकांड

तिलक नगर दशकों से आपराधिक गतिविधियों और हत्याओं का गढ़ रहा है। उत्तरी मुंबई के चेंबूर में स्थित कभी निम्न मध्यमवर्गीय क्षेत्र में दर्जनों हत्याओं की साजिश रची गई थी।

दुबई के इंडिया क्लब में दाऊद इब्राहिम के दाहिने हाथ शरद शेट्टी उर्फ बड़ा इडली की हत्या से जुड़ी साजिश कथित तौर पर तिलक नगर के पास एक छोटे से पब में रची गई थी, जो प्रतिद्वंद्वी छोटा राजन के गढ़ से थोड़ी दूरी पर स्थित है।

प्रारंभिक योजना तब तैयार की गई जब 2001 की शुरुआत में दुबई में व्यावसायिक हितों वाले एक भारतीय प्रवासी से राजन के गुर्गे ने चेंबूर में संपर्क किया। बताया जाता है कि राजन ने व्यवसायी को इंडिया क्लब की सदस्यता के लिए लगभग एक करोड़ रुपये का भुगतान किया था। इससे भावी हत्यारों को अपने कार्यक्षेत्र की गतिविधियों का बारीकी से अध्ययन करने में मदद मिलेगी।

खबरों के मुताबिक, राजन ने अपने भरोसेमंद सहयोगी बालू डोकरे को, जो नेपाल में था, इस ऑपरेशन की कमान संभालने का आदेश दिया। डोकरे के साथ मुंबई का शूटर अतुल पोतेदार भी शामिल हो गया। उनके द्वारा किराए पर लिए गए चार अन्य लोग नेपाली नागरिक अमर बहादुर बाम, मनोज कुकियन, राजपूत करनसिंह, नरसिंह और स्मिथ वासा कुलत बुनाबन थे। पुलिस के अनुसार, हत्या को अंजाम देने के लिए उन्हें 5 लाख रुपये प्रति व्यक्ति की पेशकश की गई थी।

बताया जाता है कि ये चारों लोग जनवरी के पहले सप्ताह में लाइबेरियाई कंटीन्यूअस डिस्चार्ज सर्टिफिकेट (सीडीसी) के साथ पेशेवर नाविकों के रूप में दुबई में आगंतुक वीजा पर घुसपैठ कर गए थे, जो पासपोर्ट के समकक्ष होता है।

19 जनवरी 2002 को, हत्यारों के गिरोह के तीनों सदस्यों को क्लब की सदस्यता दी गई। आम तौर पर, आगंतुक वीजा पर आने वाले लोगों को क्लब में प्रवेश नहीं दिया जाता है। कुचैन और नरसिंह को लक्ष्य पर गोली चलाने का काम सौंपा गया था। रात करीब 8:30 बजे, दोनों हमलावरों ने शेट्टी को अचानक घेर लिया और बेहद करीब से

पांच गोलियां चलाईं। बाम को भागने वाली कार चलानी थी, जो बाद में एक पार्किंग स्थल में लावारिस हालत में मिली।

दुबई पुलिस की एक विशेष टीम ने हत्यारों का पता लगा लिया और तीनों को उस समय पकड़ लिया जब वे यूएई से भागने के लिए एक जहाज पर सवार होने की योजना बना रहे थे। हत्या में इस्तेमाल किए गए हथियार बाद में कूड़ेदान से बरामद किए गए।

दूध-पाव (भोजन उपलब्ध कराने वाला व्यक्ति)

किसी गिरोह के समर्थक को कभी-कभी दुध के नाम से भी जाना जाता है।

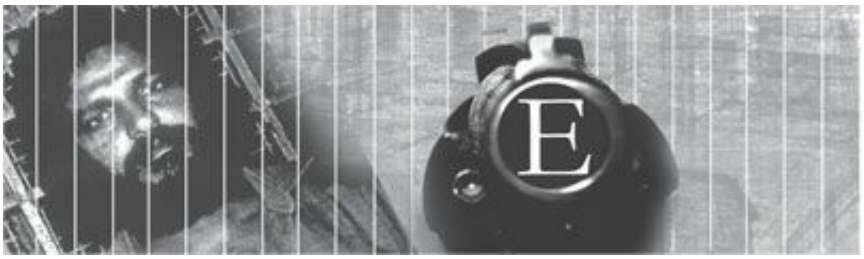

Ek Number (Car)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'एक नंबर' का मतलब कार होता है। इसकी उत्पत्ति चाइना पेटी नामक खेल से हुई है।

ग्यारह नंबर बस रूट

ग्यारह नंबर की बस रूट का असल मतलब है पैदल चलकर उस जगह से निकलना। ग्यारह दो पैरों का संक्षिप्त रूप है।

मुठभेड़ बचाओ (मुठभेड़ विशेषज्ञ की गोलियों को रोकना)

गैंगस्टर छोटा राजन का प्रमुख शूटर सतीश टैंकप्पन जोसेफ 1996 में मुंबई की आर्थर रोड जेल से जमानत पर रिहा हुआ था, जब वह खार में एक अन्य मामले में चश्मदीद गवाह मोहन शिंदे की हत्या में मुख्य संदिग्ध बन गया।

कुछ ही समय में खार पुलिस ने जोसेफ का पता लगा लिया। पूछताछ के लिए उसे पास के पुलिस स्टेशन ले जाया गया, जहां संदिग्ध को साथ ले जा रही पुलिस टीम के सदस्य उस समय दंग रह गए जब उसने अचानक एक अधिकारी की मेज से मुट्ठी भर पिनें उठाईं और उन्हें निगल लिया। उसे तुरंत इलाज के लिए पास के अस्पताल ले जाया गया।

एक आम आदमी के लिए, जोसेफ का व्यवहार कुछ असाधारण लग सकता है। लेकिन उस गैंगस्टर के लिए, पिनों ने यह सुनिश्चित कर दिया कि उसकी जान किसी मुठभेड़ में न जाए। उसे अवश्य ही आभास हो गया होगा कि पुलिस दल उसे खत्म करने की योजना बना रहा है।

यह सिर्फ गुंडों की बात नहीं है। जेबकतरे और छोटे-मोटे चोर भी मुठभेड़ में गोली लगने से बचने के लिए अक्सर खुद को चाकू से घायल कर लेते हैं या खुद को चाकू मार लेते हैं। उनका तर्क यह होता है कि उन्हें पता है कि हिरासत में लिए जाने पर घायल संदिग्धों की चिकित्सकीय जांच की जाएगी। अगर पहले से ही मौत हो चुकी है, तो पोस्टमार्टम किया जाएगा। पुलिस से मुठभेड़ से ठीक पहले लगी कोई भी पिछली चोट सवाल खड़े कर देगी।

अतिरिक्त

एक्स्ट्राज़ वे लोग होते हैं जो हत्या में मुख्य शूटर की मदद करते हैं। वे निगरानी रखने से लेकर गोलीबारी में इस्तेमाल किए गए हथियार के साथ भागने तक कई तरह के काम करते हैं। एक एक्स्ट्रा भागने वाली कार के ड्राइवर की भूमिका भी निभा सकता है।

Fast De Raha Hain

Fast de raha hain का मतलब है किसी से बचना। खासकर तब, जब कोई व्यक्ति गैंगस्टरों से बच रहा हो और उन्हें प्रोटेक्शन मनी न दे रहा हो।

फारूक बटाटावाला (मुंबई अंडरवर्ल्ड का विश्वकोश)

सीमा शुल्क निवारक अधिकारी फारूक बटाटावाला शहर के अंडरवर्ल्ड के बारे में चलता-फिरता ज्ञानकोश थे। उन्होंने क्राइम ब्रांच को दर्जनों महत्वपूर्ण सूचनाएं दीं, जिनकी बदौलत 1993 के सिलसिलेवार बम धमाकों के मामले को सुलझाने में सफलता मिली।

क्राइम ब्रांच की जांच धीमी गति से चल रही थी, तभी बटाटावाला ने मदद करने की पेशकश की। बटाटावाला के अलावा, क्राइम ब्रांच ने अन्य मुखबिरों को भी तैयार किया। हुसैन वस्तारा और शफी तूफानी ने मिलकर एक खतरनाक तिकड़ी बनाई, जो

पुलिस को मुंबई और उसके आसपास सक्रिय अंडरवर्ल्ड और तस्करी गिरोहों से जुड़ी लगभग हर जानकारी मुहैया करा सकती थी।

खबरों के मुताबिक, बटाटावाला ने डोंगरी की एक व्यस्त सड़क पर ए. खान पर करीब से गोली चलाई, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। सीमा शुल्क अधिकारी दो दिन तक फरार रहा और फिर उसने आत्मसमर्पण कर दिया। उसे ड्यूटी से निलंबित कर दिया गया है।

जेल में उनकी मुलाकात सिलसिलेवार बम धमाकों के अन्य आरोपियों से हुई; जिनमें से कई को उनकी सूचना के आधार पर गिरफ्तार किया गया था। रिहाई के बाद वे इन आरोपियों के अधिकारों के लिए अभियान चलाने लगे। अगले कुछ महीनों में बटाटावाला ने कई वरिष्ठ राजनेताओं से मुलाकात की और कुछ आरोपियों की दुर्दशा को उजागर किया। 1 मई, 1998 को राजभवन में हुई ऐसी ही एक मुलाकात के बाद, छोटा शकील के प्रमुख गुर्गे सगीर शेख और आरिफ कालिया ने बटाटावाला की हत्या कर दी। हमलावरों ने भिंडी बाजार के एक व्यस्त सड़क के कोने पर उन्हें अचानक घेर लिया।

फील्डिंग

फील्डिंग अक्सर वह शब्दजाल होता है जिसका इस्तेमाल अंडरवर्ल्ड द्वारा सार्वजनिक हत्या की योजना बनाते समय किया जाता है।

औसतन, गोलीबारी में छह से आठ लोग शामिल होते हैं। ये ऑपरेशन जटिल टीम वर्क का परिणाम होते हैं। शूटर आमतौर पर मुख्य समूह के सदस्य होते हैं जो आपस में मिलकर अच्छा काम करते हैं।

यह कार्य एक समूह नेता को सौंपा जाता है, क्योंकि प्रत्येक गिरोह में कई समूह होते हैं।

निगरानीकर्ता पदानुक्रम में सबसे निचले स्तर पर होता है। उसका काम लक्ष्य के बारे में छोटी-मोटी जानकारी इकट्ठा करना होता है, जैसे उसकी दिनचर्या, पसंदीदा घूमने की जगहें, प्रेमिकाओं के साथ संबंध और यदि कोई अदालती मामला हो तो उसकी जानकारी। कुछ मामलों में यह जानकारी दुश्मन द्वारा दी जाती है, जिसके इशारे पर हत्या की जाती है।

हत्या के बाद अक्सर तीन से चार सदस्यों की एक बैकअप टीम हमलावर की सहायता करती है। उनके कार्यों में भागने में सहायता करना, छिपने के लिए सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराना और वित्तीय सहायता प्रदान करना शामिल है।

योद्धा

अगर आपको बंदूक चलाना नहीं आता और आप सड़क पर सटीक लातों और घूंसे से ही काम चलाते हैं, तो आपको 'फाइटर' कहा जाता है। यह सिलसिला तब तक चलता है जब तक आप शूटर नहीं बन जाते, जो अंडरवर्ल्ड की सीढ़ी का अगला पड़ाव है।

अंडरवर्ल्ड की भाषा में "फाइल ले कर आना" का अर्थ है हथियार लेकर अपराध स्थल पर पहुंचना। शुरू में पुलिस को लगा कि फाइल किसी विवाद को सुलझाने से संबंधित है और इसमें महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। अपराध शाखा के जांचकर्ताओं को टेलीफोन पर हुई बातचीत को इंटरसेप्ट करने में कई सप्ताह लग गए, तब जाकर उन्हें इसका वास्तविक अर्थ समझ आया।

विश्वासघात

मिर्ज़ा भारत से नेपाल में चोरी की कारों की तस्करी करता था। इसमें से अधिकांश काम ओम प्रकाश श्रीवास्तव उर्फ बबलू श्रीवास्तव से जुड़े गिरोहों के साथ मिलकर किया जाता था, जो उत्तर प्रदेश का एक डॉन था।

पुलिस ने 16 मई, 1996 को बेग के ठिकाने से 20 किलोग्राम आरडीएक्स बरामद किया था। इससे पहले, सीमा पुलिस ने बेग की कार से सात एके 47 असॉल्ट राइफलें जब्त की थीं, जब वह नेपाल के महेंद्रगंज से भारतीय सीमा के कृष्णानगर में प्रवेश कर रहा था।

अक्टूबर 1998 में, छोटा राजन को बेग को खत्म करने का ठेका दिया गया था, कथित तौर पर भारतीय खुफिया विभाग के कुछ प्रभावशाली अधिकारियों के इशारे पर।

लेफ्टिनेंट ओ.पी. सिंह उस समय चौंक गए जब राजन उर्फ नाना ने अपने मोबाइल फोन पर यह संदेश दिया। राजन ने कहा, "पार्टी से मिल लो।"

"भाईये तो गद्दारी होगी ना? (क्या यह विश्वासघात नहीं होगा?)," सिंह ने लंबे विराम के बाद तर्क दिया।

राजन ने विपक्षी को यह विश्वास दिलाया कि इस हत्या से उसके गिरोह के सदस्य भारतीय खुफिया विभाग के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों के करीब आ सकते हैं। इसका

मतलब यह भी हो सकता है कि देश भर में गंभीर अपराधों में शामिल उसके साथियों को रियायतें मिल जाएं।

ओपी को बबलू श्रीवास्तव को यह समझाने का काम सौंपा गया था कि वह मुंबई के कुछ निशानेबाजों को नेपाल में अपने नेटवर्क का इस्तेमाल करने की अनुमति दे। विशेष रूप से, वे बेग के बारे में अंदरूनी जानकारी हासिल करना चाहते थे।

लंबे और सुगठित शरीर वाले ओपी की मुलाकात इलाहाबाद के पास नैनी जेल में बबलू श्रीवास्तव से हुई। उन्हें आश्वासन दिया गया कि 23 मार्च, 1993 को इलाहाबाद में सीमा शुल्क के अतिरिक्त कलेक्टर एल डी अरोरा की हत्या से संबंधित उनके मामले में कुछ अधिकारी नरम रुख अपनाएंगे।

बबलू की शुरुआती प्रतिक्रिया नकारात्मक थी। उन्होंने ओपी से कहा, "यह विश्वासघात के बराबर होगा।"

बबलू के लिए यह एक कठिन निर्णय था। बेग उनके गुरु थे और उन्होंने उन्हीं के मार्गदर्शन में शिक्षा प्राप्त की थी।

हालांकि, बबलू मान गया और साजिश को जल्द ही अंजाम दिया गया। उसकी भूमिका राजन के निशानेबाजों को लॉजिस्टिक सहायता प्रदान करने तक ही सीमित थी।

Gaadi (Train)

जेल के अंदर अप्राकृतिक यौन संबंध

जेलें खचाखच भरी हैं और कैदियों के पास पीठ के बल सोने के लिए भी पर्याप्त जगह नहीं है। लोग ज्यादातर करवट लेकर सोते हैं। यही वह समय है जब ज्यादातर समलैंगिक कैदी यौन संबंध बनाते हैं।

जब कैदी एक-दूसरे के करीब सोते हैं और उनमें से समलैंगिक यौन संबंध बनाते हैं, तो पूरी संरचना एक ट्रेन जैसी दिखती है, इसीलिए इसे 'गाड़ी' कहा जाता है।

Gadiyal (Clock)

अंडरवर्ल्ड में टाइम बम को 'गड़ियाल' के नाम से भी जाना जाता है। यह नाम इस तथ्य से लिया गया है कि दोनों का संबंध समय से है।

गाँव

अंडरवर्ल्ड की भाषा में गाँव का मतलब दुबई होता है। इस शब्द का इस्तेमाल पुलिस की नज़रों से बचने के लिए किया जाता है।

Gandha (Bad)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में गंधा का अर्थ पुलिसकर्मी होता है।

गांधीबापू

गंडीबापू अंडरवर्ल्ड में किए गए काम के बदले मिलने वाली रकम है। गिरोह के सरगना हमेशा यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके गुंडे को काम के लिए तय रकम का सिर्फ 40 प्रतिशत ही मिले। एक अंदरूनी सूत्र के अनुसार, ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि गुंडा सरगना पर निर्भर रहे। इससे यह भी सुनिश्चित होता है कि गुंडा गिरोह न छोड़े। गुंडा अपनी रकम मिलने का इंतजार करता है, लेकिन वह कभी नहीं मिलती। आमतौर पर, वह और भी काम करता है और रोकी गई रकम बढ़ती जाती है। अगर

गुंडा गिरफ्तार हो जाता है, तो गुंडा रकम अपने पास रख लेता है। कभी-कभी इस रकम का इस्तेमाल अदालत में गुंडे का बचाव करने के लिए वकीलों को नियुक्त करने में किया जाता है।

गरिगापत्ती (मुख्य योजनाकार)

श्यामकिशोर गरिगापत्ती उर्फ कनिया ने 2003 की शुरुआत में कल्याण जेल से भागने से पहले अपने जमानत दस्तावेजों में हेराफेरी की थी।

"कुछ ही घंटों में हैडली चेज़ की किताब पढ़ लेना और जेल की कोठरी से कुछ ही मिनटों में वैसी ही साजिश रच लेना गरिगापत्ती की खासियत थी," क्राइम ब्रांच के एक अधिकारी ने बताया।

क्राइम ब्रांच को रफीक डब्बावाला का पीछा करते समय गरिगपत्ती के शातिर तरीकों का पता चला। टिफिन बॉय अपने गुरु के इशारे पर अली बुदेश बनकर धमकी भरे फोन करता था। ये फोन घाटकोपर से किए जाते थे और खाड़ी देश के एक निजी एक्सचेंज के माध्यम से भेजे जाते थे।

गरिगापत्ती ने सूरत स्थित एक प्रमुख साड़ी निर्माता से पैसे निकालने के लिए इसी तरह की चाल का इस्तेमाल किया था।

बॉलीवुड अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी के पिता सुरेंद्र शेट्टी का नाम भी इस मामले में आया था। भारतीय राजस्व सेवा के एक सेवानिवृत्त अधिकारी के बेटे गरिगपत्ती ने अपने जीवन में कभी एक भी गोली नहीं चलाई। यह तब भी सच है, जब 1980 के दशक के मध्य में उन्हें कुख्यात गैंगस्टर सुभाष सिंह ठाकुर का बहुत करीबी माना जाता था।

इसके बावजूद, वह शहर की कुछ सबसे खूनी गोलीबारी की घटनाओं से दूर रहे। 1992 में जेजे अस्पताल में हुई गोलीबारी इसका एक ज्वलंत उदाहरण है।

घाटकोपर के एक स्थानीय कॉलेज से स्नातक गरिगापत्ती ने पड़ोसी रफीक खान से उत्पन्न खतरे को बेअसर करने के लिए ठाकुर के साथ हाथ मिलाया। रफीक खान का नाम बाद में 1993 में शहर को हिला देने वाले सिलसिलेवार बम धमाकों में सामने आया।

दुबले-पतले इस शातिर अपराधी ने दस साल से अधिक समय जेल में बिताया। क्राइम थ्रिलर और गुलाबी साड़ी या ड्रेस पहनी महिलाएं उसकी कमजोरी थीं। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उसने जेल की कोठरी से अपने मोबाइल फोन के जरिए कई महिलाओं से संपर्क बनाए रखा।

घाटला गाँव

चेम्बूर पूर्व का यह निम्न आय वर्गीय इलाका 1980 के दशक की शुरुआत में राजन नायर उर्फ बड़ा राजन और बाद में छोटा राजन का गढ़ बन गया था, खासकर साधु शेट्टी के तिलक नगर के गुंडों से हाथ मिलाने के बाद। पांड्या चव्हाण भी इसी बस्ती से भर्ती हुआ एक और गुंडा था। तंग गलियां और संकरी सड़कें गुंडों के लिए सुरक्षित पनाहगाह थीं। 1997 और 2001 के बीच दर्जनों गुंडों के खात्मे के बाद इस शांत गांव में शांति लौट आई।

घोड़ा (बंदूक ने ही उसकी पोल खोल दी)

अपनी नियमित गश्त के दौरान, एक पुलिस अधिकारी ने एक हट्टे-कट्टे युवक को मोटरसाइकिल पर अनियमित ढंग से सवारी करते देखा। उस युवक के बारे में कुछ

ऐसा था जिससे पुलिस उपायुक्त को संदेह हुआ।

अपनी सूझबूझ का इस्तेमाल करते हुए, अधिकारी ने उस व्यक्ति को रोका और उससे पूछताछ शुरू कर दी। इसके बाद उसे दादर पुलिस स्टेशन ले जाया गया। थाने में युवक ने शौच करने की अनुमति मांगी। हालांकि जांच अधिकारी को संदेह हुआ, फिर भी उसने उसे अनुमति दे दी।

अधिकारी को यह नहीं पता था कि जिस व्यक्ति से वह पूछताछ कर रहा था, वह कुख्यात गैंगस्टर संजय वसंत नेहर उर्फ संजय रुग्गड़ था; उसे यह भी जानकारी नहीं थी कि रुग्गड़ ने अपने अंडरवियर में एक आयातित पिस्तौल छिपा रखी थी। रुग्गड़ को बस अपनी बंदूक से छुटकारा पाने के लिए एक बहाने की जरूरत थी।

पिस्तौल धड़ाम से नीचे गिर गई। रुग्गड़ की उसे छिपाने की कोशिश नाकाम रही और वह रंगे हाथों पकड़ा गया। बाद में, छोटा राजन के इस साथी ने शहर में हुई चार हत्याओं में अपनी संलिप्तता स्वीकार की। तब से शहर के गैंगस्टरों ने सबक सीख लिया है।

हत्या करने से पहले या बाद में शूटर शायद ही कभी घोड़ा रखते हैं। सालों से, गिरोह के सरगना यह सुनिश्चित करते आए हैं कि उनके शूटर कभी भी हथियारों के साथ पकड़े न जाएं। यह रणनीति न केवल शूटरों को दोषी ठहराने के लिए कोई सबूत न होने देती है, बल्कि भविष्य के अभियानों के लिए महंगे हथियारों को बचाने में भी मदद करती है। गिरोह यह कैसे सुनिश्चित करते हैं? हथियार किसी अनजान दोस्त या पड़ोसी के ज़रिए पहुंचाए जाते हैं। एक अन्य दल को मुख्य शूटर से हथियार लेने का काम सौंपा जाता है। फिर तीसरा दल हथियारों को 'सुरक्षित कक्ष' में ले जाता है।

"विभिन्न रिले टीमें मिलकर काम कर रही होंगी ताकि पुलिस को घोड़े बरामद न करने में मदद मिल सके," अपराध शाखा के एक अधिकारी ने स्वीकार किया। कभी-कभी,

हत्या स्थल से कुछ ही दूरी पर स्थित एक सार्वजनिक शौचालय में घोड़ा हाथ बदल लेता है।

गिंटी (गणना)

भोर होते ही गिनती के साथ जेल की बैरकों के दरवाजे खोले जाते हैं। रात को मुख्य दरवाजा बंद करने से पहले एक और गिनती की जाती है।

'गोवा का टोनी'

एंथनी रोसारियो, जिसे गोवा में 'गोवा का टोनी' के नाम से जाना जाता था, एक रहस्यमय जीवन जीता था। आज तक, पुलिस उसके गुप्त नेटवर्क से अनजान है, जिसमें कई स्तर के संपर्क थे। उसके निजी जीवन के बारे में भी ज्यादा जानकारी नहीं है। 1970 के दशक की शुरुआत में मंगलौर के पास कारकाला स्थित अपने गांव को छोड़ने के बाद से उसके परिवार और दोस्तों को उसके गुप्त अभियानों के बारे में बहुत कम पता था। माना जाता था कि वह अकेले ही काम करता था, जो मुंबई के गुप्त जगत में एक दुर्लभ बात थी।

रोसारियो 1986 में उस समय सुर्खियों में आया, जब उसने पूर्व उप नगर आयुक्त जी.आर.आई. खैरनार पर गोली चलाई। इसके बाद कर्नाटक के कारवार जिले से विधायक वसंत अस्नोतिकर की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

यह हत्या ड्रग तस्कर दिलीप नाइक के इशारे पर की गई थी, जिसे बाद में स्थानीय पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

रोसारियो पर एक पादरी की हत्या करने और कारखाने के श्रमिकों का फिरौती के लिए अपहरण करने का आरोप है। गुजरात और गोवा में हुई कुछ हत्याओं में भी उसका नाम सामने आया था।

रोसारियो के शुरुआती रिकॉर्ड से पता चलता है कि वह वर्धराजन मुडलैर उर्फ वर्धाभाई और मारे गए गैंगस्टर रूपा नेपाली से जुड़ा हुआ था। 18 अगस्त 2003 को मुठभेड़ में उसकी मौत हो गई थी।

गोदी (डॉक) - मुंबई में अपराध की उत्पत्ति

1970 के दशक की शुरुआत में, जब भारतीय अर्थव्यवस्था पर अभी भी लाइसेंस राज का प्रभुत्व था, बॉम्बे बंदरगाह में माल यातायात अभी-अभी गति पकड़ रहा था। बंदरगाहों पर कुछ हजार श्रमिकों के लिए पर्याप्त काम नहीं था।

बंदरगाह के कर्मचारियों को इस बात की जानकारी नहीं थी कि उन दिनों तस्करों का एक गिरोह सक्रिय हो गया था। जब कर्मचारी घर लौट गए और बंदरगाह सुनसान हो गए, तो ये छोटे-मोटे तस्कर दीवार फांदकर अंदर घुस गए और छोटे-मोटे सामानों में सेंध लगाने लगे। शुरुआत में वे छोटे पार्सल लूटते थे और धीरे-धीरे उनका इरादा और भी बड़ा होता चला गया। जल्द ही वे गत्ते लूटने लगे और बाद में तो पूरे-पूरे कंटेनर लूटने लगे।

क्योंकि दीवारों पर से कूदना आलसी बदमाशों के लिए थोड़ा मुश्किल और साथ ही थोड़ा असभ्य भी था, इसलिए उन्होंने एक आसान रास्ता चुना - बंदरगाह अधिकारियों, पुलिस और सीमा शुल्क को उनकी मिलीभगत के लिए रिश्वत देना।

ऐसे ही एक समूह का नेतृत्व हाजी मस्तान और उनके भरोसेमंद सहयोगी पॉल पैट्रिक न्यूमैन ने किया, जिन्होंने बाद में अरुण गावळी के साथ हाथ मिला लिया।

दीवार के उस पार हो रही इन गतिविधियों के चलते, गोदी के आसपास मुंबई का अंडरवर्ल्ड चुपचाप पनप रहा था।

मस्तान के आदमी बंदरगाह के पास स्थित क्रिसेंट हाउस से अपना काम करते थे। उस इलाके में इमारतों का समूह चोरी के सामान को संभालने के लिए एक आदर्श स्थान बन गया था।

बंदरगाह के संचालन में माल ढुलाई में वृद्धि के साथ-साथ अपराधियों की भर्ती भी पर्याप्त मात्रा में होने लगी। छोटे-मोटे चोर और स्थानीय गुंडे जल्द ही मस्तान के गिरोह में शामिल हो गए, जिससे उन्हें गोदी के लगभग 720 हेक्टेयर क्षेत्र में लगभग खुली छूट मिल गई।

1980 के दशक की शुरुआत तक, बंदरगाह में माल ढुलाई बढ़कर प्रति वर्ष 17,000 टन से अधिक हो गई। इसके साथ ही, चोरी की घटनाएं भी बढ़ गईं और ट्रकों में भरकर तस्करी का सामान कार्नाक बंदर पुल के पार मुसाफिरखाना और पास के मनीष बाजार की फलती-फूलती दुकानों तक पहुंचाया जाने लगा।

तस्करी किए गए सामानों में मुख्य रूप से बीयर के डिब्बे, कपड़े, टेप रिकॉर्डर, सिगरेट, इत्र और स्वचालित घड़ियाँ शामिल थीं। बड़ी खेपों का पता आसानी से मुसाफिरखाना, हीरा पन्ना की कुछ दुकानों और शहर भर में सीमा शुल्क द्वारा अधिसूचित कई दुकानों से लगाया जा सकता था।

बंदरगाहों पर होने वाली गुप्त गतिविधियों से पनप रही समानांतर अर्थव्यवस्था के कारण दक्षिण मुंबई का कभी शांत रहने वाला व्यावसायिक जिला बैलाड पियर एक ऐसे क्षेत्र में बदल गया जहां होटलों का कारोबार खूब फलता-फूलता था और रात्रि जीवन जीवंत हो उठता था।

मौका भांपते हुए, उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत के एक पठान, करीम लाला ने भी इस धंधे में हाथ आजमाया। लाला शहर में अपने साथी अफगानियों के नेटवर्क का इस्तेमाल करते हुए नशीले पदार्थों के व्यापारी के रूप में अपनी किस्मत बनाना शुरू ही कर रहा था।

जल्द ही, लाला हाजीभाई के लिए एक मजबूत प्रतिद्वंद्वी के रूप में उभरा। दोनों के बीच कारोबार बंटवारे के बाद, लाला के साथ इकबाल मोहम्मद मेमन उर्फ इकबाल मिर्ची भी जुड़ गया।

उस समय मादक पदार्थों की तस्करी में बहुत पैसा था और दाऊद इब्राहिम और उसका बड़ा भाई शब्बीर, जो हाजी मस्तान से जुड़े थे, ने इसमें पैठ बनाने की कोशिश की। लेकिन लाला, अमीरजादा और आलमजेब के समर्थन से उनका प्रबल प्रतिद्वंद्वी था। दाऊद को मजबूरन रामा नायक और बाबू रेशिम के नेतृत्व वाली 'बायकुला कंपनी' से मदद लेनी पड़ी।

धारावी का रहने वाला तमिल डॉन वरदराजन मुदलियार उर्फ वर्धाभाई और उसके गुर्गे भी बंदरगाहों से होने वाले मुनाफे में हिस्सा पाने के लिए अपनी ताकत का प्रदर्शन कर रहे थे। मुंबई के पहले सशस्त्र डकैतों में से एक मनोहर सर्वे उर्फ मान्या सर्वे इस होड़ में थोड़ा देर से शामिल हुआ।

वरहाभाई को पता था कि वह करीम लाला और हाजीभाई जैसे धुरंधरों से मिल रही चुनौती का सामना नहीं कर सकता, इसलिए उसने तिलक नगर के राजन नायर उर्फ बड़ा राजन की मदद ली ताकि वह अपने इलाकों की रक्षा कर सके और लाला व हाजीभाई जैसे प्रतिद्वंद्वियों से मिल रही चुनौतियों का सामना कर सके। समद खान के शामिल होने से पठान गिरोह और भी मजबूत हो गया और रेशम को बंदरगाहों का सरगना बना दिया गया।

1980 के दशक के मध्य तक, तस्करों को सेवरी-वडाला, वर्ली, माहिम और विक्रोली के दलदली इलाकों में सुरक्षित ठिकाने मिल गए थे। कुछ प्रतिबंधित सामान छोटी नावों में लादकर वर्सोवा, गोराई और यहां तक कि रत्नागिरी जैसे दूरदराज के घाटों तक तस्करी करके पहुंचाया जाता था।

कुछ तस्करों ने तो चालाकी भरे तरीके भी अपना लिए थे, वे अपने वाहनों में छेद बना लेते थे और सुरक्षा के लिए स्थानीय गिरोहों को काम पर रख लेते थे। छोटा राजन और अमर नायक जैसे नए लोग 80 के दशक में इस धंधे में अपना हिस्सा पाने के लिए संघर्ष करने लगे। लेकिन धीरे-धीरे सारा धंधा गोदी से हटकर दूसरे इलाकों में जा रहा था।

पुलिस के साथ मुठभेड़ में कई लोग मारे गए। गिरोहों को अभी भी बंदरगाहों से अपना हिस्सा मिल रहा था।

गोल्डन गैंग

'गोल्डन गैंग' - जिसके सभी सदस्य सोने के आभूषण पहनते थे - का नेतृत्व चंद्रकांत खोपड़े उर्फ बेबी ने 1966 से 1990 के बीच किया था। वे वलगी-पालगी गिरोह या डायमंड गिरोह के कट्टर प्रतिद्वंद्वी थे।

यह गिरोह दादर, प्रभादेवी, गिरगाँव और लालबाग (मुंबई का पूर्व मिल क्षेत्र जिसे गिरंगांव के नाम से भी जाना जाता है) के आसपास के जुआ अड्डों से खूब पैसा कमाता था।

बेबी की कुछ अवैध सट्टेबाजी के अड्डों में हिस्सेदारी थी और 1970 के दशक के अंत में उनकी आय लगभग 25 लाख रुपये प्रति माह होने का अनुमान था - जो उस समय एक अभूतपूर्व राशि थी।

यह गिरोह लोअर परेल स्थित सन मिल परिसर से अपना काम करता था। मिल मालिक उन्हें औद्योगिक विवादों को सुलझाने और श्रमिक संघों पर नियोक्ताओं की शर्तों को स्वीकार करने के लिए दबाव डालने के लिए नियुक्त करते थे।

गुडमैन

अंडरवर्ल्ड की भाषा में गुडमैन का मतलब मुखबिर होता है। यह अन्य साथियों के लिए एक चेतावनी है कि वे किसी ऐसे व्यक्ति के सामने खुलकर बात न करें, जिस पर उन्हें शक हो कि वह पुलिस मुखबिर है। ज़ीरो का मतलब भी अंडरवर्ल्ड की भाषा में मुखबिर होता है। जब कोई गैंगस्टर किसी की तारीफ करते हुए उसे 'गुडमैन' कहता है, तो वह अपने अंगूठे को तर्जनी उंगली से छूकर ज़ीरो जैसा आकार बनाता है। यह एक स्पष्ट चेतावनी है कि 'चुप रहो'।

अच्छा (समलैंगिक)

गुप्तचर जगत के सदस्यों के बीच समलैंगिकता व्यापक रूप से प्रचलित है। इस व्यवहार का कारण जेल में बिताया गया उनका समय हो सकता है।

कैदियों को असुविधाजनक स्थितियों में सोना पड़ता है, जिससे वे यौन दुस्साहस के शिकार हो जाते हैं। कई कैदी भोजन जैसी छोटी-मोटी सुविधाओं और जेल से रिहाई के बाद नौकरी के आश्वासन के बदले वरिष्ठों या गिरोह के सरगनाओं के आगे झुक जाते हैं।

गुफरान फारूकी

पुलिस रिकॉर्ड से पता चलता है कि गुफरान फारूकी ने अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम और पाकिस्तान की इंटर सर्विस इंटेलिजेंस के इशारे पर भारत में 20 करोड़ रुपये के जाली नोट प्रसारित किए।

दुबई में ही उसकी मुलाकात दाऊद इब्राहिम के प्रमुख सहयोगी आफताब बटकी उर्फ सुल्तान से हुई, जो दुबई में रहता है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, बटकी आईएसआई की मिलीभगत से चलाए जा रहे नकली मुद्रा रैकेट के मुख्य खिलाड़ियों में से एक है।

Gupti

गैंगस्टर सुहास भटकर उर्फ पोत्या दादर में एक शादी में शामिल होने गया था, तभी नशे में धुत एक युवक ने खुद को इलाके का 'भाई' बता दिया। पोत्या के साथियों ने बड़ी मुश्किल से खुद को रोका और उस युवक को सबक सिखाने से खुद को रोका।

हालांकि, मामला तब और बिगड़ गया जब उस आदमी ने उस गुंडे के पास जाकर पूछा कि क्या उसने पोट्या को देखा है। जवाब नकारात्मक था।

पोत्या ने तेजी से अपने गुप्ती को कोड़े से मारा और उसकी जांघ पर वार किया। "मैं पोत्या हूँ," उसने फुसफुसाते हुए कहा और फिर वहाँ से गायब हो गया।

पोत्या को गुप्ती (सीधी तलवार) चलाने में माहिर माना जाता था, जिसका इस्तेमाल वह मुंबई के पश्चिमी उपनगरों में आतंक फैलाने के लिए करता था।

शिवाजी पार्क स्थित शारदा आश्रम स्कूल के छात्र, जहां क्रिकेटर सचिन तेलदुलकर ने पढ़ाई की थी, पोट्या अपना अधिकांश समय यादव पाटिल वाडी में अपने घर से थोड़ी दूरी पर स्थित प्रभादेवी के कीर्ति कॉलेज के पास बिताते थे।

पोत्या के अपराध जगत में प्रवेश का श्रेय पूर्व स्थानीय गुंडे जॉन मेंडोंका को दिया जाता है। सहायक पुलिस निरीक्षक राजेंद्र चव्हाण, जो उस क्षेत्र में तैनात थे, ने बताया कि साइबा तालेकर, नितिन पुसालकर और उदय तोडंकर उसके समकालीन थे।

पोत्या और उसके आदमी ज्यादातर मटका अड्डों को लूटते थे। 1980 के दशक की शुरुआत में सामाजिक क्लबों और अवैध शराब के अड्डों से मिलने वाली सुरक्षा राशि उनकी आय का दूसरा स्रोत थी।

कुछ ही समय बाद, दादर और प्रभादेवी इलाकों के व्यापारियों से हफ्ता बांटने को लेकर पोत्या और मान्या सर्वे के बीच झड़प हो गई। जल्द ही इस कुख्यात गैंगस्टर ने अपना ठिकाना विले पार्ले के पास खोतवाड़ी में बदल लिया, जहां सब इंस्पेक्टर ई. अमोलिक के हाथों मुठभेड़ में उसकी मौत हो गई।

अतिथिगृह (कुछ लोगों के लिए; बहुतों के लिए जेल)

मुंबई की आर्थर रोड जेल, छोटा राजन गिरोह के सदस्यों के बीच 'गेस्ट हाउस' के नाम से मशहूर है। कई प्रभावशाली कैदी जेल में आलीशान जिंदगी जीते हैं।

कैदियों तक मोबाइल फोन की तस्करी करते हुए गार्डों का पकड़ा जाना कोई असामान्य बात नहीं है। 10,000 रुपये से अधिक की रिश्वत लेकर मोबाइल फोन की तस्करी की जाती है।

कई बार गैंगस्टरों के पास दर्जनों सिम कार्ड वाले दो फोन होते हैं; एक प्रेमिका और परिवार के लिए, दूसरा सहयोगियों से बात करने के लिए।

Haath (Arm)

'एक हाथ' का अर्थ है 1,000 रुपये। इस शब्द का प्रयोग उन लोगों को गुमराह करने के लिए किया जाता है जो गिरोहों से संबंधित नहीं हैं और उनकी भाषा नहीं समझते हैं।

Haath Pe Aa Ja (Call Me On My Mobile Phone)

अगर किसी गैंगस्टर को शक होता है कि लैंडलाइन फोन टैप किया जा रहा है, तो वह अपने साथी को अपने मोबाइल फोन या किसी दूसरे नंबर पर कॉल करने के लिए कहता है। यह एक तरह की चेतावनी भी होती है कि दोबारा उसी नंबर पर कॉल न करें।

आप LIMIT

हड्डी या हड्डी एक ऐसा शब्द है जो दुबले-पतले गैंगस्टरों के पहले नाम के साथ जुड़ जाता है। सलीम हड्डी और पॉलोस हड्डी इसके उदाहरण हैं।

Harish Jatan

एक बार छोटा राजन ने भायंदर में प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर छोटा शकील के ठिकाने पर धावा बोलने के लिए हरीश जतन को काम पर रखा था। जतन और उसके आदमियों ने

पुलिस अधिकारियों का वेश धारण करके ठिकाने में घुसपैठ की। वह कानून का अच्छा जानकार था और जेल में रहने के दौरान अक्सर साथी कैदियों को सलाह देता था।

हवाला (समानांतर धन प्रेषण)

हिंदी में 'हवाला' का अर्थ है सौंपना। यह सीमाओं के पार धन हस्तांतरण का एक अवैध और अनौपचारिक तरीका है। इसके द्वारा दुनिया में कहीं भी घंटों के भीतर बिना किसी लेन-देन के रिकॉर्ड के पैसा पहुंचाया जा सकता है। इसकी शुरुआत दुबई में काम करने वाले भारतीय श्रमिकों के बीच एक लोकप्रिय माध्यम के रूप में हुई थी और बाद में दाऊद इब्राहिम और अन्य गैंगस्टरों ने इसका इस्तेमाल देश से बाहर और वापस धन भेजने के लिए किया। विशेष रूप से, दुनिया भर में बड़े ड्रग सौदों से प्राप्त धन। इसकी सफलता का श्रेय इसकी तेज़, सस्ती और विश्वसनीय सेवा को दिया जाता है।

अमेरिकी डॉलर को कम प्रीमियम पर खरीदना और उसे विदेश में जरूरतमंद व्यक्ति को काफी अधिक कीमत पर बेचना ऑपरेटरों के लिए लाभप्रद होता है।

मुंबई स्थित क्राइम ब्रांच के सूत्रों के अनुसार, दुबई में सक्रिय कुछ बड़े गिरोह संचालकों की पहचान सौकर मोहिदीन, अब्दुल्ला उर्फ कासरगोद और शमशिद्दीन के रूप में हुई है।

सिर पर गोली

समद खान और हामिद-मजीद के भाई के बीच की लड़ाई तब खतरनाक रूप ले लेती है जब वह अपने पूर्व कर्मचारी मुन्ना ठाकुर को मजीद की हत्या करने के लिए काम पर रखता है।

डोंगरी में नवरोजी लेन नंबर 1 स्थित बुच्चुवाला बिल्डिंग के बाहर माजिद की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

हामिद ने अग्रिपाड़ा के पास सांकली स्ट्रीट पर समद के दोस्त सोहेल पर हमला कर दिया। यह हमला उसने अपने छोटे भाई माजिद की मौत का बदला लेने के लिए किया था।

जब दाऊद शमशेर और मुन्ना ठाकुर ने पीछे से आकर हामिद पर हमला किया तो वह खुद भी हैरान रह गया। सिर में लगी गोली खोपड़ी को भेदते हुए उसके माथे से बाहर निकल आई और फट गई।

दोनों हमलावरों ने हामिद के शरीर पर करीब से 11 और गोलियां दागीं। वह फन-एन-फूड बार में था और प्रवेश द्वार की ओर मुंह न करने की गलती कर बैठा था।

हामिद की हत्या के बाद दाऊद शमशेर को खुली छूट मिल गई। उसने मादक पदार्थों का धंधा शुरू किया और डोंगरी के पाला गली स्थित अपने तिजोरीनुमा कमरे से अपना संचालन किया।

Hemant Pujari

हेमंत पुजारी छोटा राजन गिरोह का पूर्व सदस्य है और मुंबई के अंडरवर्ल्ड में अपनी अलग पहचान बनाने के लिए संघर्ष कर रहे कुछ गिने-चुने गैंगस्टरों में से एक है। खार (पूर्व) के जवाहर नगर का निवासी पुजारी ने 1980 के दशक के मध्य में कालिया एंथोनी के लिए काम करना शुरू किया था। कई छोटे-मोटे अपराधों के बाद वह एंथोनी जोआचिम उर्फ अड्डू की हत्या में शामिल हो गया। जेल में रहने के दौरान उसकी मुलाकात ओ पी सिंह से हुई, जिसने उसे छोटा राजन गिरोह में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। इसके तुरंत बाद उसने कई हत्याएं कीं, जिनमें बांद्रा पश्चिम में एम के

बिल्डर्स के एम. खान की हत्या भी शामिल है। छोटा राजन से अलग होने से पहले पुजारी ने कुंदन सिंह रावत और एजाज लकड़ावाला के साथ मिलकर एक खतरनाक गिरोह बनाया था। पुजारी ने खार के एक बार में छोटे-मोटे वेटर के रूप में काम शुरू किया था और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उसके कुछ समर्थक होटल व्यवसायी हैं। खुफिया रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि उसने छोटा शकील के साथ हाथ मिला लिया था। उसका नाम आधा दर्जन से अधिक हत्याओं में दर्ज है।

घरेलू मैदान

कल्याण थाने में अरुण गावली के प्रमुख शूटर तान्या कोली की गोली मारकर हत्या करने के बाद गैंगस्टर अमर नायक 'बायकुला कंपनी' की हिट लिस्ट में सबसे ऊपर आ गया। कोली को अमरावती जेल ले जाया जा रहा था।

चूंकि अमर गावळी और उसके आदमियों के लिए पकड़ से बाहर साबित हो रहा था, इसलिए प्रतिद्वंद्वी बायकुला कंपनी ने उसके छोटे भाई अश्विन को निशाना बनाने का फैसला किया। अश्विन पर आतंकवादी और विघटनकारी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम, 1987 के तहत मुकदमा चल रहा था।

उसे निशाना बनाने के लिए 'घरेलू मैदान' या अदालत कक्ष से बेहतर कोई जगह नहीं थी।

गावली के दूसरे सबसे बड़े अधिकारी सदा पावले उर्फ मामा को अश्विन को खत्म करने का काम सौंपा गया था। उसने रवींद्र सावंत को प्रशिक्षित किया और उसे अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए भेज दिया।

18 अप्रैल 1994 को, सावंत ने एक वकील का वेश धारण करके सत्र न्यायालय में प्रवेश किया। मुख्य शूटर की सहायता के लिए नागेश मोहिते को काम पर रखा गया

था।

सावंत की ट्रेनिंग काम आई। उन्होंने अश्विन और उसके पुलिस अंगरक्षकों को अचानक घेर लिया और करीब से गोली मारकर उसकी खोपड़ी में छेद कर दिया।

हालांकि, अश्विन हमले में बच तो गए, लेकिन इस हमले ने उन्हें जीवन भर के लिए अपंग बना दिया।

यह कोई इक्का-दुक्का मामला नहीं है, अंडरवर्ल्ड गिरोह दशकों से अदालत परिसर या 'अपने गढ़' (जैसा कि अंडरवर्ल्ड में कहा जाता है) का इस्तेमाल अपने विरोधियों को चौंकाने के लिए करते आ रहे हैं।

हयाला घ्याचा (हमें उसे अवश्य प्राप्त करना चाहिए)

यह 15 जून, 1970 का दिन था। किशोरों का एक समूह सायन में एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर स्थित एक प्राचीन मराठा चौकी के खंडहरों के बीच गुप्त रूप से मिला।

कार्य था विधायक कृष्णा देसाई को बर्खास्त करना। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के इस कार्यकर्ता का मध्य मुंबई के लालबाग और परेल के मराठी भाषी क्षेत्रों में काफी दबदबा था।

किशोर इतने भोले थे कि वे यह नहीं समझ पाए कि देसाई की हत्या का सौदा किसने किया था और उन्हें हत्या के पीछे के मकसद का जरा भी अंदाजा नहीं था। हमलावरों में से एक विश्वनाथ कटाडे ने याद करते हुए बताया कि वे 'मराठी मानुष' के अधिकारों के लिए लड़ने के लिए एक पार्टी बनाने के विचार में इतने डूबे हुए थे।

"बारिश का दिन था। मैं उस समूह के बाकी सदस्यों की तरह मुश्किल से 17 साल का था," कटाडे याद करते हैं, जिन्हें बाद में राजनीतिक और अंडरवर्ल्ड हलकों में 'बुवा' के

नाम से जाना जाने लगा। सायन किले में एक संक्षिप्त बैठक के बाद समूह तितर-बितर हो गया। उनके दुबले-पतले शरीर उनके भयावह इरादों को झुठला रहे थे।

एक घंटे बाद वे लालबाग पहुंच चुके थे। अंधेरा हो चुका था और समूह ने देसाई की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। उनके साथ कोई अंगरक्षक नहीं था।

देसाई एक भीड़भाड़ वाले व्यायामशाला में लगभग 70 सदस्यों को प्रशिक्षण देने में व्यस्त थे। कटाडे याद करते हैं कि वह खुद भी व्यायाम कर रहे थे और अपनी उम्र के हिसाब से काफी चुस्त-दुरुस्त दिखते थे।

अचानक व्यायामशाला की बत्तियाँ बुझ गईं। चारों ओर अफरा-तफरी मच गई।

हत्यारे अंधेरे का फायदा उठाकर व्यायामशाला में घुस गए और देसाई के करीब पहुँच गए। कटाडे याद करते हुए कहते हैं, "उनके विशाल शरीर के कारण लक्ष्य को पहचानना मुश्किल नहीं था।"

गिरोह ने अंधाधुंध चाकूबाजी की। चाकूओं ने पीड़ित के पेट को चीर दिया और उसकी छाती में कई घाव कर दिए।

देसाई लड़खड़ाने लगा। उसने अपने बड़े हाथों से अपने घावों को ढक लिया ताकि खून न बहे।

कुछ ही मिनटों बाद, देसाई गिर पड़े और उनके साथ ही लालबाग में स्थित कम्युनिस्टों का गढ़ भी ढह गया।

उस रात देसाई ही एकमात्र निशाना नहीं थे। समूह बाद में फिर से इकट्ठा हुआ और सेवरी में एक अन्य कम्युनिस्ट पर हमला किया।

मामले की जांच कर रहे क्राइम ब्रांच के जासूसों को हत्यारों में से एक, चंदू मास्टर का पता चला। बाद में बाकी सभी की पहचान कर ली गई।

कटाडे शिवसेना का कट्टर समर्थक था। उसने जेलर मंजर अमानी पर तब हमला कर दिया जब अमानी ने उससे पूछा कि क्या शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे उसे सख्त होना सिखा रहे हैं। अमानी पर हमला करने के बाद कटाडे ने उसे चेतावनी देते हुए कहा, "बालासाहेब बोलो (उन्हें बालासाहेब कहकर संबोधित करो)।"

शिवसेना के उम्मीदवार वामनराव महादिक जल्द ही परेल और लालबाग के मिल क्षेत्रों से राज्य विधानसभा के लिए निर्वाचित हो गए। उनकी पार्टी ने हजारों युवाओं को अपनी ओर आकर्षित किया।

भारतीय बल्ला

दाऊद इब्राहिम के आदमियों के लिए 'इंडियन बैट' का मतलब देसी रिवॉल्वर होता है। इसलिए जब कोई लेफ्टिनेंट कहता है 'इंडियन बैट भेज रहा हूं', तो इसका असल मतलब होता है किसी नौसिखिए हत्यारे के लिए सस्ता हथियार।

इकबाल नतिग

इकबाल नातिक की हत्या, जिसके कारण दाऊद इब्राहिम और अमीरजादा और आलमजेब के नेतृत्व वाले पठान गिरोह के बीच दरार पैदा हुई, ने दक्षिण मुंबई में गिरोह युद्धों की शुरुआत को चिह्नित किया।

पत्रकार के रूप में काम करने वाले नातिक ने दक्षिण मुंबई में तेल माफिया का पर्दाफाश किया था। दाऊद और उसके साथियों ने अपने मारे गए दोस्त का साथ दिया। इससे दोनों गुटों के बीच गहरी खाई पैदा हो गई।

मामूली झड़पें जल्द ही हिंसक रूप ले लीं और दाऊद के बड़े भाई शब्बीर की हत्या में तब्दील हो गईं। इसके परिणामस्वरूप दोनों गिरोहों के बीच बड़े पैमाने पर हत्याएं हुईं।

आइटम (सेक्सी युवती)

22 वर्षीय मीनाक्षी शर्मा भोपाल से मुंबई सिर्फ एक सपने के साथ आई थीं—बॉलीवुड में प्रवेश करना। वहां असफल होने पर, अंडरवर्ल्ड ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया और उन्हें अपनी खूबसूरती का फायदा उठाने का मौका दिया। शर्मा एक संपन्न परिवार से थीं और उनके पिता भोपाल में सरकारी अधिकारी थे।

पुलिस को पूछताछ के दौरान पता चला कि वह न केवल पढ़ाई में अच्छी थी, बल्कि कॉलेज के दिनों में खेलकूद और अन्य पाठ्येतर गतिविधियों में भी उत्कृष्ट थी।

शर्मा पहली बार 1995 में बबलू श्रीवास्तव के संपर्क में आईं। उनसे मिलने के दो साल के भीतर ही वह उनकी प्रेमिकाओं में से एक बन गईं और उनके कार्यों की देखरेख करने लगीं।

बबलू के गुर्गे विक्रम वाही और संजय खन्ना के साथ उसके संबंध ने उसे वह निर्मम धूर्तता और कौशल विकसित करने में मदद की, जो आज भी कुछ सबसे खूंखार अपराधियों को शर्मिंदा करने में सक्षम है।

शर्मा के कार्यक्षेत्र का विस्तार हुआ और उन्होंने दुबई और सिंगापुर की लगातार यात्राएं शुरू कर दीं।

इन्हीं यात्राओं में से एक के दौरान मीनाक्षी, गामा पहलवान के करीबी सहयोगी इरफान गोगा के करीब आ गईं। मुंबई पुलिस को एक जबरन वसूली मामले में मीनाक्षी की तलाश है।

Jai Hind

छोटा राजन गिरोह के गुंडे जब आपस में मिलते हैं तो आमतौर पर 'जय हिंद' शब्द का प्रयोग करते हैं।

29 अप्रैल 2001, छोटा राजन हत्याकांड के शूटर मोहम्मद शफी मुल्ला उर्फ बाबा के जीवन का अंतिम दिन था। भांडुप की उस सुनसान रात में पुलिस की गोलियों की बौछार से छलनी होते ही उस गैंगस्टर ने "जय हिंद" बुदबुदाया।

मुल्ला को छोटा राजन ने पाकिस्तान में अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम को पकड़ने के लिए काम पर रखा था। यह एक गुप्त मिशन था, लेकिन प्रतिद्वंद्वी को इस साजिश की भनक लग गई।

हट्टे-कट्टे और लंबी दाढ़ी वाले मुल्ला ने किसी तरह पाकिस्तानी वीजा हासिल कर लिया था और अगले दिन दुबई के रास्ते सीमा पार करने की योजना बना रहा था। लेकिन यह योजना विफल हो गई।

मुल्ला मुंबई और ठाणे जिले में हुई छह हत्याओं के सिलसिले में वांछित था।

बाबा के अंतिम संस्कार में ज्यादा लोग शामिल नहीं हुए। भव्य समारोह के लिए पर्याप्त धन नहीं था - यह मुंबई के अंडरवर्ल्ड में एक आम बात है।

सीनियर मुल्ला के छोटे भाई कासिम अमीन मुल्ला उर्फ मुन्ना ने भी अपने भाई की राह पर चलते हुए अंडरवर्ल्ड में कदम रखा था। किकबॉक्सिंग के प्रति दोनों भाइयों के जुनून ने उन्हें उनके पैतृक गांव उरण में काफी मशहूर कर दिया था। जल्द ही यही जुनून उनके पेशे में बदल गया - मुंबई का अंडरवर्ल्ड।

बाबा की मौत ने मुन्ना को गैंगस्टर के रूप में जीवन की वास्तविकताओं से रूबरू करा दिया। 2001 में जेल से रिहा होने के बाद, उन्होंने कंपनी छोड़ दी।

जेजे शूटआउट

12 सितंबर 1992 को दाऊद इब्राहिम के साथियों सुभाष सिंह ठाकुर और सुनील सावंत ने एके 47 और उजी असॉल्ट राइफलों से लैस होकर बायकुला स्थित जेजे अस्पताल के वार्ड नंबर 18 (कैदियों का वार्ड) में गोलीबारी की। दोनों ने दस मिनट में 38 गोलियां दागीं।

इस हमले में कांस्टेबल कृष्णा ठाकुर घायल हो गए और अरुण गावळी के करीबी सहयोगी शैलेश हलदंकर की मौत हो गई। उनके साथी बिपिन शेरे गंभीर रूप से घायल हो गए। गोलीबारी में हेड कांस्टेबल चिंतामन जसवर (बैज नंबर 18005) और कमलसिंह बनावत (बैज नंबर 22709) भी शहीद हो गए। पुलिस सब-इंस्पेक्टर विजय नागरे और स्टाफ नर्स चंद्रकला विंद्रे भी घायल हो गए।

Jhadu (Broom)

AK 47 और AK 56 जैसी असॉल्ट राइफलों के लिए अक्सर 'झाड़ू' शब्द का प्रयोग किया जाता है। कलाश्निकोव की तीव्र गति से फायरिंग करने की क्षमता के कारण ही इसे यह उपनाम मिला। इसे 180 डिग्री तक घुमाकर भी फायरिंग जारी रखी जा सकती है।

पुलिस के बयान के अनुसार, आतंकवाद विरोधी दस्ते ने 11 नवंबर, 1991 को अंधेरी के लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स में स्वाति बिल्डिंग की ओर जाने वाली मुख्य सड़क को घेर लिया था। उनके प्रमुख निशाने पर गैंगस्टर माया डोलास और उसका प्रमुख सहयोगी दिलीप भुवा थे।

डोलास और उसके साथियों को इस बात की जानकारी नहीं थी कि करीब 200 सशस्त्र पुलिसकर्मी तलाशी अभियान के लिए इलाके में आ चुके थे। दोपहर करीब 2 बजे गोलियों की आवाजें गूंजने लगीं।

जब दस्ते ने इमारत में घुसने की कोशिश की तो गोलियों की पहली बौछार हुई। डोलास ने अपनी .45 मैग्नम रिवॉल्वर से गोली चलाई और गोली सब-इंस्पेक्टर घरत के कंधे को भेद गई। कवि बुलेटप्रूफ जैकेट पहने होने के कारण बाल-बाल बच गया।

कवि पर हुई गोलीबारी के तुरंत बाद स्वचालित हथियारों की गोलियों की आवाज सुनाई दी। सब-इंस्पेक्टर किरण सोनाने ने बताया कि भुवा सीढ़ियों पर चढ़ते हुए अपनी झाड़ू या एके 47 लहरा रहा था।

इसके तुरंत बाद डोलास की रिवॉल्वर से गोलियों की बौछार हुई। गैंगस्टरों और पुलिस ने स्वचालित हथियारों का इस्तेमाल किया, जिसके परिणामस्वरूप गोलीबारी में सात लोग मारे गए।

जॉन पॉलोस (प्राइस/बोन)

पॉलोस ने लगभग 1995 में साकी नाका की तंग गलियों में एक छोटे-मोटे चोर के रूप में अपने आपराधिक करियर की शुरुआत की। वह जल्द ही मुंबई के अंडरवर्ल्ड में एक कुशल निशानेबाज बन गया।

वह उल्हासनगर के पार्षद गोपाल राजवानी की हत्या में शामिल प्रमुख हमलावरों में से एक था, जिनकी 1998 में एक स्थानीय अदालत के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। फारुक लाडी और अशरफ पटेल उसके अन्य लक्ष्यों में से कुछ हैं।

पॉलोस उर्फ हड्डी उर्फ अन्ना को 1996 में साकी नाका में हुई एक डकैती के सिलसिले में गिरफ्तार किए जाने के बाद लेफ्टिनेंट डी के राव द्वारा छोटा राजन गिरोह में शामिल किया गया था। उसे बालू डोकरे द्वारा हथियार दिए गए थे और उसने शूटर के रूप में काम करना शुरू कर दिया था।

दुबले-पतले पाउलोस ने अपनी दिलेरी और डोकरे के साथ घनिष्ठ संबंधों के दम पर गैंग जगत में तरक्की की। डोकरे की अनुपस्थिति में पाउलोस को आर्थर रोड जेल का 'हैंडलर' भी बनाया गया था। उस पर 2003 में जेलर ए. अवतादे पर गोली चलाने का भी आरोप है।

अगले ही साल पाउलोस छोटा राजन गिरोह से अलग हो गया और उसने लुटेरों का अपना गिरोह बना लिया। 2004 में एक मुठभेड़ में उसकी मौत हो गई।

Jukkar (Naresh Awatu)

नरेश अवतु उर्फ जुक्कर, छोटा राजन का भरोसेमंद सहयोगी था। मुठभेड़ में उसकी मौत से दाऊद इब्राहिम का साम्राज्य टूट गया। इसके परिणामस्वरूप अंडरवर्ल्ड में

गैंगवार की हत्याओं का सिलसिला शुरू हो गया।

1 फरवरी, 1991। पूर्व पुलिस अधिकारी दशरथ अवध को सूचना मिली कि अवतु भांडुप आने वाला है। बाद में, भांडुप पुलिस स्टेशन से कुछ ही दूरी पर मुठभेड़ में अवतु की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

अवतु ने अपने बड़े भाई अमर, दिवाकर चुरी और संजय रुग्गड़ के साथ मिलकर राजन का कोर ग्रुप बनाया।

यह ज्ञात था कि जिस इलाके में अवतु की हत्या हुई थी, वह शिवसेना के पार्षद खिम बहादुर थापा के 'नियंत्रित' क्षेत्र में था।

राजन, जो उस समय दाऊद का द्वितीय-कमांड था, को बताया गया कि थापा ने पुलिस को अवतु के ठिकाने के बारे में जानकारी दे दी है। उसने अवतु की मौत का बदला लेने की कसम खाई।

कुछ ही समय बाद, राजन ने अवधूत बोंडे और विलास माने के साथ गठबंधन कर लिया - ये दोनों स्थानीय गुंडे थे जिनका थापा से टकराव हो चुका था।

थापा की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जा रही थी। राजन के साथियों ने भांडुप के मंगतराम पेट्रोल पंप के पास उसे घेर लिया और उसकी हत्या कर दी।

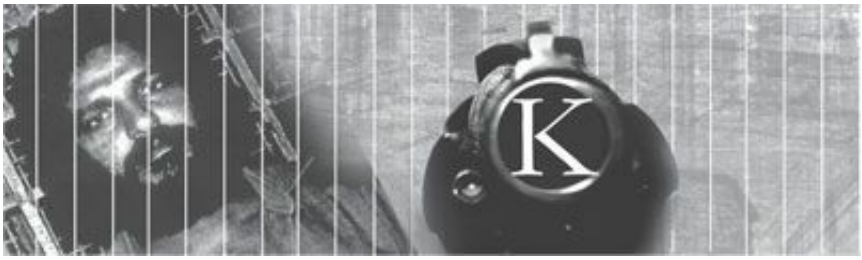

कां (जेल के अंदर की मुद्रा)

Ek kaan ka sau rupaiya, aadha kaan ka pachas rupaiya'.

जेल में, एक कान का मतलब 100 रुपये और आधा कान का मतलब 50 रुपये होता है। पांच कान का मतलब 500 रुपये होता है। ये शब्द आमतौर पर तब इस्तेमाल किए जाते हैं जब किसी नए विचाराधीन कैदी को जेल ले जाया जाता है।

काला कोट

अंडरवर्ल्ड की भाषा में काला कोट का अर्थ वकील होता है। यह शब्द अदालत में बहस करते समय वकील द्वारा पहने जाने वाले काले कोट से लिया गया है।

काली (काला)

अंडरवर्ल्ड में हशीश या चरस को 'काली' कहा जाता है। मुंबई की सड़कों पर कश्मीरी काली की कीमत लगभग 40,000 रुपये है।

कालिया एंथोनी

कालिया एंथोनी, जिनका जन्म एंथोनी वीरास्वामी जॉन के नाम से हुआ था, खार का एक गैंगस्टर था। बाद में वह दक्षिण मुंबई में प्रतिद्वंद्वी पठान गुट से जुड़ गया।

कालिया नाम इसलिए प्रचलित हो गया क्योंकि वह उसी दिन जेल से भागा था जिस दिन बॉलीवुड की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'कालिया' रिलीज़ हुई थी, जिसमें अमिताभ बच्चन ने अभिनय किया था। उसने एक छोटे-मोटे चोर के रूप में शुरुआत की थी और

सुभाष सिंह ठाकुर, बाबा गैब्रियल और बच्ची पांडे जैसे सक्षम साथियों ने उसकी मदद की थी।

24 मई, 1986 को दिनदहाड़े अदालत के बाहर एंथोनी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। अंडरवर्ल्ड को अब भी शक है कि यह हत्या दाऊद का काम था।

Kalakar (The Actor)

कलाकार मुंबई के अंडरवर्ल्ड का एक शूटर भी है। गैंगस्टर छोटा राजन के प्रमुख हत्यारे कमलेश सतम को कानून के शिकंजे में आने से पहले, मोहल्ले में किसी को भी यह शक नहीं था कि यह विनम्र युवक मुंबई के अंडरवर्ल्ड के सबसे खूंखार कॉन्ट्रैक्ट किलर में से एक हो सकता है।

सतम का तौर-तरीका देश के सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखकों की कल्पना को भी चुनौती दे सकता था। दरअसल, कमलेश के गिरोह से जुड़े होने की जानकारी उसके परिवार वालों को भी नहीं थी। अंग्रेज़ी और स्थानीय भाषाओं में समान रूप से पारंगत होने के कारण वह आसानी से एक चिकित्सा प्रतिनिधि के रूप में फिट बैठ सकता था। बंदूक का इस्तेमाल करने के बाद ही उसका एक बिलकुल अलग व्यक्तित्व सामने आया।

सतम और एक अन्य व्यक्ति, यूनुस बुटला, 2000 के अंत में पनवेल के पास चेंबूर स्थित होटल व्यवसायी विनोद शेट्टी और तीन अन्य लोगों की हत्या में मुख्य शूटर थे।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि हत्या के बाद वह बिल्कुल सामान्य व्यवहार करता था। इसके अलावा, वह कभी भी अनावश्यक रूप से बल प्रयोग करने की कोशिश नहीं करता था और न ही कभी अपने संपर्कों का बखान करता था। कभी-कभी तो वह पीड़ित से बात भी करता था।

हालांकि सतम ने 2000 में अधिकांश हत्याएं कीं, लेकिन अंडरवर्ल्ड ने इन कामों का दोष बड़े-बड़े हत्यारों पर मढ़ दिया। यह असली हत्यारे की पहचान छिपाने और पुलिस को गुमराह करने की एक चाल थी।

किसी को भी उस पर कभी शक नहीं हुआ क्योंकि वह शिक्षित था और एक सम्मानित परिवार से आता था। उसकी बहन डॉक्टर थी।

लगभग 1990 में, जब सतम का जोगेश्वरी के इस्माइल यूसुफ कॉलेज में अपनी प्रेमिका से रिश्ता टूट गया, तो उसका कॉलेज के गुंडे ओवेन डिसूजा से झगड़ा हो गया। सतम को जल्द ही अश्विन नाइक गिरोह के सदस्य सुहास नाइक से सुरक्षा मांगनी पड़ी।

हट्टे-कट्टे युवक का नाम कुछ मारपीट के मामलों में आया और उसे जेल जाना पड़ा। इन्हीं मामलों के दौरान सतम की मुलाकात छोटा राजन के भरोसेमंद सहयोगी डी. के. राव से हुई, जिन्होंने युवक में प्रतिभा देखी। उन्हें यूनुस बाटला के रूप में एक भरोसेमंद साथी मिला और बाद में उन्होंने राजन के सहयोगी बालू डोकरे के साथ हाथ मिला लिया।

सतम और बुटला 9 जुलाई, 2001 को पुलिस अधिकारियों अविनाश सावंत और भूषण बेलनेकर द्वारा की गई मुठभेड़ में मारे गए थे।

अब्दुल कुंजू को हटाओ

सांवले रंग का अब्दुल कुंजू उर्फ कालिया, राजन नायर उर्फ बड़ा राजन के तिलक नगर गिरोह का एक प्रमुख सदस्य था। राजन जेल में था और उसने दाऊद इब्राहिम से एक लाख रुपये की मांग की। दाऊद ने राजन को अमीरजादा की हत्या का ठेका दिया था और उसके लिए यह रकम चुकाना अनिवार्य था। राजन की जेल में लंबी कैद के दौरान आवश्यक कानूनी सहायता का खर्च भी उसे ही उठाना था। राजन नायर गिरोह

के एक पूर्व सहयोगी नंदू राजुलकर ने याद करते हुए बताया, "जब राजन के गुर्गे पैसे के लिए दाऊद के पास पहुंचे, तो उन्हें बताया गया कि दाऊद पहले ही अब्दुल कुंजू को रकम दे चुका है और अब और भुगतान नहीं करेगा।"

कुंजू की मुलाकात राजन से आर्थर रोड जेल में हुई एक मुलाकात के दौरान हुई, लेकिन उसने गिरोह को रकम लौटाने से इनकार कर दिया। कुंजू ने दावा किया कि उसने पैसे का इस्तेमाल कर लिया था और इसमें कुछ भी गलत नहीं था।

"कालिया को निकालो (कुंजू से छुटकारा पाओ)," गुस्से में भरे राजन ने बाद में गिरोह के अन्य सदस्यों से कहा।

लंबे, सांवले और विशालकाय कुंजू को चाकू चलाने की अपनी कुशल कला के लिए जाना जाता था, जो 1970 के दशक में एक घातक हथियार माना जाता था। एक ही दिन में तीन हत्याओं में नाम आने के बाद वह चेंबूर की शेल कॉलोनी में आतंक का पर्याय बन गया था।

कुंजू ने न केवल एक लाख रुपये चुकाने से इनकार कर दिया, बल्कि राजन की हत्या की साजिश भी रची। उसने ऑटो रिक्शा चालक चंद्रशेखर सफालिका को विक्रोली की एक दूरस्थ पहाड़ी पर हथियार चलाना सिखाया।

सफालिका ने 15 सितंबर, 1983 को एस्प्लेनेड कोर्ट के बाहर राजन को अचानक घेर लिया। राजन की हत्या उसके गुर्गे द्वारा दक्षिण मुंबई के सेशंस कोर्ट के अंदर उसके कट्टर प्रतिद्वंद्वी अमीरजादा की हत्या करने के ठीक दो सप्ताह बाद हुई।

इसी बीच, कुंजू ने घाटकोपर के फिलिप फंदारे उर्फ अन्ना और यशवंत जाधव के साथ हाथ मिला लिया। डोमनिक, दिलीप भीसे और रमेश पुजारी भी कुंजू के गिरोह में शामिल हो गए, जिससे तिलक नगर गिरोह को जान बचाने के लिए भागना पड़ा।

राजन के अधिकांश सहयोगी, जिनमें उसका शिष्य छोटा राजन भी शामिल था, कुंजू और उसके आदमियों के साथ किसी भी सीधे टकराव से बचने के लिए तिलक नगर से भाग गए।

कानपुर

कानपुर कराची के लिए एक गुप्त शब्द है। अगर कोई गैंगस्टर कहता है 'कानपुर बात हुई थी' (मैंने कानपुर में किसी से बात की), तो इसका असल मतलब होता है कि मैंने कराची में डी-कंपनी के किसी सदस्य से बात की।

Kanjaris

विक्रम परमार उर्फ मोहम्मद कंजारी और उनकी पत्नी फातिमा, वर्षों से दाऊद इब्राहिम और उसके दाहिने हाथ के आदमी छोटा शकील के प्रति वफादार बने हुए हैं।

पुलिस ने 2001 में गुजरात के कानून मंत्री अशोक भट्ट और भारतीय जनता पार्टी के विधायक भरत बरोट की हत्या की साजिश में उनका नाम लिया है।

विक्रम परमार का पालन-पोषण विजय उत्कर उर्फ विजय कंजरी के मार्गदर्शन में हुआ, जब तक कि मई 1986 में बायकुला में होटल व्यवसायी श्रीधर शेट्टी की हत्या नहीं हो गई। वे दगड़ी चॉल से कुछ ही दूरी पर स्थित बस्तियों में रहते थे और बायकुला कंपनी के रामा नाइक, बाबू रेशम और बाद में अरुण गावळी के प्रति निष्ठा रखते थे, जैसा कि उस समय इसे जाना जाता था।

हालांकि, हालात तब पलट गए जब जयंता शेट्टी ने शरद शेट्टी और अरविंद ढोलकिया की मदद से सरगना विजय कंजारी और उसके साथियों को अपने पाले में कर लिया।

रवि और किशोर कंजारी उनके साथ हो गए और विक्रम कंजारी भी इसका अपवाद नहीं था। बाद में कंजारी परिवार ने स्वचालित हथियारों और ग्रेनेडों के साथ जैकब सर्कल पुलिस लॉकअप पर हमला कर दिया और गैंगस्टर बाबू रेशिम को मार डाला। विक्रम को बायकुला के कंजरवाड़ा से भागना पड़ा और उसने टेमकर मोहल्ला के पास शकील के गढ़ में शरण ली।

शकील के धर्म प्रचार और धर्म परिवर्तन के प्रति उसके उत्साह के कारण विक्रम को जल्द ही मोहम्मद कंजरी नाम मिल गया। उसे कंजरी ही कहा जाता रहा क्योंकि वह उस जनजाति से था जो गुजरात से पलायन कर गई थी।

विक्रम को 1995 के मध्य में जेल में नजरबंद रहने के दौरान अनवर बादशाह के रूप में एक भरोसेमंद दोस्त मिला। जल्द ही, दोस्ती रिश्ते में बदल गई जब अनवर की बहन फातिमा उर्फ पारो ने 1987 में विक्रम से शादी कर ली।

इसी बीच, विक्रम ने पायधोनी के गुंडे शेख मोहम्मद हुसैन उर्फ हुसैन वस्तारा से हाथ मिला लिया था। यह गठबंधन ज्यादा समय तक नहीं चला और विक्रम जल्द ही शकील के साथ लौट आया।

विक्रम उस समय सुर्खियों में आया जब 1997 में रूपम स्टोर्स के मालिक भरत शाह की हत्या में उसका और अनवर बादशाह के छोटे भाई इस्माइल का नाम सामने आया। इसके तुरंत बाद मलाड में बिल्डर अजय मिश्रा की हत्या का मामला सामने आया।

Karigar Kitne Hain

हिंदी में कारीगर का अर्थ है कुशल कारीगर। जब कोई गैंगस्टर पूछता है 'कारीगर कितने हैं?', तो असल में वह यह जानना चाहता है कि नियोजित हमले के लिए कितने

शूटर उपलब्ध हैं।

करदार गैराज गुरु सतम उर्फ गुरु भाई आज भी परेल और उसके आसपास के इलाकों में खौफ का साया बनाए हुए है। कोई भी खुलेआम उसके बारे में बात करने की हिम्मत नहीं करता। 15 अगस्त 2003 को प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर सुरेश मांचेकर की मुठभेड़ में हुई हत्या ने उसके पक्ष में पासा पलट दिया।

इससे पहले, परेल के उस इलाके में संचालित लगभग 200 गैराजों पर मांचेकर का दबदबा था, जो कभी करदार स्टूडियो हुआ करता था।

मटका सट्टेबाजी और अवैध जुआघरों से उसे नियमित रूप से हफ्ता मिलने लगा।

सब कुछ ठीक चल रहा था, तभी सतम का सामना एक गैराज में काम करने वाले नौजवान सुरेश मांचेकर से हुआ। गैंगस्टरों को जल्द ही एहसास हो गया कि यह बेखौफ नौजवान उनके लिए एक बड़ा खतरा है और गैराज मालिकों से वसूली जाने वाली रिश्वत में बाधा बन सकता है। करदार गैराज उनकी नियमित आमदनी के मुख्य स्रोतों में से एक था। मालिक हर महीने 1000 से 1500 रुपये तक रिश्वत देते थे, जो गिरोह के खजाने के लिए अच्छी खासी रकम थी।

हालांकि, उनका साथ जल्द ही खत्म हो गया जब मानचेकर को पता चला कि सतम वास्तव में उसके साथ लूट का माल साझा नहीं कर रहा था। इसके बाद, करदार गैराज से हाफिया की वसूली को लेकर दोनों के बीच तीखी बहस छिड़ गई।

वृद्ध सतम को जल्द ही एहसास हो गया कि वह मांचेकर की हिट लिस्ट में है और दोनों ने अपना ठिकाना बदल लिया, लेकिन इससे पहले उन्होंने एक-दूसरे को जान से मारने की कसम खाई।

करीम लाला (पठान गॉडफादर)

लाला, जिन्हें पठान के नाम से जाना जाता था, 1944 की भीषण आग की घटना से कुछ समय पहले उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत से मुंबई आ सकते थे। लेकिन उन्हें भारतीय नागरिकता प्राप्त करने में लगभग 18 साल लग गए।

उस समय पठान अपने साथ नशीले पदार्थ लाने के लिए जाने जाते थे और डोंगरी में रहने वाला अफगानी झूमा खान घासवाला उस समय के सबसे बड़े खिलाड़ियों में से एक था।

लाला को मादक पदार्थों के व्यापार से घासवल्ला के बेटे फारुक ने परिचित कराया था, जो डोंगरी का ही निवासी था।

जल्द ही, उन्होंने हाजी मस्तान, यूसुफ पटेल, वर्धराज मुदलियार उर्फ वर्धाभाई और पाइधोनी के जेनाबाई खाबरी जैसे खिलाड़ियों के साथ बड़ी लीग में प्रवेश किया।

1975 में आपातकाल की घोषणा के बाद लाला पुलिस की निगरानी में आ गए थे।

बाद में, उन्होंने खुदाई खिदमतगार और पक्तूनिस्तान जिगरा-ए-हिंद नामक संगठनों का गठन किया, जिन्होंने पठानों को सहायता और रोजगार प्रदान किया।

लेकिन उनकी मुश्किलें तब शुरू हुईं जब दाऊद इब्राहिम का पठानों से टकराव हो गया। कभी दोस्त रहे ये दोनों गिरोह मोहम्मद अली रोड के दोनों ओर से अपना धंधा चलाते थे। लाला उस समय सदमे में आ गए जब उनके तेजतर्रार भतीजे समद खान को गिरोहवार में घसीटे जाने के बाद मार दिया गया।

कट्टा (देसी निर्मित रिवॉल्वर)

मुंबई में विभिन्न गिरोहों से जुड़े अधिकांश प्रशिक्षु हत्यारे 'कट्टा' का इस्तेमाल करते हैं। इसका मकसद महंगे आयातित हथियारों को पुलिस के हाथ लगने से रोकना है।

लुटेरे भी अक्सर शहर के छोटे-मोटे अवैध हथियार डीलरों से 2,500 रुपये जितनी कम कीमत में खरीदे गए देसी हथियारों का इस्तेमाल करते हैं।

काम सौंपने से पहले कॉन्ट्रैक्ट किलर को बंदूकें दी जाती हैं। काम पूरा होने के बाद इन्हें आमतौर पर वापस कर दिया जाता है। हथियार मध्य-स्तरीय आयोजकों द्वारा दिए और वापस लिए जाते हैं।

Kaum Ki Churan

अंडरवर्ल्ड में 'कौम की चूर्ण' का अर्थ धर्मनिरपेक्षता का दावा करना है। गैंगस्टरों के बीच धर्म का महत्व सबसे कम होता है। एक डॉन अक्सर अपने चेले को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता है कि वह धर्मनिरपेक्ष है और गिरोह में धर्म का कोई महत्व नहीं है।

Kauva (Crow)

''गैंगस्टरों की भाषा में कौवा का मतलब आम तौर पर मोबाइल फोन होता है। मोबाइल फोन, कौवे की तरह, शोर करता है, जिससे इस शब्द का जन्म हुआ।''

Kayum Chacha

मुंबई में 1993 के धमाकों के पीछे मुख्य आरोपी डॉ. मोहम्मद जलीस शैफुल्ला अंसारी को 2006 में दुबई से निर्वासित कर दिया गया था। अंसारी ने अबू सलेम को 9 मिमी

कैलिबर की पिस्तौल मुहैया कराई थी, जिसे बाद में बॉलीवुड अभिनेता संजय दत्त को सौंप दिया गया था। अब्दुल कयूम शेख उर्फ कयूम टेलर, दाऊद इब्राहिम गिरोह का एक प्रमुख सदस्य था। माहिम की एक छोटी सी दर्जी की दुकान से शारजाह तक का सफर कयूम चाचा के लिए लंबा रहा है, जो शहर के सबसे कुख्यात गैंगस्टरों में से एक है।

कितने की लगी? (For How Long Have You Been Remanded To Custody?)

सजा की अवधि, यानी 'कितने की लगी', कैदी के जेल के अंदर अन्य लोगों के साथ संबंधों को भी निर्धारित करती है। कम अवधि का कैदी अक्सर शिकार या दुहर बनकर रह जाता है।

Khalid Pehalwan

दुबई में खालिद पहलवान उन गिने-चुने लोगों में से एक हैं जो दाऊद इब्राहिम को उसके नाम से पुकार सकते हैं। वह डी-कंपनी में एक वरिष्ठ और सम्मानित व्यक्ति हैं, हालांकि वह स्वतंत्र रूप से काम करते हैं।

खालिद पहलवान का दाऊद इब्राहिम से संबंध 1970 के दशक के उत्तरार्ध से है, जब दाऊद इब्राहिम ने उसे काम पर रखा था। उन दिनों निजी सुरक्षा के लिए पहलवानों को काम पर रखना एक चलन था।

खालिद पहलवान भोपाल से पलायन करके डोंगरी के दबंग बस्सु महाराज के अंगरक्षक के रूप में काम करने लगा था। दाऊद ने उसे कुछ महीनों बाद काम पर रख लिया। दरअसल, जिस रात दाऊद के बड़े भाई शब्बीर की पठानों ने हत्या की थी, उसी रात खालिद पहलवान पाकमोड़िया स्ट्रीट की सुरक्षा कर रहा था। उस

विशालकाय अंगरक्षक ने पठानों द्वारा अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले वाहन को पहचान लिया और उन पर गोलियां चला दीं। देखते ही देखते, इमारत का विशाल स्टील का दरवाजा बंद हो गया, पठान गिरोह के सदस्य दाऊद को निशाना बनाने से कुछ ही सेकंड पहले।

खालिद पहलवान ने दाऊद इब्राहिम के उदय को देखा था और उसका पीछा करते हुए दुबई चला गया था। उसने अपना खुद का काम शुरू किया और मादक पदार्थों की तस्करी में उतर गया।

कहा जाता है कि दाऊद इब्राहिम के सरगना छोटा शकील को एक बार तारदेव वातानुकूलित बाजार में महमूद कालिया ने काबू कर लिया था। खालिद पहलवान का शिष्य कालिया, शकील पर हुए विवाद में उसे चाकू मारना चाहता था। महमूद कालिया अपने गुरु खालिद पहलवान उर्फ केपी के हस्तक्षेप पर मौके से फरार हो गया।

वृद्ध खालिद पहलवान अभी भी दुबई में रहते हैं। 2006 में सेशंस कोर्ट के पास हाई-प्रोफाइल मुखबिर अमजद खान की हत्या के मामले में उनका नाम संदिग्धों में शामिल था।

Kishore Gulab Gawli

अरुण गावली के भाई किशोर उर्फ पापा की हत्या 22 फरवरी, 1990 को माहिम में हुई थी।

पुलिसकर्मी बनकर, गावली के गुंडों ने किशोर के हत्यारों के बारे में जानने वाले कमाती को 'पूछताछ' के लिए उठा लिया। कमाती ने खुलासा किया कि गिरगाँव के मनोज ने प्रतिद्वंद्वी हमलावरों को सूचना दी थी।

विजय टंडेल और राजा जाधव के नेतृत्व में एक टीम मनोज को उसके मध्य मुंबई स्थित आवास से 'ले जाने' के लिए तैयार थी।

पुलिस का भगोड़ा प्रकाश जोगलेकर भी इस घटनाक्रम को प्रामाणिक बनाने के लिए दस्ते में शामिल था। दस्ता सफेद रंग की एम्बेसडर कार में मनोज के घर पर पहुंचा। चूंकि जोगलेकर के पास अभी भी पुलिस पहचान पत्र था, इसलिए वकील के बेटे मनोज को मनाना मुश्किल नहीं था।

लंबे समय तक चली पूछताछ के बाद मनोज ने सब कुछ बता दिया। अरुण गावली को एहसास हुआ कि यह अपराध सुनील सावंत, अनिल परब, अवधूत भोंडे, शिरीष परब, अशोक परब और श्रीकांत देसाई उर्फ मामा जैसे माहिर निशानेबाजों ने अंजाम दिया था - जो गावली की पहुंच से बाहर थे।

कुछ घंटों बाद मनोज तारदेव में कई गोली लगने के घावों के कारण मृत पाया गया।

कोली (असली मछुआरा नहीं)

मंगेश कोली में अपना रूप बदलने की ऐसी कला थी कि गिरगिट भी शर्मिंदा हो जाता।

कोली अक्सर अपने बाल मुंडवाकर गंजा दिखने की कोशिश करता था। कुछ ही दिनों में वह अपनी भौहों के बाल नोच लेता या अपनी मूंछें बदल लेता। कभी-कभी कोली बुर्के के पीछे छिपकर निकलता, या रिवाल्वर या चाकू लहराता, जिससे पीड़ित अचंभित रह जाता।

कोली ने अपना मेकअप बिल्कुल सही रखने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरती ताकि कोई भी ऐसी चीज न हो जिससे उसकी पहचान उजागर हो सके। पुलिस सूत्रों के

अनुसार, उसने अपनी शक्ल बदलने के लिए लिपस्टिक के सही रंग, बिंदी, महिलाओं के जूते या नेल पॉलिश जैसी छोटी से छोटी बातों का भी ध्यान रखा।

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, गंभीर अपराधों में शामिल होने से पहले कोली कोलाबा मार्केट इलाके का एक बदमाश था। बाद में उसने अंडरवर्ल्ड डॉन अश्विन नाइक के साथ हाथ मिलाया, जिसके साथ वह लूटी हुई संपत्ति का कुछ हिस्सा साझा करता था।

एक बार अप्रैल 1999 में वह एस्प्लेनेड कोर्ट में पुलिस हिरासत से भाग निकला। कुछ ही घंटों के भीतर उसने कोलाबा में एक शराब की दुकान को लूट लिया।

कोली एक क्रूर और अय्याश व्यक्ति था। पुलिस के अनुसार, वह अक्सर बंदूक की नोक पर पीड़िता के पति की मौजूदगी में उसका बलात्कार करता था, और बलात्कार से जुड़े डर और बदनामी के कारण बहुत कम महिलाएं शिकायत दर्ज कराती थीं।

अंततः 10 अक्टूबर, 1999 को सहायक पुलिस निरीक्षक रविंद्र आंग्रे के नेतृत्व वाली एक टीम द्वारा की गई मुठभेड़ में कोली मारा गया।

Khabri (Informer)

11 नवंबर, 1991 को दोपहर लगभग 1 बजे का समय था। आतंकवाद विरोधी दस्ते के प्रमुख अतिरिक्त पुलिस आयुक्त ए.ए. खान अपने कार्यालय में दाखिल हुए ही थे कि टेलीफोन की घंटी बज उठी।

कुछ देर आनाकानी करने के बाद, खबरी, जो लगभग तीस वर्ष का एक छोटा-मोटा अपराधी था, आखिरकार मुद्दे पर आया। उसे तब तक यकीन नहीं हुआ जब तक उसने फोन के दूसरी तरफ से 'खान' की आवाज नहीं सुनी।

इसका मुख्य कारण पुलिस से निपटने और गिरफ्तारी से बचने का उनका वर्षों का अनुभव था। उन्हें ठीक से पता नहीं था कि कौन सा अधिकारी किससे पैसे लेता है। उन्होंने एक नंबर डायल किया और जब उन्हें यकीन हो गया कि दूसरी तरफ खान हैं, तभी उन्होंने कहा, "साहब, यह माया डोलास के बारे में कुछ जानकारी है। वह पिछले कुछ दिनों से लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स स्थित स्वाति बिल्डिंग में छिपा हुआ है।"

मुंबई में खान पहले ही मुखबिरों का ध्यान आकर्षित कर चुका था। कुछ महीने पहले गुजरात के बड़ौदा में किए गए साहसिक अभियान ने उसे एक खूंखार प्रतिष्ठा दिला दी थी।

इस सूचना ने खान को व्याकुल कर दिया था। 27 जनवरी, 1990 को बड़ौदा में पाकिस्तान से प्रशिक्षित सिख आतंकवादी बलदेव सिंह को मार गिराने के बाद उनके आदमी अपने अगले मिशन का इंतजार कर रहे थे।

मिली सूचना के अनुसार, डोला और कुछ अन्य लोगों ने लोखंडवाला के दक्षिणी छोर पर स्थित दो अपार्टमेंटों पर अतिक्रमण कर लिया था।

स्वाति बिल्डिंग के भूतल का इस्तेमाल जबरन वसूली के लिए किया जा रहा था। नव विकसित बस्ती के बिल्डरों को पैसे चुकाने और यहां तक कि अपने आंतरिक विवादों को सुलझाने के लिए बुलाया जा रहा था।

यह इलाका सुरक्षित माना जाता था। बड़ी संख्या में इमारतें निर्माणाधीन थीं और बिल्डरों को निशाना बनाना आसान था।

यह एक अचूक ऑपरेशन होना था। खान जानता था कि डोलास को घेरने का उसे शायद दूसरा मौका न मिले, क्योंकि वह कोई साधारण लक्ष्य नहीं था।

खोता (नकली)

अंडरवर्ल्ड में फेक चलता है। मोटे-ताज़े शकील शेख अहमद ने जेजे अस्पताल के पास टेमकर स्ट्रीट पर स्थित छोटा शकील की शम्स ट्रैवल एजेंसी में एक छोटे-मोटे चौकीदार के रूप में काम शुरू किया। उन्होंने डी-कंपनी के लिए फोन कॉल अटेंड करना शुरू किया और तभी छोटा शकील की आवाज़ की नकल करने की उनकी प्रतिभा सामने आई। इस तरह खोटा शकील या फेक शकील का जन्म हुआ।

Khujli

खुजली वह व्यक्ति होता है जो ईमानदार नहीं होता या दुर्भावनापूर्ण इरादे वाला व्यक्ति होता है।

एक्जिमा को खुजली के नाम से भी जाना जाता है। दाऊद इब्राहिम के छोटे भाई इकबाल ने 2003 से 2007 के बीच आर्थर रोड जेल में अपनी हिरासत के दौरान अपनी त्वचा की बीमारी के लिए चिकित्सा सहायता की मांग की थी।

समुद्रों का राजा (हाजी हाजी इस्माइल या दुगुना)

कच्छ के पास जाम सलैया में जन्मे इस्माइल को 'समुद्र का राजा' भी कहा जाता था। इसका मुख्य कारण कानून प्रवर्तन एजेंसियों को चकमा देकर मादक पदार्थों की खेप की तस्करी करने में उनकी कुशलता थी।

मैंड्रैक्स या बटन (जैसा कि इसे ड्रग्स की दुनिया में जाना जाता है) से कमाए गए पैसे को दुबई के होटलों और मुंबई के सांताक्रूज़ स्थित कुछ संदिग्ध होटलों में लगाया गया।

लोनावला और महाबलेश्वर जैसे पहाड़ी इलाकों में संपत्तियां खरीदने में भारी रकम खर्च की गई।

हाजी हाजी के नाम से मशहूर 'डबल' नाम का यह शख्स एक दशक से भी अधिक समय तक प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर छोटा राजन की हिट लिस्ट में सबसे ऊपर था। केंद्रीय खुफिया एजेंसी ने 1997 में उसे मरवाने के लिए 50,000 डॉलर का इनाम रखा था।

दो साल बाद, प्रतिद्वंद्वी ड्रग तस्कर 'एनके' ने भी अपने पूर्व सहयोगी की हत्या करवाने का ऐसा ही प्रस्ताव दिया था। अंततः 9 अक्टूबर, 2005 को महाराष्ट्र-गुजरात सीमा पर बिल्लड़ के पास उसे गोली मार दी गई।

1993 में मुंबई में हुए धमाकों से पहले, हाजी हाजी महाराष्ट्र और गुजरात के तटीय इलाकों में हथियारों और गोला-बारूद की भारी खेप उतारने में भी शामिल था। इस साजिश की योजना दाऊद इब्राहिम और पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी ने बनाई थी।

ये तथ्य 27 अक्टूबर, 2005 को हाजी हाजी के बेटे वकार महमूद से मुंबई की अपराध शाखा द्वारा पूछताछ किए जाने के बाद सामने आए। उन्हें गुजरात के जामनगर जेल से लाया गया था, जहां उन पर आपराधिक आरोप लगे हैं।

Komdi (Hen)

विचाराधीन कैदी आर्थिक अपराधों में शामिल अपराधियों में रुचि रखते हैं। ऐसे आरोपियों को 'कोमदी' कहा जाता है क्योंकि कुख्यात अपराधी उन्हें आसान लक्ष्य मानते हैं, जिन पर जेल की सजा के दौरान और यहां तक कि रिहाई के बाद भी पैसे के लिए दबाव डाला जा सकता है।

कुमार पिल्लई

कुमार पिल्लई ने लाल सिंह चौहान की हत्या की साजिश रची, ताकि वह अपने पिता कृष्ण पिल्लई की हत्या का बदला ले सके, जिनकी हत्या 17 अक्टूबर, 1989 को हुई थी।

पूर्वी विक्रोली के नगर सेवक या पार्षद चौहान ने वरिष्ठ पिल्लई से टकराव से पहले अशोक जोशी गिरोह के सदस्यों के साथ हाथ मिला लिया था।

बदला लेने की प्यास में डूबे कुमार ने बोरीवली रेलवे स्टेशन पर अपने पिता के हत्यारे की हत्या की सुनियोजित योजना बनाई और मुंबई के अंधेरे और खतरनाक इलाकों की ओर जाने का एकतरफा रास्ता चुना।

बाद में कुमार अमर नाइक गिरोह के सदस्यों के साथ जुड़ गया और लोअर परेल स्थित 144 टेनमेंट्स नामक इमारतों के समूह में नियमित रूप से आने-जाने लगा, जो गिरोह का गढ़ था। भूमिगत होने से पहले, उसे अमर नाइक के छोटे भाई अश्विन के साथ 1993 में गिरफ्तार किया गया था।

पल्लाई के भाड़े के गुंडे एक बार फिर सक्रिय हो गए हैं और उन्होंने 6 अक्टूबर, 2007 को एस्टेट एजेंट सुनील मस्करे की गोली मारकर हत्या कर दी। यह गिरोह अब विक्रोली के कन्नामवार नगर और आसपास के इलाकों में फलते-फूलते रियल एस्टेट कारोबार में हिस्सेदारी हासिल करने की फिराक में है।

Kutta (Dog)

अंडरवर्ल्ड में 'कुत्ता' शब्द का इस्तेमाल दस रुपये के नोट के लिए किया जाता है। यह शब्द अभी भी दक्षिण मुंबई के डोंगरी और उसके आसपास के इलाकों में इस्तेमाल

होता है।

खेल के उस्ताद

Abdul Kanju

Abu Salem

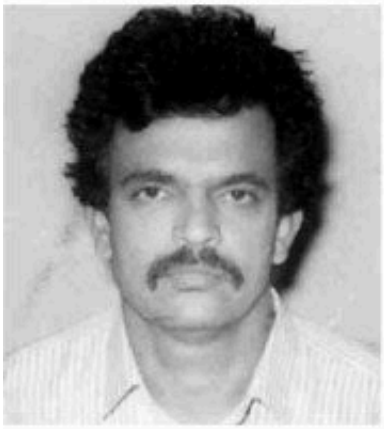

Amar Naik

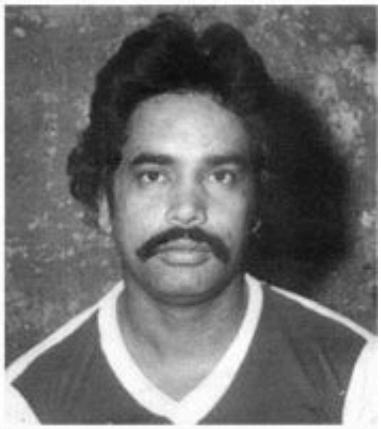

Amirzada

Anil Parab

Anis Ibraham Kaskar

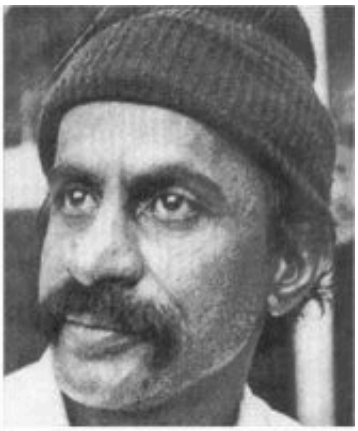

Arun Gawli

Ashok Joshi

Ashwin Naik

Babu Reshim

Babya Mayakar

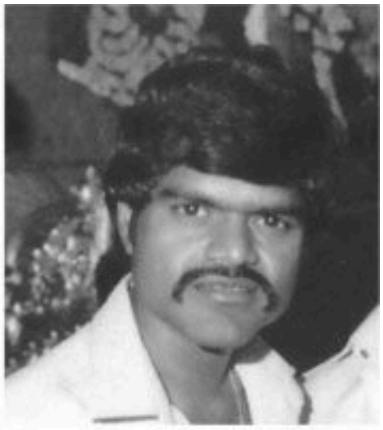

Chota Babu

Chhota Rajan

Chhota Shakeel

D.K. Rao

David Pardeshi

Dawood Ibrahim and wife Mehjabbin at Chhota Rajan's Marriage

Farid Tanasha

Haji Mastan

Haji Mastan with Dilip Kumar and Saira Banu

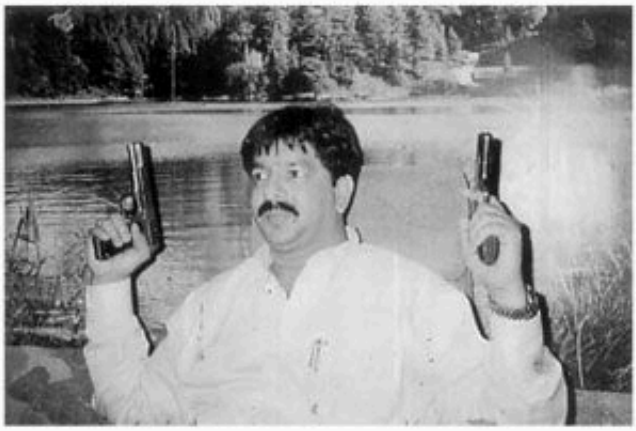

Hussein Ustra

Kajal

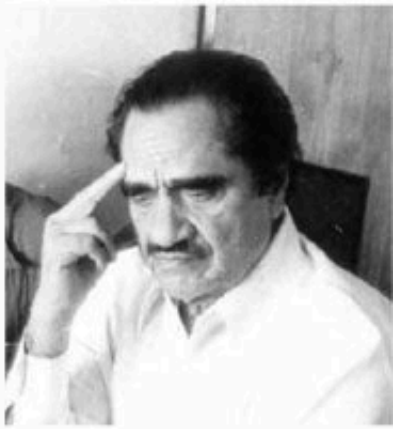

Karim Lala

Lamboo Shakeel

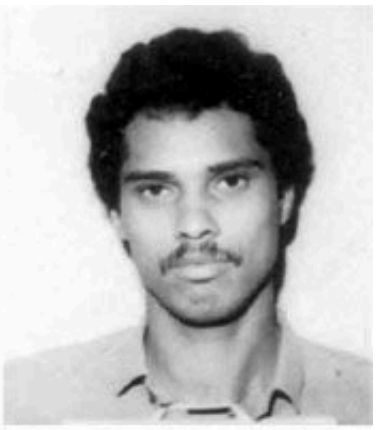

Maya Dolas

Nitin Sawant, Chota Rajan's aide, killed in an encounter

Priya Rajput

Ritu Divekar

Sada Pawle

Samad Khan

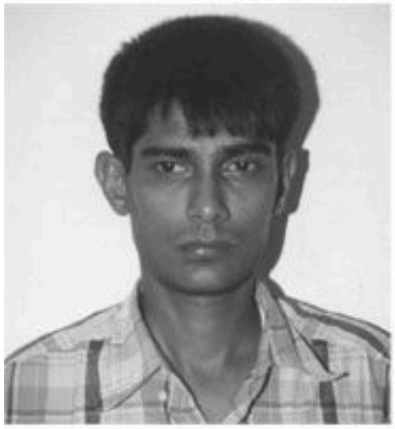

Santosh Naik

Subash Singh Thakur

Sunil Ghate

Suresh Manchekar

Vinod Matkar

Wardharajan Mudaliar

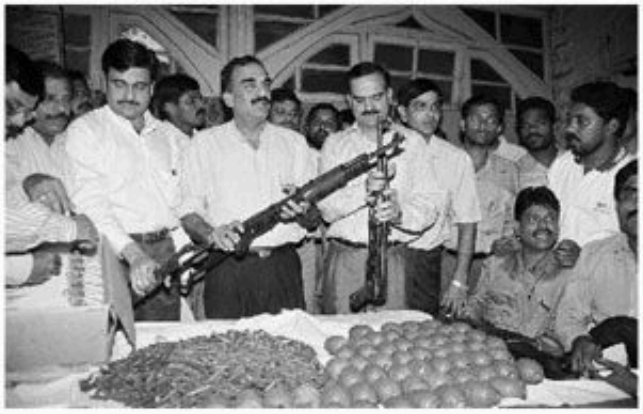

D. Sivanandhan, former Joint Commissioner of Police (Crime Branch), after recovery of large cache of arms. Third from left Pradip Sawant (E.SP.), fifth from left Param Bir Singh (Addl. Comm.).

Gangsters killed in an encounter

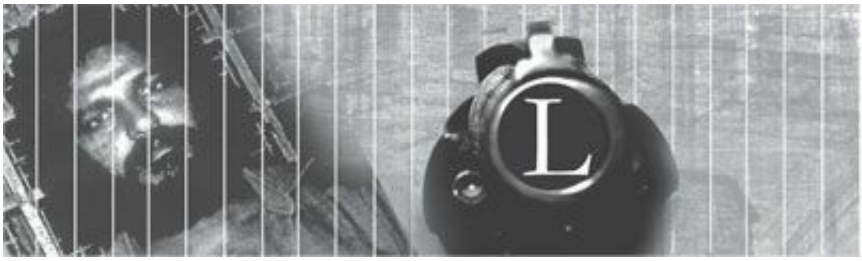

Laddu (Sweet)

अंडरवर्ल्ड में बम को अक्सर लड्डू कहा जाता है। यह शब्द गोल आकार की मिठाई लड्डू से लिया गया है, क्योंकि यह देखने में छोटे बम जैसी लगती है।

लाल विटे के चॉल

वहीं पर माफिया सरगना रामा नाइक रहता था, जिसने गैंगस्टरों की एक पूरी पीढ़ी को प्रशिक्षित किया था। नाइक जब अपराध की दुनिया में आया तब उसकी उम्र 30 के आसपास थी और उसके क्रूर तरीकों ने शहर के अंधकार जगत में एक नया मोड़ ला दिया। गुंडागर्दी और क्षेत्रीय विवादों से शुरू होकर, गिरोह ने बड़े पैमाने पर युद्ध छेड़ दिए।

गिरोह की गतिविधियाँ उस पुरानी जर्जर इमारत के इर्द-गिर्द केंद्रित थीं, जिसका नाम उसकी प्रमुख लाल ईंटों के कारण पड़ा था। नाइक ने इलाके में अपने अवैध धंधे चलाने की अनुमति देने के लिए स्थानीय गुंडे मोहन सालमलकर से हफ्ता वसूल कर अपने गिरोह की शुरुआत की। अन्य लोग भी लाल विटे की चॉल को नियमित रूप से सुरक्षा शुल्क देते थे।

मामला तब और बिगड़ गया जब प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर पारसनाथ पांडे के साथी कुंदन दुबे की बहन पुष्पा, अरविंद नाइक के बड़े भाई के करीब आ गई। इसके परिणामस्वरूप

नाइक के छोटे भाई उमाकांत की हत्या हो गई।

इस हत्या के कारण बायकुला में स्थित एस-आकार के पुल के पास के गिरोहों में फूट पड़ गई। बाबू रेशिम, विलास चौगले, बाबल्या सावंत और मोतीराम महादिक ने जल्द ही रामा नाइक गिरोह को मजबूत करने के लिए हाथ मिला लिया। राजनेता और विधायक अरुण गावळी उस समय नाइक के शिष्य थे।

लाम्बी (लैम्बी दैट किल्ड समद खान)

एके 47 और एके 56 जैसी असॉल्ट राइफलों को अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'लंबी' कहा जाता है। यह नाम इनकी लंबी नली के कारण पड़ा है, जिसका इस्तेमाल डॉन करीम लाला के खूंखार भतीजे समद खान को मार गिराने के लिए किया गया था।

1 जनवरी, 1993। रात लंबी खिंचती चली गई और जब उग्र समद खान आखिरकार बाहर जाने लगा, तो नीचे इंतजार कर रहे निशानेबाजों के एक समूह को इसकी सूचना दी गई।

दक्षिण मुंबई के गिरगाँव जिले के सिक्का नगर स्थित एक सुनसान होटल की चौथी मंजिल के कमरे की बत्ती बंद थी। यह स्पष्ट संकेत था कि समद अपने होटल के कमरे से निकल चुका था।

जैसे ही लिफ्ट इमारत के भूतल पर रुकी, रामा नाइक, बाबू रेशिम और संजय रुग्गड़ की हत्यारी टीम ने अपनी बंदूकें लिफ्ट के अंदर घुसाईं और अपनी पूरी मैगज़ीन उस उग्र पठान पर खाली कर दीं।

जो लड़की पहले समद के साथ थी, वह खेतवाड़ी के सिक्का नगर की अभी भी अंधेरी और सुनसान सड़क पर चुपके से निकल गई और गायब हो गई।

दाऊद को समद की महिलाओं के प्रति पसंद का वाकिफ था। उसने उस कुख्यात गैंगस्टर को फंसाने के लिए हनी ट्रैप का इस्तेमाल करने का फैसला किया।

समद पर घात लगाकर हमला किया गया था। हमला इतना तेज था कि वह अपनी 'मशीन' यानी स्वचालित हथियार का इस्तेमाल नहीं कर पाया।

समद के साथियों ने बाद में दावा किया कि मारे गए गैंगस्टर के बैग में हथगोले भी थे। लेकिन दाऊद के भाड़े के गुंडों की गोलियों की बौछार ने उसे मार डाला।

दाऊद ने समद को खत्म करने के लिए बायकुला कंपनी की मदद ली थी। उसने एके 47 राइफलों का भी इंतजाम किया था, जो 1990 के दशक की शुरुआत में एक दुर्लभ हथियार था।

बाद में, बैंगलोर में गिरफ्तार होने के बाद हामिद दलीप ने हत्या की जिम्मेदारी ली। वह 1983 में समद खान द्वारा मारे गए अपने पिता अजीज दलीप की मौत का बदला लेना चाहता था।

समद ने अमीरजादा और आलमजेद के साथ मिलकर एक घातक गिरोह बना लिया था। ये तीनों जबरन वसूली और सुपारी लेकर हत्या करने जैसे अपराधों में शामिल थे।

इससे पहले, दाऊद के छोटे भाई अनीस की शादी के जश्न के दौरान समद ने गोलीबारी की थी। उस समय समद जमानत पर बाहर था और उसकी स्वचालित बंदूक से निकली एक गोली दाऊद के भाई इकबाल को लग गई थी।

लाठी-कठी (छड़ी)

1970 के दशक की शुरुआत लाठी-डंडे के दौर में थी। मांसपेशियों वाला शरीर होना एक फ़ायदा माना जाता था और युवा अच्छी सेहत पाने के लिए जिम में घंटों पसीना

बहाते थे।

विधायक कृष्णा देसाई की हत्या ने मध्य मुंबई में माफिया के सत्ता समीकरण को बिगाड़ दिया था। जिम मालिकों जैसे लाड मास्टर और मूसा दादा से सत्ता धीरे-धीरे हत्यारों की एक नई नस्ल के हाथों में जा रही थी। अंडरवर्ल्ड में लाठी-काठी और रामपुरी चाकू से बंदूकों का युग शुरू हो गया था।

गिरगाँव में चंद्रकांत खोपड़े उर्फ बेबीज़ गोल्डन गैंग और दादर में वाल्गी-पालगी गैंग का उदय हुआ। शशि रसम मध्य मुंबई से कोबरा गैंग का नेतृत्व करता था। रामा नाइक और बाबू रेशिम ने दगड़ी चॉल से अपना साम्राज्य चलाया। 1970 के दशक के अंत तक, व्यायामशाला का महत्व कम हो गया था। सशस्त्र गैंगस्टरों का दबदबा कायम हो गया था।

लिफ्ट वाली इमारत

9 मिमी कैलिबर सेमी-ऑटोमैटिक स्टार पिस्टल

लिफ्ट और पिस्तौल वाली इमारत: ये संबंध थोड़ा उलझन भरा लग रहा था। स्वचालित पिस्तौल में गोलियां स्प्रिंग द्वारा ऊपर की ओर धकेली जाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे लिफ्ट ऊपर जाती है। यह मुहावरा पुलिस से बचने के लिए गढ़ा गया था। इसलिए, जब कोई गैंगस्टर अपने साथी से कहता है 'लिफ्ट वाली इमारत ले कर आना', तो इसका असल मतलब होता है कि भरी हुई पिस्तौल लेकर आओ।

Lonavala Killings

सन् 1985 में लोनावला के एक होटल के कमरे में गैंगस्टर फ्रांसिस जेवियर उर्फ शॉर्टी और विजय सावंत उर्फ विजू की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। ये दोनों हत्यारे फिलिप पंडारे के गिरोह से जुड़े थे। हत्याओं में मुख्य शूटर राजन नायर, छोटा राजन और विलास चौगुले थे।

इससे पहले पांडारे का चेंबूर के तिलक नगर में राजन नायर और उसके साथियों से टकराव हुआ था। इन हत्याओं के बाद उत्तरी मुंबई में गैंगवार का समीकरण बदल गया।

लक्ष्मी सोनी (मुंबई में गैंगस्टर गुरु साटम की बचपन की प्रेमिका)

अपराध शाखा के अधिकारियों ने 2002 में सतम गिरोह की ओर से सुरक्षा राशि वसूलने के आरोप में लक्ष्मी को परेल स्थित उसके जर्जर जावलकर मेंशन अपार्टमेंट से गिरफ्तार किया था।

हालांकि सतम शादीशुदा है और दो विवाहित बच्चों का पिता है, फिर भी लक्ष्मी उसके साथ है, यह तथ्य पुलिस जांच के दौरान सामने आया। लक्ष्मी का छोटा भाई राजू भी गिरोह में शामिल हो गया था, लेकिन अगस्त 2002 में मुंबई में क्राइम ब्रांच के अधिकारियों महेश देसाई और निनाद सावंत ने उसे गोली मार दी थी।

लुखा (मतलब)

लुखा अंडरवर्ल्ड का एक क्रूर व्यक्ति होता है, अक्सर ऐसा व्यक्ति जो कंगाल होता है और खर्च नहीं करना चाहता। इसका अर्थ यह भी है कि वह व्यक्ति किसी काम का नहीं होता।

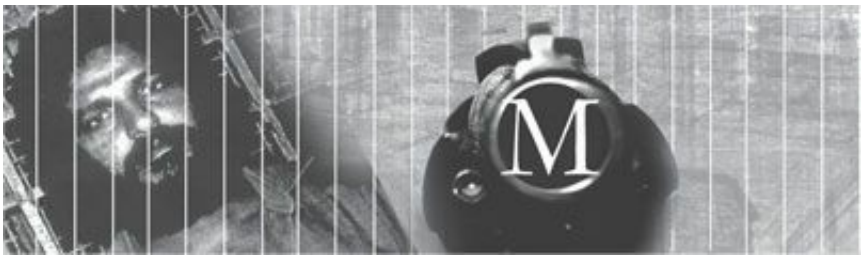

Maa Ke Sat Bete Kitne?

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'माँ के साथ कितने बच्चे?' का मतलब होता है 'तुम्हारे पास कितनी गोलियां हैं?'। 'माँ' का मतलब असल में हथियार होता है और 'बेटे' का मतलब हत्या को अंजाम देने के लिए ज़रूरी गोलियां होती हैं।

Maa Ke Sat Bache Le Kar Ana

'माँ के साथ बचे ले कर आना' इसका अर्थ है, हथियार और सभी गोला-बारूद मौके पर ले आओ। माँ का अर्थ है हथियार और बची का अर्थ है गोलियाँ।

Machli Pani Se Bahar Aya Kya?

'मछलीपानी से बाहर आया क्या?' का मतलब है, 'क्या मछली पानी से बाहर आ गई है?' गिरोह अक्सर अपने शिकार के करीब पहुँचते समय इस मुहावरे का इस्तेमाल करते थे। 'मछली' का अर्थ है निशाना। असल में, हमलावर देखने वाले से पूछ रहे होते हैं कि क्या निशाना दफ्तर या घर से बाहर निकल गया है ताकि वे हमला कर सकें।

Machmach (Shaikh Fahim Ahmed)

मुंबई की तंग गलियों में एक कुशल हथियार तस्कर से लेकर दाऊद इब्राहिम की डी कंपनी में नंबर 3 तक, शेख फहीम अहमद ने एक लंबा सफर तय किया है।

लगातार बकबक करने की आदत के कारण उन्हें मचमच उपनाम मिला।

1990 के दशक की शुरुआत में, मचमच दाऊद के निशानेबाजों को हथियार मुहैया कराने में माहिर था और कभी पकड़ा नहीं गया। शुरुआत में उसका काम सिर्फ फोन पर लोगों को धमकाना था। लेकिन इतनी धमकियों के बावजूद, डोंगरी का यह युवक, जो फिलहाल पाकिस्तान में छिपा हुआ बताया जा रहा है, ने अभी तक एक भी गोली नहीं चलाई है।

मदन चौधरी

सुभाष सिंह ठाकुर के करीबी सहयोगी मदन चौधरी, 1993 में सुभाष सिंह ठाकुर की टीएडीए की धाराओं के तहत गिरफ्तारी के बाद ठाणे-विरार क्षेत्र में गतिविधियों की देखरेख कर रहे थे।

अंडरवर्ल्ड सूत्रों का मानना है कि चौधरी और गावॅली के बीच लगभग 1989 में अनबन हो गई थी क्योंकि गावॅली को लगता था कि चौधरी बहुत घमंडी हो गया है। जब चौधरी ने अपने गिरोह से अलग होकर अपने प्रतिद्वंद्वियों से हाथ मिला लिया, तो छोटा राजन भी उससे बदला लेने के लिए झगड़ने लगा।

सुभाष सिंह ठाकुर और उनके खास सहयोगी शामकिशोर गरिगापत्ती से दोस्ती ने चौधरी को आगे बढ़ने में मदद की। जल्द ही उन्होंने ठाकुर गैंग की बागडोर संभाल ली,

जिसने एक अन्य विदेशी गैंगस्टर अली बुदेश से भी संबंध स्थापित किए। उनके ज्यादातर निशाने पर बिल्डर होते थे।

Mahendra Shelar

शेलार छोटा राजन गिरोह का सदस्य था। उसने उत्तरी मुंबई के साकी नाका के एक अन्य गैंगस्टर विल्सन जॉर्ज के साथ मिलकर गिरोह बनाया था।

माया डोलास नाम की कुख्यात निशानेबाज से आकस्मिक मुठभेड़ के बाद वह एक गैंगस्टर बन गया।

शेलर डोलास से बदला लेने के लिए जुनूनी था। उसने अपना एक गिरोह बनाया और 1989 में गिरफ्तार होने से पहले उसने कई लूटपाट की घटनाओं को अंजाम दिया।

बाद में उसने अपने गुरु मान्या कोकाटे की हत्या कर दी, जिसके बाद वह छोटा राजन गिरोह में शामिल हो गया। वह छोटा राजन और उसके खास आदमी रोहित वर्मा से सीधे निर्देश लेता था।

Mahesh Dholakia

मुंबई के अंडरवर्ल्ड में शीर्ष पायदान से बाल बराबर दूर रह गया वह गुजराती व्यवसायी।

महेश और उनके भाई अरविंद उन अग्रणी सेठों में से थे जिन्होंने शहर में अंडरवर्ल्ड की गतिविधियों को वित्तपोषित करना शुरू किया था।

नल बाजार के दो टाकी के पास एक छोटे कपड़े के व्यापारी के बेटे, दोनों भाइयों ने आयातित वस्त्रों की तस्करी से शुरुआत की, जो 1960 के दशक के उत्तरार्ध में एक

लाभदायक व्यवसाय था।

ढोलकिया बंधुओं ने दमन से बोस्की और अन्य वस्त्रों की तस्करी में गहरी पैठ बना ली थी, जो उस समय देश के पश्चिमी तट पर तस्करी की गतिविधियों का केंद्र था। उनका मुनाफा लगभग 100 प्रतिशत था।

एक पूर्व कारोबारी सहयोगी के अनुसार, दोनों ने तस्करी का सामान समय पर शहर तक पहुंचाने के लिए लगभग 150 वाहनों का बेड़ा किराए पर लिया था। कुछ सामग्री कोंकण से तस्करी करके लाई गई थी, जिसकी आपूर्ति अजीज कोंकणी और फुंदन खान ने की थी।

ढोलकिया बंधुओं और उनके सहयोगियों ने बिचौलियों को खत्म करने के लिए जल्द ही दुबई में आपूर्तिकर्ताओं से संपर्क स्थापित कर लिया। इस कदम से उनके कारोबार में जबरदस्त उछाल आया और वे जल्द ही व्यापार में अपने प्रतिद्वंद्वियों से आगे निकल गए।

ढोलकिया बंधुओं की मुश्किलें तब शुरू हुईं जब उन्होंने दाऊद इब्राहिम और उसके बड़े भाई शब्बीर जैसे गैंगस्टरों के साथ मेलजोल बढ़ाना शुरू कर दिया। महेश ने अप्पू शेट्टी, जयंता शेट्टी, श्रीधर शेट्टी, शरद शेट्टी, विजय कंजरि और बेबी खोपड़े जैसे गोल्डन गैंग के सदस्यों के साथ गठबंधन कर लिया।

महेश की असली मुसीबतें तब शुरू हुईं जब उस पर राजन नायर उर्फ बड़ा राजन की हत्या करने वाले चंद्रशेखर सफालिका को आर्थिक सहायता देने का आरोप लगा। इसके तुरंत बाद जैकब सर्कल पुलिस लॉकअप में बाबू रेशिम की हत्या हो गई। महेश पर हत्या के संदिग्ध हाफ़िसजी आज़मगड़ी को पनाह देने का आरोप लगा। तिलक नगर के गुंडे उसकी जान के दुश्मन बन चुके थे।

महेश के दुश्मनों को 13 अक्टूबर, 1987 को मौका मिल गया, जब वह एक मेज खरीदने के लिए अपने पेडर रोड स्थित घर से निकले। बायकुला कंपनी के निशानेबाजों ने उन्हें घेर लिया और उनका पीछा किया। उन्होंने तारदेव के पास उन्हें पकड़ लिया और उन पर 30 गोलियां चलाईं।

बाद में पुलिस ने जगजीत सिंह, दिलीप कुलकर्णी और मतिक को गिरफ्तार कर लिया, ये सभी बायकुला कंपनी के सदस्य थे।

Mama Banaya (Fooling In Kathmandu)

"Kya re Dedwa, tera seth ne paisa nahin bheja? (Dedu your boss has not paid up yet)?" said Mirza Dilshad Baig to Suresh Kisan Waghmare alias Dedu, a key member of the Chhota Rajan gang, as he was ushered into the chilling large fortress like mansion near Kathmandu.

हथियारों के सौदे के सिलसिले में बेग से मिलने के लिए देदू चुपके से नेपाल में घुस गया। उसका साथी विजय गैब्रियल गोंसाल्वेस उर्फ विजू भी उसके साथ था, जब वे सांसद से उनके आधिकारिक आवास पर मिले।

वैसे, बेग राजन के गिरोह को आपूर्ति किए गए हथियारों की खेप के लिए 15 लाख रुपये की अंतिम किस्त की ओर इशारा कर रहा था। मुंबई में इन विभिन्न प्रकार के हथियारों की बाजार कीमत आसानी से 33 लाख रुपये हो सकती है।

लगभग 40 वर्ष की आयु के बेग एक 'भैया' थे, जो लगभग 1984 में उत्तर प्रदेश के कृष्णानगर से नेपाल चले गए थे। उन्होंने हिमालयी राज्य में आवास और शारीरिक प्रशिक्षण मंत्री बनने की महत्वाकांक्षा पाली थी।

मुंबई के अंडरवर्ल्ड से संबंधों के कारण बेग पहले से ही भारतीय खुफिया नेटवर्क की सूची में था। उन्हें यह भी संदेह था कि उसने दाऊद इब्राहिम के इशारे पर दक्षिण अफ्रीका के रास्ते दुबई में भारी मात्रा में ड्रग्स की तस्करी की थी।

"ये दुबईवाले बड़े खाने के टेबल बिछड़ा देते हैं, मगर पैसे मिलना मुश्किल है," (दुबई में लोग आपके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, लेकिन भुगतान मिलना मुश्किल है), उन्होंने आगे कहा। संयोग से, कनवा वही हैदर कान्या है, जिसने नेपाल में बेग के नेटवर्क का इस्तेमाल करके दाऊद के आदमियों तक लगभग 1.5 टन मैंड्रैक्स टैबलेट की तस्करी में अहम भूमिका निभाई थी। पैसा मिर्ज़ा तक नहीं पहुंचा था और वह दाऊद से भी खुश नहीं था।

बैग भुगतान की शर्तों को लेकर असमंजस में था, तभी देदू और विजय गोंसाल्वेस ने उससे बुलेटप्रूफ जैकेटों की एक और खेप हासिल कर ली। राजन गिरोह के सदस्य मुंबई में एक बड़ी साजिश रचने के लिए गुपचुप तरीके से हथियार जमा कर रहे थे।

मियां गांव (मुस्लिम गांव)

मुंबई के अंडरवर्ल्ड में कराची (पाकिस्तान का शहर) को 'मियां गांव' या 'मुस्लिम गांव' कहा जाता है। इस बंदरगाह शहर का महत्व इसलिए बढ़ गया है क्योंकि माना जाता है कि दाऊद इब्राहिम यहीं छिपा हुआ है। मुंबई की गलियों में मुसलमानों को 'मियां' के नाम से भी जाना जाता है।

मैं जिंदा हूँ (I am alive)

11 नवंबर, 1998। थके-हारे पुलिसकर्मी और वार्ड बॉय पांच गैंगस्टरों के बेजान शवों को परेल स्थित केईएम अस्पताल के मुर्दाघर में ले जा रहे थे।

वे लगभग चौंककर उछल पड़े जब 'मृत शरीरों' में से एक ने अचानक कहा: 'मैं जिंदा हूं'।

डी के राव मानो मृत्यु से जीवित हो उठे हों, उन्होंने अपने ऊपर लिपटा कफन हटा दिया और स्ट्रेचर पर बैठ गए, अचंभित पुलिसकर्मियों को घूरते हुए।

दिनदहाड़े दादर के पास एक 'मुठभेड़' में सीनियर इंस्पेक्टर अंबदास पोटे और उनके आदमियों की गोलियों से वह लुटेरा से गैंगस्टर बन गया था और बच गया था।

हालांकि, विशेष दस्ते ने राव के साथियों राजा गोरे, बिपिन खंडपाल, रमेश पुजारी और जयराम शेट्टी को मार गिराने में कामयाबी हासिल कर ली थी। पुलिस का दावा था कि छोटा राजन गिरोह जेल के पास बम विस्फोट के आरोपी एहतेशाम और अन्य लोगों को निशाना बनाने की योजना बना रहा था।

मुंबई में गैंगस्टर मुठभेड़ों में शायद ही कभी बच पाते हैं। लेकिन मुंबई में राजन के खास आदमी राव की किस्मत चमक गई। इससे पहले वह 1987 में खार में पुलिस की गोलियों से बच निकला था।

मजनून (प्रेमी)

मुस्तफा डोसा डोंगरी की तंग गलियों में आलू टिक्की (आलू कटलेट) और उबले अंडे बेचा किया करता था।

1960 के दशक में डोसा परिवार के लिए सब कुछ ठीक-ठाक लग रहा था। उनके दादा अहमद उमर डोंगरी में बाबुल टैंक के पास एक छोटी चावल की चक्की चलाते थे। लेकिन किस्मत ने पलटी मारी और परिवार कंगाल हो गया।

मुस्तफा और उसके बड़े भाई मोहम्मद ने गुजारा करने के लिए चाट और उबले अंडे बेचना शुरू किया। लेकिन डोंगरी की गली-मोहल्ले की जिंदगी ने उन्हें छोटी-मोटी चोरियों की ओर धकेल दिया और जल्द ही, दोनों भाई आसपास के सबसे कुख्यात चिंदी चोरों में गिने जाने लगे।

बैग उठाने में उनके असाधारण कौशल को रफीक दादा ने देखा, जो एक तरह का सरगना और स्थानीय दादा था, जिसने उन दोनों को मुंबई के बंदरगाहों से परिचित कराया, जो 1970 के दशक की शुरुआत में तस्करों का गढ़ था।

1980 तक, मुस्तफा ने अपने सोने के कारोबार के लिए दुबई में मज़बूत संबंध बना लिए थे। इस रास्ते को आम तौर पर 'गोदाम लाइन' के नाम से जाना जाता था, जहाँ महिलाएँ अपने शरीर में सोने के बिस्कुट छिपाकर ले जाती थीं। यहीं से उन्हें मशहूर प्रेमी 'मजनून' के नाम पर 'मजनून' उपनाम मिला। उन्होंने कई लड़कियों के साथ रिश्ते बनाए और फिर अलग हो गए, और यही नाम उनसे जुड़ गया।

1984 में, मुस्तफा को COFEPOSA के तहत भगोड़ा घोषित कर दिया गया था। वह दुबई में छिपा हुआ था।

1993 में, उन पर रायगढ़ जिले के दिघी में हथियारों और विस्फोटकों की एक बड़ी खेप उतारने का आरोप लगा। उस वर्ष हुए सिलसिलेवार बम धमाकों में उनका यही योगदान था। लेकिन किस्मत ने एक बार फिर उनका साथ नहीं दिया और 18 मार्च 2003 को संयुक्त अरब अमीरात ने उन्हें मुंबई प्रत्यर्पित कर दिया।

मान्या सर्वे (बॉम्बे का पहला सामना)

11 जनवरी, 1982। दोपहर लगभग 1.30 बजे का समय था, जब क्राइम ब्रांच के 18 अधिकारी तीन विशेष टीमों में विभाजित हो गए और शहरी डकैत मान्या सर्वे का

इंतजार करने लगे, जो बॉम्बे की पहली पुलिस मुठभेड़ बनने वाली थी।

बीस मिनट बाद, वडाला के अंबेडकर कॉलेज जंक्शन पर एक ब्यूटी पार्लर के पास एक टैक्सी रुकी। सर्वे अपनी प्रेमिका, जो दो बच्चों वाली विधवा थी, को लेने के लिए उतरा। पुलिस दस्ते ने उसे घेर लिया और पोजीशन ले ली। खतरे को भांपते हुए सर्वे ने अपनी वेबली एंड स्कॉट रिवॉल्वर निकाली, लेकिन इससे पहले कि वह ट्रिगर दबा पाता, पुलिस अधिकारियों राजा ताम्बत और इशाक बागवान ने उसकी छाती और कंधे में पांच गोलियां दाग दीं।

कहा जाता है कि केईएम अस्पताल ले जाते समय सर्वे लगातार चिल्लाता रहा कि अधिकारियों ने उसे अपना बचाव करने का उचित मौका नहीं दिया। कुछ ही मिनटों बाद उसकी मृत्यु हो गई और उसके साथ ही शहरी डकैती की वह किंवदंती भी मिट गई जिसने घातक रूप ले लिया था।

सूत्रों के अनुसार, वर्धाभाई, जो एक प्रमुख अंडरवर्ल्ड लीडर था, ने सर्वे द्वारा अपनी स्थिति को चुनौती दिए जाने का सामना किया और पुलिस को इसकी सूचना दे दी।

1944 में जन्मे मनोहर अर्जुन सर्वे अपनी मां और सौतेले पिता के साथ कोंकण से मुंबई आ गए। उन्होंने कीर्ति कॉलेज में कला विभाग में दाखिला लिया और अपने सौतेले भाई भार्गव दादा के प्रभाव में आकर छात्रों का एक समूह बनाया।

भार्गव वर्ली के अगर बाजार का एक कुख्यात गुंडा था। 1969 में, वह अपने साथियों सर्वे और मान्या पोढकर के साथ दांडेकर की हत्या में शामिल था। पुलिस इंस्पेक्टर ई.एस. डाबोलकर ने उन्हें तुरंत गिरफ्तार कर लिया और अभियोजन पक्ष द्वारा पेश किए गए पुख्ता सबूतों के आधार पर तीनों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। येरवडा में, सर्वे का अपने समकालीन सुहास भाटकर उर्फ पोत्या से टकराव हो गया। मान्या की आतंक फैलाने वाली हरकतों से तंग आकर जेल अधिकारियों ने उस

गुंडे का तबादला रत्नागिरी जेल में करवा दिया। स्थानीय सिविल अस्पताल में भर्ती होने से पहले, सर्वे ने जेल में भूख हड़ताल की और लगभग 20 किलो वजन कम कर लिया। मौका मिलते ही सर्वे 14 नवंबर, 1979 को जेल से भाग निकला और नौ साल के जेल के अनुभव से समृद्ध होकर बॉम्बे लौट आया।

सर्वे को जल्द ही धारावी से शेख मुनीर और डोंबिवली से विष्णु पाटिल के रूप में भरोसेमंद सहयोगी मिल गए। उदय शेट्टी कुछ समय बाद गिरोह में शामिल हो गया और इस तरह एक दुर्जेय जोड़ी बन गई। यह मार्च 1980 की बात है।

जेल में रहने के दौरान पढ़ी गई जेम्स हैडली चेस के एक उपन्यास की कहानी को याद करते हुए, सर्वे ने शहर के अंडरवर्ल्ड के उच्च वर्गों में पहचान हासिल करने के लिए सरकारी दूध योजना से पैसे लूटने का फैसला किया।

माहिम में बरखा बिजली सिनेमा हॉल के पास से एक कार चोरी हो गई और गोवंडी के पास 1.26 लाख रुपये की चोरी को अंजाम दिया गया। चोरी की गई गाड़ी बाद में बांद्रा के नेशनल कॉलेज के पास लावारिस हालत में मिली, ठीक उसी तरह जैसे चेज़ के उपन्यास में वर्णित है।

Some of Surve's associates were identified as Dayanand Shetty, Parshuram Katkar, Moreshwar Narvekar and Kishore Sawant.

अन्य लूटपाट की घटनाओं में सायन-ट्रॉम्बे रोड स्थित कैनरा बैंक की शाखा और देवनार स्थित ड्यूक एंड संस कंपनी से 1.6 लाख रुपये की लूट शामिल थी। पुलिस पर भारी दबाव था और अपराध पर अंकुश लगाने के लिए ऑपरेशन मान्या सर्वे शुरू किया गया था।

सर्वे को पहली बड़ी हार तब मिली जब 22 जून, 1981 को कल्याण के पास एक केमिकल कंपनी से उनके प्रमुख सहयोगी मुनीर को गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ

दिनों बाद दयानंद शेट्टी और काटकर को गोरेगांव के एक लॉज से पकड़ा गया। पुलिस की छापेमारी की आशंका में, सर्वे 19 नवंबर, 1981 को भिवंडी में अपने एक सहयोगी के ठिकाने पर छिप गए। पुलिस की टुकड़ियों ने उस घर पर छापा मारा जिसे वे छिपने की जगह के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे और वहां से एक हथगोला, एक देसी रिवॉल्वर और कुछ जिंदा कारतूस बरामद किए।

सुनियोजित तलाशी अभियान के परिणामस्वरूप शहर में उसकी गतिविधियाँ सीमित हो गईं। उदय शेट्टी की गिरफ्तारी के साथ ही वह एक अकेला योद्धा बन गया। यह योद्धा कुछ ही दिनों तक चला, जिसके बाद शहर में पहली मुठभेड़ को अंजाम दिया गया।

माँ (गुप्त सट्टेबाजी)

1970 के दशक के उत्तरार्ध तक मटका अंडरवर्ल्ड गिरोहों की आय का मुख्य स्रोत था। लगभग सभी गिरोह इन अवैध सट्टेबाजी अड्डों द्वारा दी जाने वाली सुरक्षा राशि से खूब पैसा कमाते थे।

मटका के कारोबार का इतिहास सन् 1962 से शुरू होता है, जब कल्याणजी शाह उर्फ कल्याणजीभाई ने वर्ली मटका की शुरुआत की थी। यह खेल रानी को छोड़कर 12 पत्तों से खेला जाता है। इसमें भुगतान का अनुपात 1 से 11 है।

रतन खत्री ने 2 मई, 1964 को 'न्यू वर्ली' की शुरुआत की। खेल के नियमों में थोड़ा बदलाव किया गया। नियम के अनुसार, कार्ड किसी ग्राहक की उपस्थिति में निकाले जाने थे। लेकिन ऐसा बहुत कम होता था।

सरगना के साथियों ने टेलीफोन के ज़रिए पूरे शहर में लगे सभी दांवों का डेटा इकट्ठा किया। सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके, उस दिन कम लोकप्रिय नंबरों का

चयन किया गया। ये नंबर बुकिंग एजेंटों को भेजे गए और पूरे शहर में सट्टेबाजी के अड्डों के अंदर लगे बोर्डों पर प्रदर्शित किए गए।

कल्याणजी का मटका सप्ताह में सातों दिन चलता था, जबकि रतन खत्री सोमवार से शुक्रवार के बीच ही सट्टेबाजी का धंधा चलाता था।

चीनू चंद्रकांत, अबनानी, बबला और शांति खेतवाड़ी जैसे नए खिलाड़ी जल्द ही मैदान में शामिल हो गए।

आपातकाल के दौरान मटका का कारोबार बुरी तरह प्रभावित हुआ था। लेकिन प्रशांतभाई, बालू थाने, भावागी फोर्ट और खोटे जैसे अन्य कारोबारियों के आने से यह कारोबार फिर से पटरी पर आ गया।

1990 तक, अंडरवर्ल्ड ने मटका कारोबार पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली थी। दिलीप कुलकर्णी उर्फ डीके से धमकी मिलने के बाद खत्री के सट्टेबाजी के रैकेट ठप हो गए। मेन फोर्ट और सूर्या ने उसके साम्राज्य पर कब्जा कर लिया।

1993 तक मटका कारोबार का केंद्र दक्षिण मुंबई के फोर्ट में स्थानांतरित हो चुका था। सट्टेबाजी एजेंटों ने 'टोरान स्पैटिक' नामक एक नई प्रणाली के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया था।

मुंबई में मटका से जुड़े चाकूबाजी के कई मामले सामने आए थे, लेकिन वर्ली में कल्याणजी शाह के बेटे वसंत की हत्या ने गिरोह के संचालकों को झकझोर दिया था।

अंदरूनी सूत्रों के अनुसार, गोवा, गुजरात और मध्य प्रदेश में स्थित केंद्रों से मटका वसूली से प्रति माह 350 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई होती है। गिरोह सुरक्षा शुल्क के रूप में मुनाफे का लगभग दो प्रतिशत हिस्सा कमाते हैं।

स्थानीय मटका संचालकों से हफ्ता वसूलना अंडरवर्ल्ड में प्रतिष्ठा की बात मानी जाती है। ताकतवर स्थानीय गिरोहों को इससे ज्यादा पैसे मिलते हैं।

मामला (नौकरी)

सब कुछ ठीक चल रहा था जब तक कि 1992 में अरुण गावली के प्रमुख सहयोगी मोहन माली ने यरवदा जेल में उनकी हिरासत के दौरान उनसे मुलाकात नहीं की। लेफ्टिनेंट ने शिकायत की कि दादर में एक संपत्ति विवाद को लेकर एक राजनेता के बेटे का गिरोह से झगड़ा हो गया था।

माली ने बताया कि दो पारसी मालिकों ने एक लोकप्रिय होटल को सिंह को 30,000 रुपये प्रति माह के किराए पर दिया था, जिसके लिए 10 लाख रुपये की अग्रिम राशि ली गई थी। यह किरायानामा पांच साल की अवधि के लिए था। हालांकि पट्टा समाप्त हो गया था, लेकिन सिंह ने समझौते का पालन करने से इनकार कर दिया था।

जब मामला अदालत में चल रहा था, उसी दौरान सिंह ने होटल को राजनेता के बेटे को बेच दिया। इसके तुरंत बाद, पारसी होटल मालिक को मामले को सुलझाने के लिए धमकियां मिलने लगीं।

मालिक ने माली से संपर्क किया और उससे हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया। हालांकि, बेटे ने गिरोह के अनुरोधों पर कोई ध्यान नहीं दिया और रिश्ते बिगड़ने लगे।

इसके अलावा, नेता के बेटे ने माली से कहा था कि महाराष्ट्रियन गिरोह होने के नाते उन्हें उसके मामले में दखल नहीं देना चाहिए। उसने इशारों-इशारों में यह भी कहा था कि गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम भी उससे सीधे टकराव से बच रहा है।

माली ने जेल में बंद अपने गुरु गावळी को सारी बात बताई। गावळी ने अपने आदमियों को कार्रवाई करने का आदेश दिया और हथियारबंद गुंडे होटल में घुस गए। बांद्रा के दो आदमी गावळी के दूसरे सबसे बड़े सरदार अशोक चौधरी उर्फ छोटा बाबू के पास गए और उन्हें बताया कि वे समझौता करने को तैयार हैं। पारसी होटल मालिक ने गिरोह के लिए 10 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ 70 लाख रुपये देने पर सहमति जताई।

मावेरिक पठान

समद, हामिद और उसका छोटा भाई माजिद, युद्ध में उतरने से पहले दोस्त थे। तीनों दुश्मनों के बीच 200 मीटर की एक गली थी।

यह सब तब शुरू हुआ जब हामिद ने एक मामूली बात पर समद को थप्पड़ मार दिया। हालांकि दोस्तों ने बीच-बचाव किया, लेकिन उस गुस्सैल गैंगस्टर के लिए यह अपमान असहनीय था।

समद गुस्से में पार्टी छोड़कर चला गया। दोनों दोस्त अलग हो गए, लेकिन अलग होने से पहले उन्होंने एक-दूसरे को जान से मारने की कसम खाई।

समस्या तब शुरू हुई जब हामिद ने दक्षिण मुंबई के एक डांस बार, सोन्या महल में एक सांप छोड़ दिया। जैसे ही वहां मौजूद लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे, उस हट्टे-कट्टे पठान ने एक डांसर को अपने कंधे पर उठाया और अपनी बुलेट मोटरसाइकिल पर तेजी से निकल गया।

हामिद की इस विचित्र हरकत से समद दंग रह गया। वह नर्तकी उसकी पसंदीदा महिलाओं में से एक थी।

दो घंटे बाद समद ने पलटवार करते हुए डोंगरी के नवरोजी लेन नंबर 1 स्थित बच्छूवाला बिल्डिंग के बाहर हामिद के पिता दलीप अजीज पर तलवार से हमला कर उनकी हत्या कर दी। इस हत्या के बाद दक्षिण मुंबई के विभिन्न गुटों के बीच एक बड़ा गिरोहयुद्ध छिड़ गया।

कुछ ही समय बाद, अज़ीज़ की हत्या के परिणामस्वरूप, हामिद ने डोंगरी के अंबर बार के पास समद के दोस्त फ़ज़लू लाला पर हमला कर दिया। लेकिन इस मामले में अशोक आंटी को बलि का बकरा बना दिया गया।

अज़ीज़ परिवार दूसरी मंजिल पर रहता था। वे डोंगरी के भींपुरा मैदान में 'फाइव फ्रूट्स' ब्रांड नाम से अवैध शराब बेचने में माहिर थे।

दलीप की मशहूर देसी शराब, जिसे दर्जी मास्टर जाम्बू से बनाते थे, चार रुपये प्रति बोतल बिकती थी। एक पूर्व सहयोगी ने बताया कि शाम के समय किसी भी समय 200 से अधिक नशेड़ियों को चटाइयों पर बैठे देखना आम बात थी।

दलीप अजीज बैंगलोर से पलायन कर गए थे। उनके तीन बेटे थे: हामिद, माजिद और बेटी नीलियोफर।

छह फुट पांच इंच से अधिक लंबे हामिद ने डोंगरी और आसपास के इलाकों की गलियों में आतंक मचा रखा था। पुलिसकर्मियों को धमकाना और दंगे करना आम बात थी।

वह बॉम्बे इंटरनेशनल होटल और मरीन ड्राइव पर स्थित सोन्या महल में नियमित रूप से जाया करते थे।

मेहदी इमरान

कुख्यात गैंगस्टर और बम धमाके के आरोपी एजास पठान के भतीजे मेहदी इमरान नासिर शेख का नाम पुलिस रिकॉर्ड में 1992 में दर्ज हुआ था, जब उन्हें कोलाबा में हुई एक डकैती में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। हालांकि उस समय वह किशोर ही थे, लेकिन इस लंबे-चौड़े और मजबूत शरीर वाले पठान ने फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसी साल उन्हें मस्जिद बंदर के पास मुर्गी मोहल्ले में दंगा करने के आरोप में दोबारा गिरफ्तार किया गया था।

मुंबई और औरंगाबाद में हुई कई डकैतियों में मेहदी की संलिप्तता से चिंतित पठान ने उसके कराची भागने का इंतजाम किया। पठान खुद 1993 में कराची में छिपा हुआ था। हालांकि, यह योजना सफल नहीं हुई, क्योंकि पठान का छोटा शकील से झगड़ा हो गया।

मेहदी 1996 में दुबई भाग गया क्योंकि उसे डर था कि शकील पठान से बदला लेने के लिए उसकी हत्या कर सकता है। छब्बीस वर्षीय मेहदी आखिरकार 1998 में मुंबई लौटा। जल्द ही उसे कुर्ला में एक स्कूल शिक्षिका की बेटी से प्यार हो गया, जिससे उसने शादी कर ली। उसी वर्ष, उसे मध्य मुंबई के शालीमार होटल के पास कपूर ज्वैलर्स में हुई गोलीबारी में संलिप्तता के आरोप में गिरफ्तार किया गया। इसी हमले ने मुंबई के अंडरवर्ल्ड के उच्च स्तर पर उसकी प्रतिष्ठा स्थापित की।

महाराष्ट्र आंतरिक सुरक्षा अधिनियम (एमआईएसए) को अपराध पर अंकुश लगाने के लिए लागू किया गया था। सरकार की मंशा नेक थी, लेकिन अंततः इसने गैंगस्टरों को एकजुट कर दिया।

बायकुला कंपनी के नाम से मशहूर रामा नाइक को गिरफ्तार कर कल्याण जेल में बंद कर दिया गया। जल्द ही तिलक नगर के राजन नायर उर्फ बड़ा राजन भी उनके साथ

शामिल हो गए। दोनों को मीसा के प्रावधानों के तहत गिरफ्तार किया गया।

जेल में संपर्क बनाने के इसी प्रयास के माध्यम से रामा नाइक का संपर्क अंडरवर्ल्ड डॉन वरदराजन मुदलियार से हुआ, जिसके साथ बड़ा राजन के करीबी माने जाते थे।

After their release, Bada Rajan frequented Lal Vite ki Chawl in Byculla to meet Rama Naik. He was often accompanied by Chhota Rajan, Abdul Kunju, Ramesh Sharma alias Gunga, Raju Sharma alias Chikna, Ganeshsingh Bhist alias Danny, Kamlakar Adangle, Ashok Kunder, Deva, Ravanya and Domnic.

रामा नाइक और उसके साथियों ने चेंबूर के तिलक नगर का दौरा किया और वहां शरण ली।

चेंबूर में एक गंभीर अपराध के सिलसिले में वांछित होने के दौरान छोटा राजन एक साल से अधिक समय तक रामा नाइक के परिवार के साथ रहा। उसके कई साथियों ने दगड़ी चॉल में छिपने के लिए सुरक्षित स्थान पाया।

इस गिरफ्तारी ने गैंगस्टरों को अपने प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ अपनी ताकत आजमाने का मौका भी दिया। शशि रसम ने जेल में अपनी धमकियों भरी रणनीति से कई विरोधियों का गुस्सा मोल लिया था।

जेलें वह मिलन स्थल बन गई थीं जहां रिहाई के बाद गैंगस्टरों के बीच लंबे समय तक चलने वाली दोस्ती विकसित होती थी।

मिर्ची

इकबाल मिर्ची शहर में अपने तस्करी और मादक पदार्थों के कारोबार के लिए अंडरवर्ल्ड की बाहुबल का इस्तेमाल करने वाले पहले लोगों में से एक था। इकबाल मोहम्मद मेमन के रूप में जन्मे, उन्होंने अपने पूर्वजों के कारण इकबाल मिर्ची नाम अपनाया, जो मिर्च पाउडर का व्यापार करते थे।

मुंबई पुलिस की एंटी-नारकोटिक्स सेल को मिर्ची के सुसंगठित गिरोहों का पता चला और पठान नियाज़ खान को 1982 में वापी से गिरफ्तार किया गया।

यह छापेमारी की एक लहर की शुरुआत थी। माहिम के पास सैफी बिल्डिंग में मिर्ची के ठिकाने से 125 किलोग्राम हशीश जब्त होने के बाद, इस मायावी तस्कर ने अपना ठिकाना अलीबाग और गुजरात के सौराष्ट्र तट के खुले इलाकों में स्थानांतरित कर लिया।

सिलसिलेवार बम धमाकों के बाद जब पुलिस ने तस्कर पर शिकंजा कसा, तो मिर्ची ने कथित तौर पर रियल एस्टेट के कारोबार में कदम रखा। वर्ली सी फेस स्थित जहाज़ मंज़िल और होटल आशिमा उस समय उसकी कुछ प्रमुख संपत्तियों में शामिल थे। अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि मिर्ची यूरोप में छिपा हुआ है।

Mohan Devadiga

मोहन देवदिगा, जो गैंगस्टर छोटा राजन का सहयोगी था, 1997 में उल्हासनगर कोर्ट के बाहर ले जाते समय पुलिस की गोलीबारी में भाग निकला था।

Mohan Kotian

तिलक नगर के रहने वाले और छोटा राजन के पूर्व सहयोगी कोटियन ने कथित तौर पर 1997 में प्रतिद्वंद्वी दाऊद इब्राहिम गिरोह में शामिल हो गया था। बालू डोकरे उर्फ 'मिर्ची' को बेंगलुरु में छोटा राजन के पूर्व सहयोगी को खत्म करने का काम सौंपा गया था।

वर्मा 1997 में कोटियन को बैंगलोर से बाहर ले जाने में कामयाब रहे। एक सुनसान राजमार्ग पर डोकरे ने पीड़ित पर बार-बार चाकू से हमला किया और कई घावों के कारण उसकी मौत हो गई।

Muchchad

भारत का सबसे वांछित गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम अपनी घनी मूंछों के कारण मुच्चद के नाम से भी जाना जाता है।

मम्मी (सुश्री आशा गाव्लि)

जुबेदा मुजावर अभी स्कूल में ही पढ़ रही थीं जब वह 1980 के दशक की शुरुआत में पुणे के पास वडगांव पीर गांव से छुट्टियों में मुंबई के दगड़ी चॉल में अपनी बहन से मिलने आई थीं।

उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनकी शादी पड़ोसी अरुण गावली से होगी, जो रामा नाइक और बाबू रेशिम के नेतृत्व वाली बायकुला कंपनी के एक प्रमुख सदस्य थे। नई दुल्हन को आशा गावली के नाम से जाना जाने लगा और बाद में मम्मी के नाम से, जब उनके पति कंपनी के डॉन और 'डैडी' बन गए।

मुर्गा (कॉक)

'नागपाड़ा जा कर मुर्गा ले लेना' सुनकर कोई पुलिसवाला या आम आदमी क्या समझेगा? गैंगस्टरों की भाषा में मुर्गा का मतलब दोपहिया वाहन होता है। दाऊद इब्राहिम का भरोसेमंद लेफ्टिनेंट मोहम्मद कंजारी अपने आदमियों से बात करते समय अक्सर इन शब्दों का इस्तेमाल करता था।

Musafirkhana

दाऊद इब्राहिम और उसके बड़े भाई शब्बीर ने दरअसल मुसाफिरखाना में स्थानीय स्तर पर बनी सिंथेटिक साड़ियों पर नकली विदेशी मुहरें लगाकर शुरुआत की थी।

डॉन हाजी मस्तान उर्फ हाजीभाई की नज़र उनकी इस कला पर तब पड़ी जब अन्य व्यापारियों ने उन्हें बताया कि दो नाबालिग और एक बुजुर्ग व्यक्ति मुसाफिर-खान के बाहर नकली साड़ियाँ बेच रहे हैं। यह घटना 1970 के दशक के आरंभिक वर्षों में घटी।

हाजीभाई के आदमियों ने फर्जी साड़ी घोटाले से जुड़े रहस्य का पता लगाने से पहले एक गुप्त जांच शुरू की, जिसके बाद डोंगरी के पठानवाड़ी में दो नाबालिगों और एक पूर्व नगर निगम गार्ड का सुराग मिला।

गाड़ियों का एक काफिला पठानवाड़ी की संकरी गलियों में तेज़ी से घुस गया। हाजीभाई और उनके गुंडों ने नगर निगम के गार्ड को घेर लिया, जो सौभाग्य से बाल-बाल बच गया, जैसा कि उसे आज भी याद है।

तीनों ने कबूल किया कि उन्होंने साड़ियां गुजरात के सूरत से सस्ते दामों पर खरीदी थीं। उन्होंने नकली मुहरों का इस्तेमाल करके उन्हें आयातित उत्पाद बताकर बेच दिया।

सरगना ने तीनों को समझाया कि उनके दुराचार से मुसाफिरखाना और उससे सटे मनीष बाजार की बदनामी हो रही है, जो दक्षिण मुंबई में तस्करी की गतिविधियों का केंद्र माना जाता है। दोनों बच्चों को तस्करों के लिए कमीशन पर काम करने की पेशकश की गई।

उसी समय दाऊद इब्राहिम का परिचय आयातित वस्त्रों से हुआ। बोस्की नामक एक प्रकार का शर्टिंग फैब्रिक एक गज के हिसाब से उन्हें लगभग 55 रुपये मिलते थे। जल्द ही उन्होंने ट्राउजर के लिए लोकप्रिय स्ट्रेचलॉन को भी अपनी बिक्री सूची में शामिल कर लिया। एक पीस 90 रुपये में बिकता था। लेकिन दाऊद की असली कमाई तब हुई जब उन्हें ओमेक्स घड़ियों की बड़ी खेप मिली, जिन्हें बिस्कुट भी कहा जाता था, क्योंकि उनके कई मॉडल देखने में बिस्कुट जैसे लगते थे। इन घड़ियों की कीमत उन्हें प्रति घड़ी 350 रुपये मिली।

मुसाफिरखाना और मनीष मार्केट के कई व्यापारी आज भी दाऊद इब्राहिम को एक बेहद चतुर व्यापारी के रूप में याद करते हैं।

मुत्तप्पा राय

मुत्तप्पा राय को 29 मई, 2002 को दुबई से प्रत्यर्पित किए जाने से पहले कर्नाटक राज्य पुलिस द्वारा वांछित घोषित किया गया था। रिकॉर्ड से पता चलता है कि उसने श्रीधर मूर्ति को निशाना बनाने के लिए मुंबई के एरिक डिसूजा को काम पर रखा था।

एम3 गैंग

श्यामकिशोर गरिगापत्ती एम-3 गिरोह का सरगना बन गया, जिसमें मिलिंद शेजवाल, मिलिंद सोनावाने और मिलिंद शिंदे शामिल थे, जो सभी घाटकोपर पश्चिम के भीम नगर

की झुग्गी बस्ती से काम करते थे।

गरिगापत्ती की गिरफ्तारी के बाद गिरोह भंग हो गया। सरगना सुभाष सिंह ठाकुर के साथ मिल जाने के बाद और भी गंभीर अपराधों की ओर बढ़ गया।

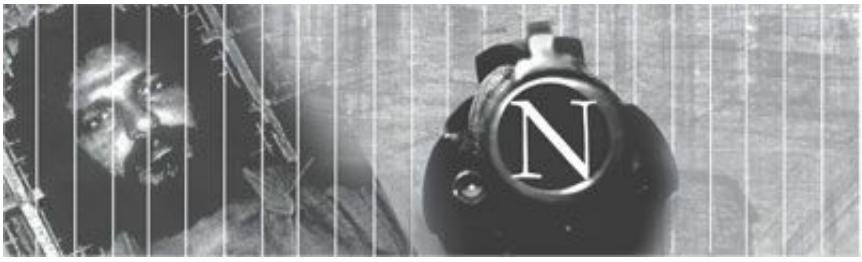

जहां बैंड

गोलीबारी के बाद हमलावर आमतौर पर अपनी निजी कारों का इस्तेमाल करने से बचते हैं, क्योंकि उन्हें पता होता है कि पुलिस ने उनकी संख्या जान ली है और वे जल्द ही घेराबंदी में फंस जाएंगे। अक्सर, सहायक दल के साथ कई भागने वाले वाहन होते हैं। लेकिन सबसे आसान तरीका है इंतज़ार कर रही टैक्सी या स्थानीय उपनगरीय ट्रेन में बैठना, जो अधिकांश हमलावर वर्षों से करते आ रहे हैं।

नानकताई

वरिष्ठ कांस्टेबल इब्राहिम कास्कर उस समय बॉम्बे पुलिस की पठान शाखा में काफी प्रभावशाली व्यक्ति थे, जो अब एक विशिष्ट अपराध शाखा है। उन्हें डोंगरी और आसपास के इलाकों की पूरी जानकारी थी।

डोंगरी के बुजुर्गों का कहना है कि अगर इब्राहिम कास्कर को चाय के साथ नमकीन बिस्कुट खाते हुए देखा जाता था, तो लगभग निश्चित था कि अगले 24 घंटों में किसी की हत्या हो जाएगी। शक की सुई अक्सर दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों की ओर इशारा करती थी।

शबीर और दाऊद बड़ी चालाकी से असली सामान को नकली सामान से बदलने के 'पलटी' के धंधे में माहिर थे। लेकिन उनके पास इतना पैसा भी था कि वे अपने इशारों पर हत्याएं करवाने के लिए सुपारी किलर रख सकें।

नौ (Nu)

नौ, या अधोलोक में नौ, अक्सर पुलिसकर्मी को संदर्भित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। यह नाम, कई अन्य नामों की तरह, चाइना पेटी के खेल के दौरान उत्पन्न हुआ था।

Nikal Le (Get Lost)

“खैर, दिलीप भाई। बहुत दिनों बाद मिले, कुछ जेब खर्च चाहिए?” मैनुअल डिसूजा उर्फ वकील ने पूछा। कुख्यात गैंगस्टर दिलीप भुवा उर्फ दिलीप भाई ने अपनी ऊपरी जेब से 50 रुपये का नोट निकाला और वकील मैनुअल की हथेली पर थमाते हुए कहा, “निकल ले (दफा हो जा)”।

चुपचाप गायब हो जाने के बजाय, वकील ने चिल्लाकर कहा, "अशोक जोशी की जय।" मैनुअल को इस बात की जानकारी नहीं थी कि भुवा, उत्तरी मुंबई के कंजर मार्ग में सक्रिय अशोक जोशी गिरोह के गुट से अलग हो गया था और डोला, भुवा और छह अन्य लोग गिरोह का सफाया करने के लिए चुपके से कंजर गांव में घुस गए थे।

अगले ही पल, भुवा की सहयोगी माया डोलास द्वारा चलाई गई एक गोली वकिल को करीब से भेद गई।

यह 17 सितंबर, 1989 की बात है। भुवा और डोलास द्वारा एक समय के शांत गांव में अंधाधुंध गोलीबारी करने के बाद पांच निर्दोष लोगों की जान चली गई।

Nilesh Kokam

मुंबई में एक दर्जन से अधिक हत्याओं में नामजद छोटा शकील का करीबी सहयोगी कोकम, राजेश मोरे और बिजू बंगाली के साथ मिलकर एक घातक गिरोह बनाता था। 20 मई 2000 को मुठभेड़ में उसकी मौत हो गई।

नीता नाइक

गैंगस्टर अश्विन नाइक, जिनकी पत्नी नीता बाद में नगर निगम पार्षद बनीं, ने मुंबई का डॉन बनने का सपना नहीं देखा था। अश्विन विदेश में पढ़ाई पूरी करने के बाद इंजीनियर बनने की योजना बना रहे थे। नीता सोफिया कॉलेज से पढ़ाई पूरी करने के बाद इंटीरियर डिजाइनर बनना चाहती थीं। लेकिन एक सामान्य जीवन जीने के उनके सपने तब चकनाचूर हो गए जब अश्विन पर प्रतिद्वंद्वी गिरोह ने हमला कर दिया, क्योंकि वह कुख्यात गैंगस्टर अमर नाइक के छोटे भाई थे। अश्विन बच तो गए, लेकिन उन्हें व्हीलचेयर पर बैठना पड़ा।

लेकिन अमर की 1997 में पुलिस मुठभेड़ में मौत के बाद अश्विन ने गिरोह का नेतृत्व संभाल लिया। नीता का सुखमय घरेलू जीवन का सपना भी चकनाचूर हो गया।

अश्विन फरार था और तिहाड़ जेल में उसकी कैद के बाद, नीता को गिरोह की गतिविधियों का समन्वय करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इसी बीच नीता शिवसेना के टिकट पर नगर निगम पार्षद चुनी गईं। इसी दौरान उनका नाम मुख्यमंत्री के पुलिस अंगरक्षक लक्ष्मण ज़ीमान के साथ प्रेम प्रसंगों में जुड़ गया।

यह तो तय था कि नाइक को उसकी पत्नी और जिमान के अफेयर की खबर मिल ही जाएगी।

कुछ सप्ताह बाद, 13 नवंबर, 2000 को लोअर परेल में चौथी मंजिल पर स्थित अपने आवास के बाहर नीता की गोली मारकर हत्या कर दी गई। विकलांग अश्विन अभी भी डॉन बना हुआ था।

Nizam Konkani

1980 के दशक के मध्य में, निज़ामुद्दीन मोहम्मद कादरी उर्फ निज़ाम कोंकणी डोंगरी की संकरी गलियों में कुख्यात था। लगभग उसी समय, उस समय के नवोदित अपराधी दाऊद इब्राहिम का नाम इलाके में कुछ छोटे-मोटे अपराधों में सामने आया था।

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, निज़ाम कोंकणी ने अपने छिपने के ठिकाने से उसे गिरफ्तार करने की कोशिश कर रहे दो कांस्टेबलों और एक अधिकारी पर चाकू से हमला किया। हवलदार मोरे की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कांस्टेबल राणे कई घावों के बावजूद बाल-बाल बच गए। अधिकारी घटनास्थल से फरार हो गए।

कुछ समय बाद, निज़ाम भी देश छोड़कर चले गए, क्योंकि उन्हें डर था कि उन्हें एक फर्जी मुठभेड़ में मार दिया जाएगा।

निज़ाम किसी तरह दुबई में प्रवेश करने में कामयाब रहा और जल्द ही दाऊद से नौकरी की गुहार लगाई। उसके एक पूर्व कनिष्ठ ने उसे ड्राइवर की नौकरी की पेशकश की। 26 अगस्त, 1998 को डॉकयार्ड रोड के पास प्रदीप सावंत के नेतृत्व वाली एक टीम के साथ मुठभेड़ में निज़ाम मारा गया। प्रदीप सावंत उस समय सहायक पुलिस आयुक्त थे।

शून्य (नकली)

गैंगस्टर अबू सलेम एक नाकाबिल है। दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों ने यही कहा था जब उसे 2005 में पुर्तगाल से निर्वासित कर बायकुला के आर्थर रोड जेल में हिरासत में लिया गया था।

डी-कंपनी के शीर्ष सहयोगी उस समय थोड़े चिंतित हो गए जब उन्होंने सलेम को जेल में रोते हुए पाया। पूछताछ के दौरान वह अक्सर मानसिक रूप से टूट जाता था। डी-कंपनी को लगा कि सलेम को रोने के बजाय एक असली डॉन की तरह व्यवहार करना चाहिए था। उस गैंगस्टर से साहसी होने की उम्मीद थी।

अंडरवर्ल्ड के हलकों में यह धारणा जोर पकड़ रही थी कि दबाव में आकर सलेम टूट सकता है और विभिन्न गिरोहों के बारे में जानकारी उजागर कर सकता है।

लेकिन उस गैंगस्टर ने बॉलीवुड अभिनेत्रियों और अभिनेताओं के साथ अपने संबंधों के बारे में कुछ रोचक बातें बताकर इस मुश्किल से खुद को बचा लिया। वह कुछ वकीलों के करीब आ गया था, जिनमें एक महिला वकील भी शामिल थी।

सलेम का मामला कोई इकलौता मामला नहीं है। फयीम मचमच या छोटा शकील जैसे कई अन्य बड़े गैंगस्टर भी हैं, जिन्हें कभी क्राइम ब्रांच के अधिकारियों की टीम का सामना नहीं करना पड़ा।

Number Chadana (The SIM game and Manchekar)

"मैं दादा से मिला। मैं कल घर लौट रहा हूँ," संतोष नायक उर्फ महाराज ने अपनी पत्नी अवंतिका से फुसफुसाते हुए कहा।

इन शब्दों ने सहायक पुलिस निरीक्षक रविंद्र आंग्रे को व्याकुल कर दिया। पूर्व बैंक अधिकारी समानांतर लाइन पर नाइक की बातचीत सुन रहे थे। महाराज को जरा भी अंदाजा नहीं था कि ये कुछ शब्द हाल के वर्षों की सबसे सनसनीखेज तलाशी और मुठभेड़ों में से एक को जन्म दे सकते हैं। निशाना था: कुख्यात गैंगस्टर सुरेश मांचेकर।

आंग्रे को 2002 में ठाणे की जबरन वसूली विरोधी प्रकोष्ठ में नियुक्त किए जाने से पहले ही मांचेकर ने आतंक का राज कायम कर रखा था। परेल में बिल्डर महेंद्र खानविलकर और कल्याण में डॉ. दीपक शेट्टी की दिनदहाड़े हुई हत्याओं ने जिले के कारोबारी समुदाय में दहशत फैला दी थी।

सितंबर 2002 में ठाणे में एक मुठभेड़ में मांचेकर के सहयोगी प्रकाश उतेकर की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। लेकिन इस हत्या से गिरोह के कामकाज पर कोई असर नहीं पड़ा और न ही जिले में बिल्डरों और व्यापारियों को होने वाले खतरों में कोई कमी आई।

रिश्तेदारों और सहयोगियों के टेलीफोन नंबरों का मिलान करने के बाद, पुलिस इस निष्कर्ष पर पहुंची कि दिलीप सोनावाने उन्हें मांचेकर तक पहुंचा सकता है। महाराज, जिसे भाऊ के नाम से भी जाना जाता था, 2002 के अंत में पहले से ही पुलिस की निगरानी सूची में था और उसके नंबर पर भी नजर रखी जा रही थी।

एक स्पष्ट पैटर्न सामने आया। लगभग सभी फोन कॉल महाराज से जुड़े हुए थे और सभी समझौते उन्हीं के माध्यम से किए गए थे।

अंगरे का काम और भी मुश्किल हो गया जब उसके मुखबिरों ने उसे बताया कि उन्होंने महाराज को कभी नहीं देखा था। उस रहस्यमय व्यक्ति का कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं था।

म्यूट टेलीफोन लाइनों पर बातचीत और धमकियां रिकॉर्ड होती रहीं, लेकिन पुलिस को मांचेकर या उसके रहस्यमय दाहिने हाथ महाराज तक ले जाने के लिए कुछ भी पर्याप्त सबूत नहीं मिला।

"महाराज बीपीएल नंबर का इस्तेमाल कर रहे थे जो 09823 से शुरू होता था। यह फिर से बुरी खबर थी क्योंकि बीपीएल का कोड गोवा और महाराष्ट्र दोनों के लिए एक ही था। जांच की दिशा धीमी पड़ गई," आंग्रे कहते हैं।

रिकॉर्ड की गई बातचीत के प्रिंटआउट का विस्तृत अध्ययन करने के बाद जांचकर्ताओं ने पाया कि सभी कॉल बहुत संक्षिप्त थीं और गोवा के विभिन्न स्थानों से की गई थीं।

मांचेकर ने यह सुनिश्चित किया था कि कोई भी सिम कार्ड दो बार इस्तेमाल न हो। हर बार एक नया प्रीपेड नंबर इस्तेमाल किया जाता था, जिससे बातचीत रिकॉर्ड करना असंभव हो जाता था। कम समय में किसी नंबर पर निगरानी रखना संभव नहीं था। हर हफ्ते एक नया नंबर इस्तेमाल होता था और इस तरह बार-बार रिकॉर्ड मिटते जाते थे।

बाद में, पहेली के टुकड़े सुलझ गए। मांचेकर को टैपिंग सिस्टम की जानकारी थी और उन्होंने एहतियाती उपाय किए थे।

मैनचेकर ने बेलगाम से, जहां वह छिपा हुआ था, कभी फोन नहीं किया। वह महाराष्ट्र-कर्नाटक सीमा पर स्थित इस शहर में अपने घर से सप्ताहांत में गोवा जाता था ताकि फोन कर सके और अपने सहयोगियों से संपर्क कर सके।

इस पूरे षड्यंत्र के सूत्रधार ने गोवा की 110 किलोमीटर की यात्रा के दौरान अपना मोबाइल फोन बंद रखा। वह जानता था कि यात्रा के दौरान फोन का इस्तेमाल करने से उसकी लोकेशन का पता चल सकता था और पुलिस उसे ढूंढने में मदद कर सकती थी। 15 अगस्त 2003 को कोल्हापुर में मांचेकर की गोली मारकर हत्या कर दी गई। बाद में आंग्रे के आदमियों ने महाराज को गिरफ्तार कर लिया।

Number Chhodna

गैंगस्टर छोटा राजन के प्रमुख सहयोगी नितिन सावंत ने 2004 में ठाणे में बिल्डरों के बीच आतंक मचा रखा था। उसने उनसे सुरक्षा राशि के रूप में भारी मात्रा में वसूली की थी।

कुख्यात सावंत, गुरु सतम, विनोद मतकर और रोहित वर्मा जैसे निशानेबाजों के साथ राजन के करीबी गिरोह का सदस्य था। वर्मा की 2000 में हुई मौत के बाद वह गिरोह जगत में ऊपर चढ़ गया था।

मुठभेड़ विशेषज्ञ रविंद्र आंग्रे ने सावंत को जाल में फंसाने की योजना बनाई। एक बिल्डर बनकर उन्होंने एक नकली व्यक्ति के माध्यम से सावंत को अपना मोबाइल नंबर दिया।

यह चाल कारगर साबित हुई। अगले कुछ दिनों में उसे सावंत के फोन आने लगे। अंगरे ने डरने का नाटक किया, लेकिन वादा किया कि संपत्ति बिक जाने के बाद वह पैसे चुका देगा।

अंगरे ने पहली किस्त श्रीलंका भेजी, जहां सावंत छिपा हुआ था। सावंत शेष राशि लेने के लिए चुपके से मुंबई पहुंचा और 16 सितंबर, 2004 को उसकी गोली मारकर हत्या कर दी गई।

Paanch (Five)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'पाँच' का अर्थ है जहाज। यह शब्द 1970 के दशक की शुरुआत में प्रचलित हुआ था, जब तस्करी अंडरवर्ल्ड की मुख्य गतिविधियों में से एक थी। बोस्की वस्त्र, सोना, घड़ियाँ जैसी वस्तुओं की समुद्री तस्करी की जाती थी।

धन्यवाद (25)

चाइना पेटी का एक अन्य उत्पाद, पचिस, एक पुलिस कांस्टेबल को दर्शाता है।

Paidal

हत्या या लूटपाट के बाद आप क्या करते हैं? आप भाग जाते हैं। (हिंदी में इसका अर्थ पैदल चलना होता है) लेकिन असल में इसका मतलब होता है 'घटना के बाद दफा हो जाना'। 'चलपैदल हो जा' अंडरवर्ल्ड में अक्सर इस्तेमाल होने वाला मुहावरा है।

पाकमोडिया स्ट्रीट (दाऊद का अड्डा)

पाकमोडिया स्ट्रीट पर कमरा नंबर 33, दाऊद इब्राहिम का लगभग एक दशक तक ठिकाना रहा, जब उसे पहली बार 1975 में मस्जिद बंदर के पास मांडवी में एक बैंक की लूट के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था।

अगले कुछ वर्षों तक, दाऊद ने जर्जर पुरानी इमारत की पहली मंजिल के तंग कमरे का इस्तेमाल अपने गुप्त गतिविधियों को अंजाम देने के लिए किया। उसका साथी छोटा शकील बगल की टेमकर स्ट्रीट पर स्थित अपने दफ्तर 'शम्स' से काम करता था। यह गिरोह पाकमोडिया स्ट्रीट जंक्शन पर मिलता था। उन दिनों की अधिकतर गतिविधियाँ तस्करी से संबंधित थीं।

सलीम यामाहा, जिन्हें दाऊद को अपनी यामाहा 350 बाइक पर सवारी कराने के बाद यह उपनाम मिला, याद करते हैं कि गिरोह जावा, येज़दी, एनफील्ड और यामाहा बाइकों पर इलाके में घूमता था।

12 फरवरी 1982 को दाऊद के बड़े भाई शब्बीर की प्रतिद्वंद्वी पठान अमीरजादा और उसके साथियों द्वारा गोली मारकर हत्या कर दिए जाने के बाद पाकमोडिया का घर अंडरवर्ल्ड की गतिविधियों का केंद्र बन गया। दाऊद के गिरोह ने पठान को खत्म करने की कसम खाई और रणनीति पर चर्चा करने के लिए यहीं बैठक की।

पामग्रोव पार्टी

वरदराजन मुदलियार पुलिस की कार्रवाई की मार झेल रहे थे। रिश्वत और धमकियों के तरीके नाकाम हो चुके थे।

हताश वर्दाभाई ने अंडरवर्ल्ड और पुलिस के गठजोड़ को उजागर करने के लिए एक योजना सोची, जिसके तहत उन्होंने उन दोनों को एक-दूसरे के बेहद करीब दिखाते हुए वीडियो कैसेट प्रसारित करने का फैसला किया।

12 दिसंबर 1984 को जुहू स्थित होटल पामग्रोव में एक पार्टी का आयोजन किया गया था।

समारोह के दौरान फिल्माए गए वीडियो रिकॉर्डिंग में पूर्व कोरोनर, सरकारी अस्पतालों से जुड़े डॉक्टर, दो सेवानिवृत्त मजिस्ट्रेट और पुलिसकर्मियों जैसे सम्मानित नागरिक नई दिल्ली स्थित एक अपराधी के साथ मेलजोल करते हुए दिखाई दिए।

आमंत्रित लोगों में से अधिकांश अपने परिवारों के साथ आए थे, और उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि पार्टी की फिल्मिंग की जा रही है।

चार महीने बाद, 15 अप्रैल 1985 को, गुप्तचरों ने गुमनाम रूप से पार्टी की वीडियो रिकॉर्डिंग भेजना शुरू कर दिया।

वर्दाभाई वापसी के लिए ज़मीन तैयार कर रहे थे।

नकली सामान से महंगे सामान को बदलना (पलटी)

दाऊद इब्राहिम की गरीबी से अमीरी तक की कहानी की शुरुआत असली सामान को नकली सामान से बदलने की उसकी निपुणता से हुई, जिसे वह बड़ी चालाकी से करता था, जिसे अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'पलटी' कहा जाता है। 1970 के दशक में, इसे तस्करों का बुनियादी कौशल माना जाता था।

दाऊद भीड़भाड़ वाले मुसाफिरखाना बाजार में ग्राहकों को ठगता था। पीड़ित को जरा भी अंदाजा नहीं होता था कि चालाक युवक बातचीत में उलझकर महंगी वस्तुओं को बदल देता था। फिर, खरीदार को कहा जाता था कि मॉल में पैकेज न खोलें क्योंकि पुलिस गश्त पर है।

लेकिन पलटी का धंधा दाऊद को ज्यादा देर तक आकर्षित नहीं कर पाया और उसने छोटे-मोटे तस्करों से चुराए गए विदेशी सामान बेचने का काम शुरू कर दिया।

पंच (प्रत्यक्षदर्शी)

दाऊद इब्राहिम का 'दूसरी दुनिया' से पहला सामना, जो बाद में उसकी अपनी दुनिया बनने वाली थी, पुलिस के एक भाड़े के 'पंच' या चश्मदीद गवाह के रूप में हुआ था।

पंच के रूप में, वह शुरू में पुलिस के करीब हो गए और बाद में उन अपराधियों से मिलने के लिए दूसरी तरफ चले गए जिनके खिलाफ वह गवाही दे रहे थे। अंततः, 1970 के दशक के अंत में, उन्होंने बाद वालों का साथ चुना।

Pant Piece Aur Dhaga

सुरेश मांचेकर के सहायक संतोष नायक उर्फ महाराज ने निशानेबाज किसान शिंदे उर्फ मैनेजर से पूछा, 'पैंट का टुकड़ा और धागा मिल गया क्या?'

'पैंट पीस' का मतलब बंदूक और 'थ्रेड' का मतलब गोलियां था। मांचेकर गिरोह के सदस्य बिल्डर महेंद्र खानविलकर की हत्या की गुप्त योजना बना रहे थे। 22 मार्च 2002 को दिनदहाड़े परेल स्थित उनके पहले माले के कार्यालय में खानविलकर की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

शुरू में, अंडरवर्ल्ड की शब्दावली हास्यास्पद लगी और अपराध शाखा के अधिकारियों को इस पहेली को सुलझाने में थोड़ा समय लगा।

कागज (भक्ति इंक द्वारा जारी किए गए जाली नोट)।

भुज पुलिस को उस समय आश्चर्य नहीं हुआ जब पाकिस्तानी तस्कर मोहम्मद हुसैन ने कबूल किया कि वह मुंद्रा बंदरगाह से आफताब भटकी के लिए रवाना हुआ था।

अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम का करीबी सहयोगी, भाटकी जाली नोटों या 'कागज' के कारोबार में माहिर है, जो वर्षों से देश में आ रहे हैं।

भटकी, डी कंपनी के मुख्य सूचना स्रोतों में से एक है। वह जो नकली मुद्रा सप्लाई करता है, उसका अधिकांश हिस्सा मुंबई और गुजरात में अंडरवर्ल्ड की गतिविधियों को फंड करने में इस्तेमाल होता है।

He is called 'Bhatki' as hails from Bhatkal in North Karnataka.

परेल गैंग की स्टीम (रेलवे के आधुनिकीकरण के साथ सतम ने अपनी गति कैसे खो दी)।

परेल माफिया का विकास भाप से चलने वाली शक्ति के कारण हुआ, क्योंकि इसकी शुरुआत पास की रेलवे कार्यशाला में मरम्मत के लिए आए पुराने भाप इंजनों से चुराए गए तांबे और पीतल के छोटे-छोटे टुकड़ों से हुई थी।

यह कोई बुरा पैसा नहीं था। पीतल आठ रुपये प्रति किलो और तांबा लगभग दस रुपये प्रति किलो बिकता था। 1970 के दशक की शुरुआत में लुटेरों के गिरोह प्रतिदिन लगभग 2000 रुपये कमा लेते थे।

1975 तक, कार्यशाला में तांबे और पीतल का उपयोग बहुत बढ़ गया था। धातु की 'माल गिराना' यानी चोरी-छिपे चोरी करना भी उसी अनुपात में बढ़ गया, जिससे गिरोह को प्रतिदिन 30,000 रुपये से लेकर 1.5 लाख रुपये तक की भारी कमाई होने लगी। वे एक्सल बॉक्स से लगभग 112 किलोग्राम वजनी तांबे के बड़े-बड़े टुकड़े निकालकर कार्यशाला से बाहर तस्करी करते थे। रेलवे पुलिस गार्ड इस पर ध्यान नहीं देते थे; लूट में उनका हिस्सा पक्का था।

कार्यशाला से माल साइकिलों और टैक्सियों द्वारा ले जाया जाता था। माल के कम से कम चार निश्चित खरीदार थे। लेकिन जब माल की मात्रा बढ़ गई, तो स्थानीय गुंडा पांड्या पावले और उसका दाहिना हाथ गुरु सतम भी इसमें हिस्सा लेने लगे।

जल्द ही, प्रतिद्वंद्वी पापा नायर और उनके छोटे भाई बुदग्या ने सत्ता के बंटवारे के लिए पावले से लड़ाई शुरू कर दी। लड़ाई भयंकर हो गई - पावले और गुरु सतम ने नायर और बुदग्या को मार डाला। कुछ समय बाद, 1988 में सतम ने परेल की कोम्बडी गली के पास पावले की चाकू मारकर हत्या कर दी।

सतम तांबे के कारोबार का सरगना बन सकता था, लेकिन भाप इंजनों का चलन बंद हो गया और उसकी किस्मत पलट गई। उसने अपना अड्डा पास के करदार गैराज में स्थानांतरित कर लिया।

Party Se Meeting Kar Lo (Kill Him)

छोटा राजन के प्रमुख सहयोगी राजू नालौड़े को गिरोह का 'हैंडलर' नियुक्त किया गया था, जो कि अंडरवर्ल्ड में समन्वयक के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द है, क्योंकि 1992 के मध्य में भांडुप में शिवसेना पार्षद किम बहादुर थापा की हत्या के सिलसिले में गिरफ्तार और हिरासत में लिए जाने के बाद वह वरिष्ठ पद पर था।

नलवाडे ठाणे जिले के उल्हासनगर में एक नगर निगम पार्षद की हत्या करवाना चाहता था। यह काम कुख्यात हत्यारे बालू डोकरे और उसके साथियों को सौंपा गया था।

डोकरे के नेतृत्व में एक हत्यारा दस्ता उल्हासनगर भेजा गया ताकि लक्ष्य की पहचान की जा सके।

किसी भी गोलीबारी की सफलता दर्शकों द्वारा किए गए शोध पर निर्भर करती है।

"भाई पार्टी से मीटिंग कर लो," नलवाडे ने डोकरे से कहा, जिसका अंडरवर्ल्ड की भाषा में अनुवाद है, 'उसे मार डालो।'

स्थानीय पार्षद गोपाल राजवानी की 26 जनवरी, 1998 को एक स्थानीय अदालत के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। लेकिन हमलावरों को जल्द ही एहसास हो गया कि उन्होंने गलत आदमी को मार डाला है।

राजन बेहद क्रोधित था। लेकिन डोकरे और नलवाडे उसके सबसे भरोसेमंद लेफ्टिनेंटों में से थे और वह उन्हें दंडित नहीं कर सकता था।

बाद में डॉन को पता चला कि डोकरे और नलवाडे को राजवानी की हत्या के लिए गुमराह किया गया था। मुखबिर के खिलाफ मौत का वारंट जारी किया गया।

इसी बीच राजन ने विशाल ढाकन उर्फ विक्की को हत्या को अंजाम देने का आदेश दिया। लेकिन उसे और तीन अन्य लोगों को दो एके 47 राइफलों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया, जो उसे लक्ष्य को खत्म करने के लिए दी गई थीं।

पौ टाकला

दाऊद इब्राहिम के दूसरे नंबर के कमांडर शकील मोइनुद्दीन बाबू शेख को उनके प्रतिद्वंद्वी 'पौ तकला' के नाम से भी जानते हैं। यह नाम, जिसका शाब्दिक अर्थ 'चौथाई गंजा' है, उनके झड़ते बालों के कारण पड़ा।

भुगतान कर देना (ठेके पर हत्या)

25 नवंबर, 2002। रविवार की दोपहर थी और कैदी जेल की कोठरी में क्रिकेट मैच के बाद सफाई में व्यस्त थे। छोटा राजन का मुख्य साजिशकर्ता ओम प्रकाश सिंह भी नासिक जेल के शौचालय में मौजूद था।

छह फीट से अधिक लंबे सिंह को छह लोगों ने जमीन पर गिरा दिया और गला घोंटकर उनकी हत्या कर दी। मुंबई की आर्थर रोड जेल से अचानक नासिक स्थानांतरित किए गए छोटा राजन गिरोह के तेरह सदस्यों ने उनकी हत्या की थी।

गिरोह के सरगना ने अपने लेफ्टिनेंट डी. के. राव को निर्देश दिया था, ''पार्टी को भुगतान कर दो''। गिरोह के सदस्यों के बीच ओपी उर्फ विल्सन की लोकप्रियता ने राजन को असुरक्षित महसूस कराया, क्योंकि इससे उसकी स्थिति खतरे में पड़ गई थी।

बाद में सिंह की पत्नी मीनाक्षी ने कहा, "यह छोटा राजन गिरोह के सदस्यों द्वारा की गई एक निर्मम, पूर्व नियोजित हत्या है।"

Peela (Gold)

मुंबई के अंडरवर्ल्ड में लगातार मिल रही छोटी-मोटी सफलताओं से प्रेरित होकर दाऊद ने पीला (सोना) या 116 (स्विस सोने के बिस्कुट का कोड नाम) की तस्करी शुरू कर दी। उसने 1970 के दशक के उत्तरार्ध में अपने पूर्व गुरु हाजीभाई और दमन स्थित तस्कर सुकुर नारायण भाकिया से इस धंधे की बारीकियां सीखीं।

1983 तक, दक्षिण मुंबई के पाकमोडिया स्ट्रीट का यह युवक दुबई से सोने की तस्करी (पीला या टुकड़ा) के धंधे में एक जाना-माना नाम बन चुका था। मध्य मुंबई के शुक्लाजी स्ट्रीट के आसपास रहने वाले मारवाड़ी व्यापारी इस तस्करी के माल के

सबसे बड़े खरीदारों में से थे। वे बदले में शहर भर में फैले हुए जौहरियों को यह पीला धातु (सोना) सप्लाई करते थे।

पीला या टुकड़ा (पीस) से होने वाले मुनाफे ने दाऊद को नकली मुद्रा और बाद में रियल एस्टेट के कारोबार में आगे बढ़ने में मदद की।

Pehalwan

मुंबई के अंडरवर्ल्ड में 'पहलवान' संस्कृति की शुरुआत सबसे पहले गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम ने ही की थी।

शिष्य रहते हुए भी दाऊद हमेशा अंगरक्षकों के एक बड़े दल के साथ नजर आता था। खालिद पहलवान, अंजुम पहलवान, शेर सिंह, लम्बू शकील - ये सभी 100 किलो के और छह फुट से अधिक लंबे थे - हमेशा उसके आसपास मौजूद रहते थे ताकि उसके दुश्मनों को डरा सकें।

शुरू में यह चाल कारगर साबित हुई। विशालकाय अंगरक्षकों को देखकर उसके प्रतिद्वंद्वियों के रोंगटे खड़े हो गए। जल्द ही प्रतिद्वंद्वी भी अंगरक्षकों की भर्ती में जुट गए।

इदरीस पहलवान, शिवाजी और अब्बू कालिया उर्फ बॉक्सर जैसे बॉडीबिल्डर प्रतिद्वंद्वी समूहों की संगति में देखे गए।

हालांकि कुछ अंगरक्षक स्थानीय व्यायामशालाओं से थे, लेकिन उनमें से अधिकांश उत्तर भारत के अखाड़ों से थे और बेहतर अवसरों की तलाश में शहर में आकर बस गए थे।

गिरोह के सरगना इन अंगरक्षकों के रखरखाव पर भारी रकम खर्च करते थे। उन्हें पिस्ता, बादाम और चरस (भांग) का आहार दिया जाता था, जिसका सेवन अक्सर जिम

में लंबे व्यायाम सत्रों के दौरान किया जाता था।

हालांकि यह चाल कुछ समय तक कारगर रही, लेकिन जल्द ही इन विशालकाय पुरुषों को 'प्रदर्शन की वस्तु' करार दिया जाने लगा। समय बीतने के साथ यह बात सामने आई कि ये पुरुष शायद ही कभी युद्ध में भाग लेते थे।

पेटी

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'पेटी' का मतलब लाख होता है। यह नाम उन छोटे-मोटे कैश बॉक्स से आया है जिनमें छोटे-मोटे व्यापारी अपना पैसा जमा करते थे।

"Bhai bole to bahut bahari cheej tha. Din me 'peti' kamaneka aur raat tak kharche kar dalne ka na bhai' says Ahmed bhai. (He was dreaded. Sometimes he could earn around Rs 1 lakh a day and spend it by night).

1970 के दशक में एक याचिका का बहुत महत्व होता था। लेकिन उसी समय अंडरवर्ल्ड को यह एहसास हुआ कि वे भ्रष्ट व्यापारियों के लिए काम करके पैसा कमा सकते हैं।

इसके बाद बाटला और उसके गुंडों को छोटे-मोटे व्यापारियों, तस्करों या हवाला संचालकों ने अपने बकाया वसूलने के लिए काम पर रखा। कई लोगों को अंगरक्षक के रूप में इस्तेमाल किया गया और कुछ तो स्थानीय गुंडे भी बन गए।

महिलाओं के प्रति कमजोरी आम बात थी और अक्सर हत्याओं का कारण बनती थी। मुंबई के प्रमुख रेड लाइट एरिया कमाठीपुरा और फलकलैंड में फैले डांसिंग बार और कोठों में रातें लंबी खिंचती थीं।

चाकूबाजी और गली-मोहल्ले की लड़ाइयाँ आम बात थीं। बाटला को अपनी फुर्ती और लड़ाई के कौशल के कारण बढ़त हासिल थी। "अरे ये तो अपना धंधा है," वह अक्सर अपने शिष्यों को याद दिलाता था।

फिलिप पंडारे

डॉन फिलिप दयानंद पंडारे, जिन्हें अन्ना के नाम से जाना जाता था, 1970 के दशक के उत्तरार्ध में औद्योगिक विवादों को सुलझाने में विशेषज्ञ थे और 1980 के दशक के मध्य तक उनकी काफी मांग थी। शहर भर के औद्योगिक क्षेत्रों में स्थित कई कंपनियों ने ट्रेड यूनियनों को चुप कराने के लिए उनका इस्तेमाल किया। दूसरी ओर, यूनियनों ने प्रबंधन के साथ हाथ मिलाने वालों के खिलाफ उनका इस्तेमाल किया।

पंडारे ने कुर्ला के पास एक ऑटोमोबाइल निर्माण इकाई में मशीनिस्ट के रूप में अपना करियर शुरू किया। उनकी मुश्किलें तब शुरू हुईं जब उनका राजन नायर उर्फ बड़ा राजन से झगड़ा हो गया, जिसे उन्होंने 1970 के दशक के अंत में ठाणे के पास एक लोकल ट्रेन में चाकू मार दिया था।

पांडारे ने अपना अड्डा पहले विक्रोली और बाद में कंजर मार्ग पर स्थानांतरित कर लिया, जिसके बाद उन्होंने यशवंत जाधव के साथ हाथ मिलाया। साथ मिलकर, वे घाटकोपर-चेम्बूर क्षेत्रों में एक ताकतवर समूह बन गए।

दुबला-पतला गैंगस्टर जल्द ही डोमिनिक, बड़ा ताम्बी, अशोक कुंटे, कमलाकर अडांगले, संजीव भोसले और उसके छोटे भाई येदा बाला से जुड़ गया। 26 सितंबर को उनके एक पूर्व सहयोगी ने उनकी हत्या कर दी थी।

फ़ोन दादा

फोन दादा एक ऐसा सहयोगी होता है जो फोन का इस्तेमाल करके लोगों को धमकाता है। यह अक्सर कोई छोटा-मोटा चोर या गुंडा होता है जिसे अंडरवर्ल्ड की गतिविधियों का बहुत कम अनुभव होने के बावजूद बड़े गिरोह में शामिल कर लिया जाता है। दाऊद इब्राहिम के गिरोह के सदस्य फयीम मचमच को अक्सर फोन दादा कहा जाता है। स्थानीय शादियों में कैमरा असिस्टेंट के रूप में काम करने से लेकर, वह अंडरवर्ल्ड में बड़ा नाम बन गया।

पोटला (अपहरण और हत्या)

दाऊद इब्राहिम के प्रमुख सहयोगी इरफान गोगा का लापता होना मुंबई के अंडरवर्ल्ड के सबसे बड़े रहस्यों में से एक बना हुआ है। लेकिन गैंगस्टरों के बीच 'पोटला' या बंडलिंग कोई असामान्य बात नहीं है।

अबू सलेम नामक भगोड़े गैंगस्टर के करीबी माने जाने वाले गोगा 9 नवंबर, 1998 को दुबई से रहस्यमय परिस्थितियों में लापता हो गए थे।

वह दाऊद के भाई अनीस (एक अज्ञात पाकिस्तानी नागरिक) के साथ गाड़ी में घूमने गया और कभी वापस नहीं लौटा।

जिस कार में गोगा और अनीस यात्रा कर रहे थे, वह दुबई के एक सुनसान समुद्र तट पर लावारिस हालत में मिली। हालांकि, जांचकर्ताओं को कोई सुराग नहीं मिला।

अंदरूनी सूत्रों ने खुलासा किया कि गोगा की हत्या कर दी गई थी और उसके शव को शोएबभाई के स्वामित्व वाले एक आलीशान बंगले के नीचे दफना दिया गया था। शोएबभाई को बाद में पाकिस्तान में जेल की सजा काटते समय जहर देकर मार दिया गया था।

दुबई पुलिस ने 14 नवंबर, 1998 को गोगा की पत्नी शैला की शिकायत के बाद अनीस और 28 अन्य लोगों को हिरासत में लिया था। यह मामला आज तक सुलझा नहीं है।

ऐसा संदेह है कि गोगा का अपहरण और हत्या पाकिस्तानी इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) एजेंट के इशारे पर की गई थी, क्योंकि उन पर काठमांडू में नेपाली सांसद मिर्जा दिलशाद बेग की हत्या में कथित रूप से शामिल होने का आरोप था।

37 वर्षीय गोगा ने दाऊद इब्राहिम को धोखा देकर छोटा राजन और बबलू श्रीवास्तव का साथ दिया था। गोगा की इस घटना से पहले, आज़मगढ़ और मुंबई में उसके खिलाफ एक दर्जन से अधिक मामले दर्ज थे और वह एक दशक से अधिक समय तक पुलिस की गिरफ्त से बचता रहा था।

पायलट

अंडरवर्ल्ड में कुशल ड्राइवर या राइडर को 'पायलट' कहा जाता है। अच्छे ड्राइवर गोलीबारी के बाद कई साहसिक कारनामों में अहम भूमिका निभाते हैं।

Popat (Prey)

एक पोपट का तात्पर्य शिकार से होता है। जब कोई गैंगस्टर पूछता है कि 'पोपट बाहर आया क्या', तो वास्तव में वह पूछ रहा होता है कि क्या शिकार कार्यालय या निवास से निकल गया है?

Priya Rajput

Born Chandrakala Dhansingh Rajput, Priya lead a gang of desperados and opened fire on Monica Bar at Ghatkopar, in 2002.

प्रिया ने टेलीफोन ऑपरेटर के रूप में काम करना शुरू किया, जिसके बाद वह छोटा राजन के प्रमुख सहयोगी अजय महादिक उर्फ प्रिंस के करीब आ गई। जल्द ही वह प्रकाश पांडे उर्फ बंटी पांडे, अनिल सावंत और एड्डू जैसे अन्य गैंगस्टरों की ओर आकर्षित हो गई।

प्रिया ने बंटी पांडे के साथ बैंकॉक में समय बिताया। 2002 में मुंबई लौटने पर अपराध शाखा के अधिकारियों ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

पुट्टा (मोनिका बेदी का मल्टीपल पासपोर्ट)

गैंगस्टर अबू सलेम की प्रेमिका मोनिका बेदी को 2005 में पुर्तगाल से निर्वासित किए जाने के तुरंत बाद रिहा किया जा सकता था। लेकिन उन पर 'पुट्टा' (गुंडागर्दी) के आरोप में मुकदमा चलाया जा रहा था, हालांकि अब वह जमानत पर बाहर हैं।

मोनिका का पहला असली पासपोर्ट (B0195737) 10 अगस्त, 1999 को मुंबई में जारी किया गया था। उसकी जन्मतिथि 18 जनवरी, 1975 को होशियारपुर में दर्ज की गई थी।

लेकिन जल्द ही मोनिका ने भगोड़े गैंगस्टर अबू सलेम के संपर्क में आने के बाद एक नए पासपोर्ट के लिए आवेदन किया। उसके अगले पासपोर्ट में उसका नाम फौजिया उस्मान और जन्मतिथि 10 सितंबर, 1976 दर्ज की गई। इस बार यह पासपोर्ट 29 जून, 2001 को भोपाल से जारी किया गया था।

बेदी ने अगली बार अपनी पहचान तब बदली जब उन्होंने सना मलिक कमल (B5802508) नाम अपना लिया, जो कि 6 अगस्त, 2001 को आंध्र प्रदेश के कुरनूल में जारी किया गया एक पासपोर्ट था।

इसके बाद, कुरनूल में उन्हें जारी किए गए पासपोर्ट पर उनका नाम बदलकर नेहा आसिफ जाफरी कर दिया गया।

कुर्बानी (बलिदान)

कुर्बानी, डी कंपनी का पर्याय बन चुका शब्द है। इसका प्रयोग अक्सर शतरंज की चाल की तरह किया जाता है, जब बढ़त हासिल करने के लिए अग्रिम पंक्ति के निशानेबाज की बलि दी जाती है। यह गिरोह युद्ध जीतने के लिए एक लड़ाई हारने को भी तैयार रहता है।

रफीक डब्बावाला (टिफिन बॉय)

मोहम्मद शेख उर्फ हरीश ठाकुर उर्फ रफीक डब्बावाला ने घाटकोपर में संघानी एस्टेट के पास गंगावाड़ी से 'टिफिन बॉय' के रूप में शुरुआत की।

जोगेश्वरी का पूर्व मोटर मैकेनिक जल्द ही जेल में बंद कैदियों और दोषियों को टिफिन या डिब्बे सप्लाई करने वाला बन गया। जबरन वसूली और हत्या की उसकी भूख कभी

शांत नहीं होती थी और ऐसा लगता है कि वह इन्हें एक कुशल कारीगर की पसंद के अनुसार चुनता था। रफीक इन बड़े शिकारों से खूब मजे लेता था।

इन नामों में बॉलीवुड निर्देशक राकेश रोशन भी शामिल थे, जो 2001 की शुरुआत में जानलेवा हमले से बच गए थे। मिल्टन प्लास्टिक्स के निदेशक चिरंजीव वाघानी से उनकी रिहाई के लिए 5 करोड़ रुपये की फिरौती मांगी गई थी। एक और प्रमुख निशाना बैंगलोर के व्यवसायी विनीत वंचानी थे, जिनकी रिहाई के लिए 7 करोड़ रुपये की फिरौती मांगी गई थी। इन सभी को ट्रॉफी की तरह सहेजते हुए, रफीक के नाम 17 हत्याएं दर्ज थीं, जिनमें विक्रोली पार्क साइट के निर्माता ज़ैलुद्दीन शेख उर्फ ज़काउल्लाह की हत्या भी शामिल थी।

पहले रफीक घाटकोपर और आसपास के इलाकों में छोटे-मोटे रंगदारी वसूलने का काम करता था, जब तक कि उसकी मुलाकात सुभाष सिंह ठाकुर के करीबी सहयोगी शामकिशोर गरिगापति से नहीं हुई, जो अब मौत की सजा का सामना कर रहा है। उसके बेबाक तरीकों और साहसी कारनामों ने ठाकुर की जिज्ञासा जगा दी और जल्द ही उस हट्टे-कट्टे युवक को गिरोह में शामिल कर लिया गया।

फिर, सितंबर 1992 में, ठाकुर और गरिगपति दोनों को सनसनीखेज जेजे अस्पताल गोलीबारी के सिलसिले में गिरफ्तार कर लिया गया। रफीक को राज्य की विभिन्न जेलों में गरिगपति, ठाकुर और गिरोह के अन्य सदस्यों को घर का बना खाना पहुंचाने का काम सौंपा गया, जिससे उसे 'डब्बावाला' का उपनाम मिला। लेकिन डब्बा के धंधे के अलावा, रफीक को जल्द ही अन्य "अजीबोगरीब" काम भी दिए गए, जैसे कि सुरक्षा के नाम पर रिश्वत वसूलना और पीड़ितों को धमकाना।

1995 तक, रफीक एक कुशल निशानेबाज बन चुका था। "यह उसका अकेला का काम था। वह सारी योजना बनाता था और यह सुनिश्चित करता था कि काम योजना के

अनुसार ही अंजाम दिया जाए," रफीक को मार गिराने वाली टीम के सदस्य और मुठभेड़ विशेषज्ञ दया नायक ने बताया। नायक आगे कहते हैं, "रफीक बहुत कम लोगों पर भरोसा करता था, जिसकी वजह से उस पर नज़र रखना बेहद मुश्किल था।"

रफीक ने 'हरीश ठाकुर' का छद्म नाम अपना लिया और एक संभावित शिकार को बताया कि वह सुभाष सिंह ठाकुर का छोटा भाई है।

1999 तक, रफीक की जबरन वसूली की मांग करोड़ों में पहुंच गई थी, लेकिन वह हद से ज्यादा लालची हो गया था। 5 जून, 1999 को सांताक्रूज़ (पश्चिम) के आशा पारेख अस्पताल के पास उसकी हत्या कर दी गई।

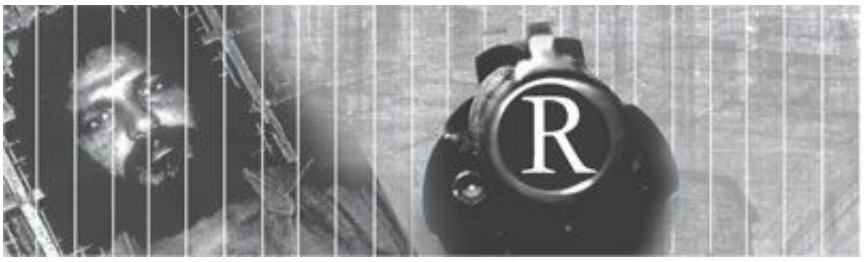

राजा (मित्र)

राजा, गैंगस्टर छोटा राजन का पसंदीदा शब्द है जिसका इस्तेमाल वह अपने नए साथियों को लुभाने, उनकी वफादारी और विश्वास हासिल करने के लिए करता है।

वैसे तो, अधिकांश व्यंग्यात्मक टिप्पणियां कट्टर शत्रु छोटा शकील के लिए हैं, जो राजन की नजरों में दाऊद इब्राहिम के बाद देश के गद्दारों की सूची में दूसरे स्थान पर आता है।

"Raja, jo apni maa ka na ho saka, to woh aur kiska kaise ho sakta hain" (If a man is not loyal to his mother (country) how can you trust him?).

दरअसल, 1993 के सिलसिलेवार बम धमाकों के आरोपियों में से सात को राजन गिरोह के सदस्यों ने मुंबई की सड़कों पर योजनाबद्ध तरीके से खत्म कर दिया था।

छोटा राजन गिरोह में नए सदस्यों का ब्रेनवॉश करने की कुंजी घोषित देशभक्ति है।

प्रतिद्वंद्वी दावा करते हैं कि राजन की बयानबाजी झूठी है। वे कहते हैं, 'बेतगद्दर तो वो हैं', जो 1993 में डी कंपनी से राजन के दल-बदल का जिक्र करते हुए कहते हैं।

राजन की बेटे नायर ओपी

यह शनिवार की सुबह थी और नासिक जेल में एक अजीब सी शांति छाई हुई थी।

कैदियों को इस बात की जानकारी थी कि कुछ गैंगस्टर जेल के अंदर छोटा राजन के प्रमुख सहयोगी को खत्म करने की साजिश रच रहे थे।

दरअसल, यह साजिश विचित्र थी। राजन के सहयोगी डी. के. राव और आठ अन्य लोगों को 23 नवंबर, 2002 को मुंबई की आर्थर रोड जेल से नासिक जेल में स्थानांतरित किया गया था, जो ओम प्रकाश सिंह उर्फ विल्सन की हत्या से एक दिन पहले का दिन था।

सिंह, जिसे ओपी के नाम से भी जाना जाता था, की राव और उसके साथियों ने बाथरूम में गला घोंटकर हत्या कर दी। जेल अधिकारियों ने इसे दिल का दौरा पड़ने का मामला बताने की कोशिश की।

मुंबई जेल अधिकारियों ने उस खुफिया रिपोर्ट को नजरअंदाज कर दिया था जिसमें बताया गया था कि छोटा राजन गिरोह के कुछ सदस्य जेल के अंदर सिंह की हत्या की

साजिश रच रहे हैं। यह चेतावनी एक महीने पहले मिली थी।

हत्यारे दस्ते में शरद बारकर उर्फ बड़क्या, मंगेश परब उर्फ बाल, चंद्रकांत खोत, प्रमोद थोराट, फिरोज बशीर खान, चंदू पुजारी, निमेश शेटे और सरफिरा नेपाली शामिल थे। सभी छोटा राजन के गढ़ मुंबई के आर्थर रोड में विचाराधीन कैदी थे।

सिंह, छोटा राजन गिरोह और देश की केंद्रीय खुफिया एजेंसियों के एजेंटों के बीच की अहम कड़ी था। उसने मुंबई में कई महत्वपूर्ण हत्याओं की साजिश रची थी।

छोटा राजन ने पूर्व लेफ्टिनेंट की हत्या की साजिश रची, क्योंकि उसे डर था कि जेल से रिहा होने के बाद वह उसकी स्थिति के लिए संभावित खतरा बन सकता है। डॉन को यह विश्वास दिलाया गया था कि उसके पूर्व सहयोगी का गिरोह में काफी दबदबा है।

ओपी ने पहले ही एक अन्य भगोड़े गैंगस्टर हेमंत पुजारी को अपना अलग गिरोह बनाने में मदद करके राजन का गुस्सा मोल लिया था। संकेत मिल रहे थे कि वह भी अगले दो महीनों में अपनी रिहाई के बाद एक स्वतंत्र गिरोह का नेतृत्व करने की योजना बना रहा था।

इससे पहले, राजन हेमंत पुजारी को अपने आदेशों का उल्लंघन करने के लिए मारना चाहता था। उसने उसे फांसी के लिए ओपी को सौंपने के लिए संपर्क किया था।

"गंडू (मूर्ख) अपना सेना को मारता है" (केवल एक मूर्ख गुंडा ही अपने आदमियों को मरवाता है), ओपी ने एक बार अपने सहयोगी मनीष से कहा था।

इसके अलावा, इस बात की संभावना भी राजन को परेशान कर रही थी कि वह गुरु सतम, रवि पुजारी और एजाज लकड़ावाला जैसे अन्य भगोड़े गैंगस्टरों के साथ मिलकर एक गिरोह बना सकता है।

राजन को बबलू श्रीवास्तव से संपर्क स्थापित करने में मदद करने में सिंह की भूमिका भी काफी हद तक महत्वपूर्ण थी।

समस्या तब शुरू हुई जब बाबा बुग्गा रेड्डी उर्फ बाबा रेड्डी, राजन के एक प्रमुख सहयोगी संतोष शेट्टी के साथ मादक पदार्थों के व्यापार में शामिल हो गए।

संतोष शेट्टी दाऊद इब्राहिम के नक्शेकदम पर चलना चाहता था। उसका मानना था कि गैंगस्टरों को डॉन तक आसानी से पहुंच नहीं मिलनी चाहिए और उन्हें पदानुक्रम का पालन करना चाहिए।

दूसरी ओर, ओपी ने अधिकांश लोगों को राजन से सीधे बात करने की अनुमति दी। पैसा महत्वपूर्ण था और मंजूरी ज्यादातर डॉन द्वारा ही दी जाती थी।

राजन के अधीन आर्थर रोड जेल में बंद हाई-प्रोफाइल कैदियों ने 2000 में अपनी खर्च करने की सीमा को 70,000 रुपये से बढ़ाकर लगभग 1.7 लाख रुपये प्रति माह कर दिया था।

खर्चों को पूरा करने के लिए जबरन वसूली का सिलसिला तेजी से बढ़ता गया। उपनगरों में बिल्डरों और होटल मालिकों के साथ ओपी के संबंधों के माध्यम से भारी मात्रा में धन प्राप्त हुआ।

इसी बीच, शेट्टी गिरोह जगत में अपनी स्थिति मजबूत कर रहा था और 2000 में रोहित वर्मा की मौत के बाद दूसरे नंबर के कमांडर के पद पर नजर गड़ाए हुए था। संतोष, जिसे राजेश मदन शर्मा के नाम से भी जाना जाता था, उस खूनी गोलीबारी के बाद बैंकॉक के अस्पताल से राजन के भागने में शामिल था।

कुख्यात हत्यारा विनोद मतकर भी बाबा रेड्डी की तरह ओपी के करीबी माने जाते थे। बालू डोकरे भी ओपी के करिश्मा और बुद्धिमत्ता से आकर्षित थे।

इसके कारण स्पष्ट हैं। ओपी ने मुंबई में गिरोह की गतिविधियों के लिए आवश्यक लॉजिस्टिक सहायता और धन मुहैया कराया। मुख्य साजिशकर्ता के पास बुद्धि और योजना बनाने की क्षमता भी थी, जो एक नेता के लिए आवश्यक गुण थे।

इन सब बातों से राजन असुरक्षित महसूस करने लगा। मन ही मन बॉस को डर था कि ओपी उसके गिरोह को चलाएगा और दूसरे भागे हुए गैंगस्टरों के साथ गठबंधन कर लेगा।

दूसरी ओर, ओपी एक राजनेता बनने का सपना देख रहा था। वह कई राजनेताओं को जानता था और उसे उत्तर प्रदेश विधानसभा के लिए टिकट मिलने का पूरा भरोसा था।

"राजन के पतन की शुरुआत ओपी की हत्या से हुई। यह उसके जीवन की सबसे बड़ी गलतियों में से एक थी," पूर्व लेफ्टिनेंट मनीष कहते हैं।

मुंबई के कई बारों में ओपी का दबदबा कायम था। संगीत और महिला नर्तकियों से गुलजार रहने वाले सौ से अधिक बारों में उसकी हिस्सेदारी थी।

सिंह एक हिंदी प्रोफेसर के पुत्र थे और उन्होंने उत्तरी मुंबई के घाटकोपर स्थित आरजे झुनझुनवाला कॉलेज से विश्लेषणात्मक रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की थी। उन्होंने राज्य के स्वामित्व वाली जहाज निर्माता कंपनी माज़गांव डॉक्स के गुणवत्ता नियंत्रण विभाग में काम किया।

उनके जीवन में निर्णायक मोड़ 1995 में आया, जब उनके बड़े भाई, प्रोफेसर अरुण सिंह की कॉलेज के बाहर अमर नाइक गिरोह के सदस्यों द्वारा हत्या कर दी गई, क्योंकि उन्होंने एक मामले में गैंगस्टरों के खिलाफ गवाही दी थी।

इस घटना ने उनकी जिंदगी बदल दी। उन्होंने नौकरी छोड़ दी और ठाणे जिले के वसई में जमीन के कारोबार में उतर गए, जहां उन पर जबरन वसूली के एक दर्जन से अधिक

मामले दर्ज थे। जल्द ही वे गिरोहों में ऊंचे पद पर पहुंच गए और छोटा राजन गिरोह के एक महत्वपूर्ण सरगना बन गए।

राजनवाड़ी (राजन गैंग के अंतर्गत आने वाला प्रभाग)

छोटा राजन के सहयोगी विक्की मल्होत्रा उर्फ विशाल विक्रांत और फरीद तनाशा - वे दो लोग जिन्होंने प्रतिद्वंद्वी दाऊद इब्राहिम की बेटी की शादी (2005) के दौरान उसकी हत्या की साजिश रची थी - अपने ही गिरोह के एक अन्य सदस्य यूसुफ बचकाना पर हमला करने के लिए एक साथ आए। उनका निशाना यूसुफ बचकाना था जिसे अगस्त 2005 में आर्थर रोड जेल के अस्पताल में भर्ती कराया जाना था।

इससे पहले, दोनों ने गिरोह के एक अन्य सदस्य डी.के. राव पर विश्वासघात का आरोप लगाया था। राव, जो जेल में राजन का मुख्य भर्तीकर्ता था, को जेल में प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर दाऊद के भाई इकबाल कास्कर के साथ देखा गया था। राव बचकाना का गुरु भी है, इसीलिए उसने हस्तक्षेप किया।

'Aaj kal jail me Rajanwadi chal raha hain,'' remarked rival gangster Mohammed Ethesysham. What he meant is that there is division within the Rajan gang.

माल्होत्रा के आक्रामक व्यवहार का कारण मुंबई क्राइम ब्रांच द्वारा उनकी गिरफ्तारी हो सकती है - जो एक असफल ऑपरेशन और विभिन्न कानून प्रवर्तन एजेंसियों के भीतर कथित आंतरिक कलह का परिणाम है।

मालहोत्रा और तनाशाह को 11 जुलाई, 2006 को नई दिल्ली में तब पकड़ा गया था, जब वे दाऊद को पाकिस्तान या दुबई में घात लगाकर मारने के एक तरह से आत्मघाती मिशन पर काम कर रहे थे।

माल्होत्रा का यह गुस्सा शायद पूरी तरह निराधार न हो। तनशाह और वह दोनों ही नई दिल्ली, पश्चिम बंगाल और नेपाल में सक्रिय थे और उन्हें सौंपे गए कुछ कार्य केंद्रीय सरकारी खुफिया एजेंसी द्वारा निर्देशित थे।

इस बात के संदेह के पर्याप्त कारण हैं कि दाऊद को मारने की नाकाम साजिश भी भारतीय खुफिया एजेंसियों द्वारा रची गई थी। मल्होत्रा और तनशाह एक वरिष्ठ खुफिया अधिकारी के साथ थे जब मुंबई से आई एक विशेष टीम ने दिल्ली में उन्हें अचानक घेर लिया।

ऐसा प्रतीत होता है कि मुंबई क्राइम ब्रांच द्वारा दोनों हमलावरों को गिरफ्तार करने की योजना के बारे में केंद्रीय खुफिया एजेंसियों को अंधेरे में रखा गया था, जो केंद्रीय और राज्य एजेंसियों के बीच समन्वय की कमी की एक आम कहानी है।

Raju Batatiya

गैंगस्टर अरुण गावली के प्रमुख सहयोगी राजू बटाटिया मुंबई के अंडरवर्ल्ड के उच्च वर्गों में दो चीजों के लिए जाने जाते थे: दाऊद इब्राहिम के बहनोई इब्राहिम पारकर की हत्या और उनकी शरारतें।

रामा नाइक (वह गॉडफादर जिसने गैंगस्टरों की एक पीढ़ी को तैयार किया)।

अपने अंधकारमय अतीत में, मुंबई के सभी माफिया सरगनाओं की जड़ें एक ही जगह पर थीं, जिसे मुंबई के मूल गॉडफादर, रामा नाइक ने पाला-पोसा था।

अरुण गावली का उदाहरण लीजिए - बायकुला के बकरी अड्डा स्थित म्युनिसिपल स्कूल में नाइक न केवल उनके वरिष्ठ थे, बल्कि उनके गुरु भी थे। छोटा राजन ने 1985

से 1988 के बीच तीन साल तक लाल वीटा चॉल में नाइक के मार्गदर्शन में शिक्षा प्राप्त की।

रामा नाइक के दबदबे के बावजूद, दाऊद इब्राहिम डोंगरी की पाकमोडिया गली का एक छोटा-मोटा गुंडा था। अमीरजादा और समद खान के नेतृत्व वाले पठान गिरोह से टकराव होने के बाद उसने नाइक की 'बायकुला कंपनी' से मदद मांगी। रामा नाइक परिवार के एक सदस्य ने बताया कि 1981 में सिद्धिविनायक मंदिर के पास अमीरजादा द्वारा दाऊद के भाई शब्बीर की गोली मारकर हत्या किए जाने के बाद दाऊद चॉलों में अक्सर आता-जाता रहता था।

नाइक की कहानी बायकुला की अंधेरी और धूल भरी गलियों में शुरू हुई। 1970 के दशक के उत्तरार्ध से लेकर 1988 तक, एक्स-लेन, च्योण चॉल, लाल वीटा चॉल, पारसी चॉल और दगड़ी चॉल की संकरी गलियों में ही अधिकांश गतिविधियाँ हुईं। गुंडागर्दी और क्षेत्रीय विवादों से शुरू होकर, गिरोह हत्याओं तक पहुँच गए।

"किसी प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर के ठिकाने पर छापा मारना या उसे चाकू मारना, इलाके के मटका और शराब के अड्डों पर कब्ज़ा करने के बराबर होता था। उन दिनों हत्याएं बहुत कम होती थीं और मुख्य उद्देश्य प्रतिद्वंद्वी को डराकर आत्मसमर्पण करने पर मजबूर करना होता था," बायकुला के एक्स लेन के एक निवासी याद करते हैं।

समद खान की हत्या के बाद दाऊद द्वारा रामा नाइक, रेशम और छोटा राजन को चार रिवॉल्वर दिए जाने के बाद मुंबई के गैंगस्टरों के बीच आग्नेयास्त्रों का उपयोग आम हो गया।

70 के दशक में मटका अड्डे के संचालक के रूप में शुरुआत करने वाले नाइक ने जल्द ही सुपारी लेकर हत्याएं करना शुरू कर दिया। हत्याओं का एक नया तरीका सामने आया, जिसमें रामा नाइक और उसके साथी अपने दुश्मनों पर घात लगाकर

हमला करते और कारों में भाग जाते थे। 21 जुलाई, 1988 को चेंबूर में उसकी हत्या कर दी गई। दाऊद ने अपने साम्राज्य को स्थापित करने में मदद करने वाले छोटे राजन के माध्यम से गॉडफादर की हत्या की साजिश रची थी।

राम्या बटलर, रमेश सर्वे उर्फ राम्या बटलर, गोरेगांव में दिलावर अंतुले की हत्या के बाद जल्द ही एक शूटर के रूप में मशहूर हो गया। मुंबई पुलिस ने उसे 1992 से ही 'मोस्ट वांटेड' सूची में रखा था, जब उसे आखिरी बार गिरफ्तार किया गया था। सर्वे लगभग पांच साल तक भूमिगत रहा, जब पुलिस दस्ते ने उसे पकड़ लिया। 3 मार्च 2001 को सहायक पुलिस निरीक्षक अविनाश सावंत और भूषण बेलनेकर के नेतृत्व में एक दस्ते ने मुठभेड़ में उसे और उसके गिरोह के दो अन्य सदस्यों को मार गिराया।

रजाक कश्मीरी

छोटा राजन के प्रमुख सहयोगी रजाक कश्मीरी ने दो साल से भी कम समय में प्रतिद्वंद्वी छोटा शकील के सात सहयोगियों को खत्म करके दक्षिण मुंबई में उसके गढ़ पर लगभग पूरी तरह से कब्जा कर लिया था।

उसने डोंगरी, पायधोनी और जेजे अस्पताल में शकील की ताकत का सामना किया और शकील के सात साथियों को गोली मारकर अपने साथियों की हत्याओं का बदला लिया।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, कश्मीरी ने बाद में पायधोनी स्थित गैंगस्टर हुसैन वस्तारा के साथ हाथ मिला लिया ताकि दक्षिण मुंबई में शकील के आदमियों पर अपने हमले जारी रख सके।

कश्मीरी डोंगरी की गलियों में शीतल पेय बेचता था, तभी उसकी मुलाकात शकील के गुर्गे फिरोज कोंकणी से हुई। बाद में दोनों को तारदेव के एक बिल्डर की सुरक्षा के लिए काम पर रखा गया। कुछ समय बाद उत्तरी मुंबई के विक्रोली पार्क साइट का एक और गैंगस्टर स्टेनली फर्नांडीस भी उनके साथ जुड़ गया। कश्मीरी 27 अक्टूबर 1998 को एक मुठभेड़ में मारा गया।

रोटी

अपने काम में गोपनीयता और खतरे को देखते हुए, खुफिया अधिकारी भी गुप्त कोड का इस्तेमाल करते हैं। 'रोटी' का इस्तेमाल कॉम्पैक्ट डिस्क के लिए किया जाता है, जिन्हें अक्सर कूरियर के ज़रिए भेजा जाता है। एजेंट आमतौर पर 'रोटी रास्ते में है' जैसे संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं। इसका असल मतलब होता है कि माल रास्ते में है। सीडी चपटी और गोल होती है, इसलिए इसे रोटी कहा जाता है।

Rajji Mehendi

दाऊद इब्राहिम के सहयोगी माने जाने वाले राज्जी मेहंदी की हत्या 1991 में बांद्रा पूर्व के काला नगर जंक्शन पर बायकुला कंपनी के सदस्यों द्वारा कर दी गई थी।

तान्या कोली, मोहन माली, गणेश भोसले, नामदेव पाटिल, विजय टंडेल और बेबी आदिलकर ने लक्ष्य की कार को रोका और एके 47 राइफलों से गोलीबारी शुरू कर दी। गोलीबारी में कोली घायल हो गईं।

यह स्पष्ट रूप से बदले की भावना से की गई हत्या का मामला था।

रामपुरी (एक प्रकार का चाकू)

अंडरवर्ल्ड में, रामपुरी चाकू से आग्नेयास्त्रों की ओर बदलाव का पता 1990 के दशक के उत्तरार्ध से लगाया जा सकता है। इससे पहले, इन चाकुओं का इस्तेमाल आमतौर पर दुश्मनों पर हमला करने के लिए किया जाता था।

हत्याएं कम होती थीं और पीड़ित अक्सर हमलों में बच जाते थे। रामपुरी राइफल धीरे-धीरे चलन से बाहर हो गई और उसकी जगह देसी रिवॉल्वर, कट्टा ने ले ली। कुछ वर्षों बाद, शस्त्रागार में AK 47 असॉल्ट राइफलें भी शामिल कर ली गईं।

रील से रियल (पुराण मंदिर की कहानी में नया मोड़)

मोहम्मद इकबाल शेख, उर्फ पुराना मंदिर। शेख चोरी करके अपना गुजारा करता था, वहीं एक बॉलीवुड निर्देशक ने सात फुट आठ इंच लंबे इस खूंखार शख्स को अपनी एक फिल्म, रैमसे की हॉरर फिल्म 'पुराना मंदिर' में लिया, जिसे उसने अपना उपनाम भी बना लिया। 1980 के दशक में आई इस फिल्म में शेख ने बॉडीबिल्डर हेमंत बिरजे के साथ मुख्य भूमिका निभाई थी और यह फिल्म हिट रही थी। इसके साथ ही अंडरवर्ल्ड में शेख की खौफनाक छवि भी खूब फैली।

अफसोस की बात है कि शेख बॉलीवुड की स्क्रिप्ट और हकीकत में फर्क नहीं कर पाए। कहा जाता है कि 4 अप्रैल 2001 को चेंबूर के स्वास्तिक मिल के पास सहायक पुलिस आयुक्त रामाकानत पडवाल के नेतृत्व में पुलिस दस्ते के साथ हुई खूनी मुठभेड़ में उनकी मौत हो गई।

रेफरी जान ले सकते हैं

दाऊद इब्राहिम के लेफ्टिनेंट मोहम्मद अली कंजारा और उसके साथियों के बीच हुई बातचीत को समझने में पुलिस को समय लगा। बातचीत में 'रेफ्री से बच के रहना' का जिक्र था। पुलिस का मानना था कि रेफ्री का मतलब 'मुठभेड़ विशेषज्ञ' था।

लुटेरों का गिरोह

लुटेरे गिरोहों पर शायद ही कभी भरोसा किया जाता है। मुंबई के अंडरवर्ल्ड में 'लुटेरा' शब्द का इस्तेमाल बेहद अपमानजनक माना जाता है।

लेकिन लुटेरे से शूटर बने अरुण महाजन के अपने लक्ष्यों को हासिल करने के साहसिक तरीकों ने मुंबई के अंडरवर्ल्ड में एक चलन स्थापित कर दिया।

अरुण महाजन उर्फ इटलिया की मुलाकात जगगु शेट्टी उर्फ फकीरा और रोहित वर्मा से लगभग 1995 में हुई, जब तीनों ठाणे जेल में सजा काट रहे थे। वर्मा-महाजन की जोड़ी जल्द ही कुछ सनसनीखेज हत्याओं में शामिल हो गई, जैसे ईस्ट वेस्ट एयरलाइंस के प्रबंध निदेशक थक्किउद्दीन वाहिद की हत्या, होटल व्यवसायी-निर्माता डीएन घोष की हत्या और जेजे अस्पताल गोलीबारी मामले में नामजद मीरा रोड के पटेल भाइयों की हत्या। गोलीबारी की इस सिलसिलेवार घटनाओं ने वास्तव में कुछ समय के लिए अंडरवर्ल्ड का समीकरण राजन के पक्ष में मोड़ दिया।

महाजन के उदय से पहले, राजन लुटेरों पर शायद ही कभी भरोसा करता था। वह ज्यादातर अपने शूटरों जैसे डैनी, मत्या, दिवाकर चूरी और संजय रुग्गड़ पर निर्भर रहता था। महाजन ने विनोद मतकर जैसे लुटेरों के लिए एक मिसाल कायम की, जो बाद में शूटर बन गया और शहर में 20 से अधिक हत्या के मामलों में उसका नाम आया। डी के राव, प्रशांत कुंडाप्पा कोट्टा उर्फ प्रशांत कल्ली और नितेश कसारे जैसे लुटेरों की सूची लंबी है, जो अंडरवर्ल्ड के सरगनाओं में शीर्ष पर हैं। 1995 में बांद्रा

पश्चिम में वाहिद के कार्यालय के पास उसकी हत्या करने वाले गिरोह में शामिल होने के बाद महाजन का उदय तेजी से हुआ। पुलिस सूत्रों के अनुसार, वह कम से कम 14 हत्याओं में शामिल था।

रोहित वर्मा (बाबू पांडे)

बब्बू पांडे के रूप में जन्मे वर्मा ने पहले वाकोला में छोटे-मोटे चोर का काम किया। गैंगस्टर मत्या द्वारा छोटा राजन के गिरोह में शामिल किए जाने के बाद वह बड़े अपराधियों की श्रेणी में आ गया। जल्द ही वह विनोद मतकर, जगगु शेट्टी उर्फ फकीरा और डी के राव जैसे अन्य चोरों की संगति में आ गया। वर्मा ने मुंबई के अंडरवर्ल्ड के शीर्ष स्तर तक तब अपनी जगह बनाई जब 1995 में बांद्रा में ईस्ट-वेस्ट एयरलाइन के प्रमुख तककीउद्दीन वाहिद की हत्या के प्रमुख संदिग्धों में से एक के रूप में उसकी पहचान हुई।

1990 के दशक के मध्य में जब डॉन छोटा राजन ने अपना ठिकाना दक्षिण पूर्व एशिया में स्थानांतरित किया, तो वर्मा चुपके से मुंबई से निकलकर उसके गुरु से मिल गया। हालांकि, 26 सितंबर 2000 को मुन्ना जिंगाडा के नेतृत्व में छह सदस्यीय हत्यारों के एक गिरोह ने बैंकॉक में उनके पहले माले के अपार्टमेंट में घुसकर गोलियों की बौछार कर दी, जिससे राजन और वर्मा दोनों हैरान रह गए। वर्मा ने कुछ ही समय बाद दम तोड़ दिया। हमले के समय वह सो नहीं रहा था।

रोटी के टुकड़े (ब्रेड के टुकड़े)

'रोटी के टुकड़े' मुहावरा तब इस्तेमाल किया जाता है जब कोई गैंगस्टर अपना लूटा हुआ माल बांटना चाहता है। जब वह 'चार टुकड़े' कहता है, तो असल में इसका

मतलब होता है कि पैसे को चार हिस्सों में बांटा जाना चाहिए।

धैर्य

"Hum ko sabar karne ki bahut aadat hain. Bahut sabar kar sakte hain (we are known for patiently waiting before a kill),'' Dawood Ibrahim associate Fayeem Machmach was heard warning his target.

"तेरे कोयाद हैं हम ने रूपम वाले को कैसे मारा (क्या आपको याद है कि हमने रूपम स्टोर्स के मालिक को कैसे मारा था) - मालिक भरत शाह की 1998 में क्रॉफर्ड मार्केट के पास हत्या कर दी गई थी।

"उसे लगा कि वह सुरक्षित है क्योंकि उसकी दुकान पुलिस मुख्यालय के पास है। उसे लगा कि पुलिस सुरक्षा मिलने के कारण वह सुरक्षित है।"

"छह महीने बीत गए और हमारे आदमी को लगा कि हम उसके बारे में सब कुछ भूल गए हैं। उसने पुलिस सुरक्षा को वापस जाने दिया। हमारे बंदूकधारियों ने उस मूर्ख को गोली मार दी।"

मेरे आदमी तुम पर नज़र रख रहे हैं। लेकिन हम तुम्हें नहीं मारेंगे। हम तुम्हारे दोस्त को मारेंगे। तुम्हें पैसे चुकाने होंगे। हम तुम्हें कैसे मार सकते हैं?

"Darwae ka ghanti bajaun kya?" (Shall my men ring your doorbell now?) Machmach asked.

समद खान (करीम लाला का भतीजा)

पठान डॉन समद खान और उसके साथी बाबा खान, मल्लाद खान, जंगरेज, करीम और शेरू एक अन्य घातक गिरोह का हिस्सा थे। 1 जनवरी, 1993 को मारे गए।

सलीम हद्दी

सलीम हड्डी को 'हड्डी' नाम दिया गया था क्योंकि उसका कंठ बहुत बड़ा था। वह अबू सलेम का करीबी था और चेंबूर में बिल्डर मोहन कुकरेजा की हत्या में उसका नाम आया था। उस समय सलेम दाऊद इब्राहिम के लिए काम करता था। 27 नवंबर 1995 को जोगेश्वरी के मिल्लत नगर के पास एक मुठभेड़ में सलीम हड्डी अपने साथी और पूर्व पुलिसकर्मी राजेश इग्वे के साथ मारा गया।

सलीम कुट्टानेल्लूर (सलीम कुट्टा)

सलीम कुट्टानेल्लूर को उसके दांतों के कारण 'कुत्ता' उपनाम दिया गया था, क्योंकि उसके दांत कुत्ते के दांतों से मिलते-जुलते थे। 1993 के सिलसिलेवार बम धमाकों के साबित होने से पहले कोंकण तट पर हथियार और विस्फोटक सामग्री पहुंचाने में उसकी भूमिका के बाद वह सुर्खियों में आया था।

उन्हें तस्कर मोहम्मद डोसा के साथ-साथ टाइगर मेमन और दाऊद इब्राहिम का करीबी माना जाता था।

सलीम पासपोर्ट

कल्पना कीजिए कि आप अपने ट्रैवल एजेंट को 'पासपोर्ट' कहते हैं। खान ने दाऊद इब्राहिम को उसके यात्रा दस्तावेज़ बनवाने में मदद की थी, और यही नाम उसके साथ जुड़ गया। मोहम्मद सलीम कासिम अली उर्फ पासपोर्ट को 1993 के सिलसिलेवार बम धमाकों में आरोपी बनाया गया था, और बाद में 11 मई, 1998 को जेजे अस्पताल के पास भिंडी बाजार में हुई गोलीबारी में वह मारा गया।

सलीम तलवार

वह 1985 में डोंगरी में हुए एक चुनाव में बूथ कैप्चरर था। मतदान अधिकारियों और मतदाताओं को डराने के लिए उसने तलवार को हथियार के रूप में चुना था। बाद में उसे दाऊद का करीबी माना जाने लगा।

सलीम कुर्ला

सलीम को यह नाम उसके निवास स्थान के कारण मिला, क्योंकि वह उत्तरी उपनगर कुर्ला में रहता था। बिस्मिल्ला खान उर्फ कुर्ला ने नागपाड़ा में एक छोटे-मोटे कर्मचारी के रूप में काम शुरू किया था, बाद में वह दाऊद के छोटे भाई नूरा के साथ जुड़ गया। उन्होंने जल्द ही शबनम आर्ट्स इंटरनेशनल के बैनर तले एक फिल्म कंपनी खोली। कुर्ला पर कुछ लोगों को सैन्य प्रशिक्षण के लिए पाकिस्तान भेजने का आरोप लगा और उन पर 1993 के बम धमाकों के मामले में मुकदमा चलाया गया। 21 अप्रैल 1998 को ओशिवारा में छोटा राजन गिरोह ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी।

साजा के देना (एक थाली में परोसें)

खूबसूरत अशरफबी के पति महमूद कालिया, पठान गिरोह के सदस्य थे, जो 1981 में प्रभादेवी के पास दाऊद इब्राहिम के बड़े भाई शब्बीर की हत्या में शामिल थे।

लंबा, सांवला और सुगठित शरीर वाला कालिया जल्द ही गिरोह का वास्तविक नेता बन गया, जब समद खान और अमीरजादा जैसे सदस्य शहर में अलग-अलग गोलीबारी में मारे गए।

गिरोह का एक और प्रमुख सदस्य आलमजेब भी गुजरात के अहमदाबाद में निर्वासन के दौरान मारा गया। दाऊद के आदमियों ने इस गिरोह को लगभग पूरी तरह से नष्ट कर दिया था।

दाऊद ने कालिया से संपर्क किया और कहा कि वह उनके बीच की दुश्मनी को भुलाने के लिए तैयार है और उसे दुबई का मुफ्त टिकट देने की पेशकश की, जो उसे अपनी वफादारी बदलने के लिए राजी करने की एक चाल प्रतीत होती है।

कालिया की वापसी की टिकट नई दिल्ली के रास्ते बुक की गई थी। दाऊद ने मुंबई के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर कड़ी निगरानी होने और वहां उतरना उसके लिए सुरक्षित न होने का विश्वास दिलाकर उस हट्टे-कट्टे शूटर का भरोसा जीत लिया था।

दुबई में अपने प्रवास के दौरान कालिया को मुफ्त खरीदारी का मौका मिला। वे नई दिल्ली से घरेलू उड़ान से मुंबई पहुंचे।

उसके आगमन पर, सैंटाक्रूज़ में घरेलू हवाई अड्डे के ठीक बाहर, ई. अमोलिक के नेतृत्व में अपराध शाखा के अधिकारियों की एक टीम ने उसकी हत्या कर दी।

कालिया की पत्नी अशरफीबी को पूरा यकीन था कि दाऊद ने ही उसके पति की हत्या की साजिश रची थी। वह उसकी मौत का बदला लेना चाहती थी।

उस खूबसूरत महिला ने मदद के लिए कई प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टरों से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन वह अपने पहले प्रयास में असफल रही।

अंततः उसकी मुलाकात अरुण गावली के छोटे भाई किशोर गुलाब गावली उर्फ पापा से हुई। उसकी सुंदरता से मोहित होकर, उस उत्साही युवक ने दाऊद को चुनौती देना शुरू कर दिया। 22 फरवरी, 1990 को माहिम में उसकी हत्या कर दी गई।

पापा की हत्या के कारण हत्याओं का एक और दौर शुरू हुआ और गाव्लि और दाऊद इब्राहिम के बीच एक बड़ा मतभेद पैदा हो गया।

सत्रा (17)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'सत्रा' का अर्थ है मारवाड़ी व्यापारी। 1950 के दशक की शुरुआत से ही डोंगरी, शुक्लाजी स्ट्रीट और ग्रांट रोड के आसपास बड़ी संख्या में मारवाड़ी सेठ या व्यापारी सोने के कारोबार में लगे हुए थे। वे इस क्षेत्र में कई गिरोहों के उत्थान और पतन के साक्षी रहे हैं। कुछ तो अंडरवर्ल्ड से भी जुड़े हुए बताए जाते हैं।

सौदा फोक (कोई भुगतान नहीं)

मुंबई का अंडरवर्ल्ड अप्रत्यक्ष रूप से सट्टेबाजों से जुड़ा हुआ है और कई लोग क्रिकेट मैचों के दौरान उनसे सुरक्षा मांगते हैं।

कुछ गैंगस्टरों को अपने खुद के नियंत्रण वाले सट्टेबाजी के कारोबार में भारी नुकसान उठाना पड़ता है। इससे बचने का सबसे आसान तरीका सौदा फोक (एक तरह का जुआ) का आदेश देना है, लेकिन ऐसे में भुगतान स्वीकार नहीं किया जाता।

गोलीबारी में फंसने वाले सट्टेबाज अक्सर प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टरों से संपर्क करके अपना पैसा वापस पाने में मदद मांगते हैं।

गुप्त बंकर (दगड़ी चॉल के)

दगड़ी चॉल अपने परिसर की दीवारों के भीतर खोदे और बनाए गए गुप्त बंकरों के लिए प्रसिद्ध थी। इनमें से कुछ गुप्त ठिकाने तो कुछ रसोईघरों की टाइलों के नीचे भी स्थित थे।

दगड़ी चॉल के ज्यादातर गुंडे पुलिस छापों के दौरान इन बंकरों में छिप जाते थे। पुलिस को इनमें से कुछ गुप्त ठिकानों का पता लगाने में काफी समय लग गया।

अरुण गावली को 19 जुलाई, 1990 को मुंबई क्राइम ब्रांच की छापेमारी के दौरान गिरफ्तार किया गया था। वह अपने बिस्तर के खोखले हिस्से में छिपा हुआ मिला था।

पुलिस ने छापेमारी के दौरान एक स्वचालित कार्बाइन बरामद की। तलाशी अभियान के दौरान दिलीप कुलकर्णी, नीलम वालावलकर, सोनू वालावलकर, राजा जाधव, शंकर तेली और तान्या कोली को गिरफ्तार किया गया।

ए ए खान के नेतृत्व में आतंकवाद विरोधी दस्ते (एंटी टेररिस्ट स्क्वाड) द्वारा की गई एक अन्य छापेमारी में, पुलिस ने एक अन्य बंकर में बंद्या आदिलकर, नामदेव पाटिल, केशव उत्विल उर्फ अन्ना और गणेश भोसले उर्फ वकील को पकड़ा। अधिकारियों ने पास के एक अन्य बंकर से दो स्वचालित हथियार, चार रिवॉल्वर और 12 हथगोले जब्त किए।

शाहरुख

अंडरवर्ल्ड में माहिर निशानेबाज को कलाकार कहा जाता है। अगर निशानेबाज आकर्षक हो तो कभी-कभी उसे 'शाहरुख' भी कहा जाता है। ये नाम जासूस पुलिसकर्मियों को गुमराह करने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं।

शैम्पू! शैम्पू!

अरुण गावली गिरोह के सदस्य एक-दूसरे को 'शंबो, शंबो' कहकर अभिवादन करते थे। शंबो शब्द का प्रयोग अक्सर भगवान शिव के नाम के लिए किया जाता है। यह उनके करीबी लोगों के बीच एक 'पासवर्ड' भी है।

गावली भगवान शिव की परम भक्त हैं।

गावली की राजनीतिक शाखा, अखिल भारतीय सेना के सदस्यों ने भी इन शब्दों का प्रयोग किया था, जब वे दगड़ी चॉल में वित्तीय सहायता की मांग करते हुए मिले थे।

शाम्बो का शाब्दिक अर्थ है शांति का निवास। यह अर्थ कई लोगों के लिए आश्चर्यजनक हो सकता है जो भगवान शिव को केवल मृत्यु और विनाश से जोड़ते हैं।

वर्तमान संदर्भ में, शम्बो का अर्थ सर्वोच्चता और यहां तक कि मृत्यु भी है।

यह शब्द अविनाश सावंत और हेमंत देसाई जैसे मुठभेड़ विशेषज्ञों के बीच लोकप्रिय हो गया, जो लंबे समय से गावली गिरोह के सदस्यों पर नजर रख रहे थे।

Shashikant Sagwekar (Chinka Babu)

शशिकांत सागवेकर अश्विन नाइक गिरोह का एक प्रमुख सदस्य था। उसके ज्यादातर निशाने पर दक्षिण मुंबई के पायधोनी के व्यापारी और होटल मालिक थे।

कालबादेवी में सक्रिय मायेकर गिरोह के सदस्य भरत आंग्रे की हत्या के बाद चिंका बाबू अंडरवर्ल्ड का एक प्रमुख चेहरा बन गया। बाद में उसका स्थानीय गुंडे दशरथ रहाणे से टकराव हुआ, जिसकी 19 अक्टूबर 1990 को हत्या कर दी गई।

पुलिस रिकॉर्ड से पता चलता है कि सागवेकर का नाम 1991 और 1994 के बीच कम से कम 15 हत्याओं में आया था। 1999 में एक पुलिस मुठभेड़ में उसकी मौत हो गई।

Shashi Rasam (King Cobra)

एक पुलिस कांस्टेबल के बेटे शशि अंबाजी रसम ने मध्य मुंबई के सबसे खूंखार गैंगस्टरों में से एक बनने का सफर तय किया।

शशि पुलिस अधिकारी बनने की तैयारी कर रहा था, जब एक युवा लड़के के रूप में उसने एक कपड़े धोने वाले पर हमला कर दिया। शशि अपने स्कूल में एक समारोह के लिए देर हो रहा था और जब उसने देखा कि उसकी वर्दी इस्त्री नहीं की गई है तो उसे गुस्सा आ गया।

उस उग्र स्वभाव वाले युवक को इस अपराध के लिए गिरफ्तार कर लिया गया। यह उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ और वह पुलिसकर्मियों से नफरत करने लगा।

शशि ने पोदार मिल्स में क्लर्क की नौकरी छोड़ दी और मुंबई सेंट्रल के स्थानीय गुंडे बबन अमरुते के लिए काम करना शुरू कर दिया। इसके तुरंत बाद गली-मोहल्लों में झड़पें हुईं और 1968 में प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर महादेव माने की हत्या कर दी गई।

1971 में मध्य मुंबई के अगस्त क्रांति मैदान के पास पतंग उड़ाने को लेकर शशि का बॉलीवुड अभिनेता विनोद खन्ना से विवाद हो गया था। लेकिन वे जल्द ही दोस्त बन

गए।

बेहद आकर्षक दिखने वाला शशि इतना आक्रामक हो गया कि उसने पुलिस इंस्पेक्टर पदवाल पाटिल पर कुकरी (एक धारदार हथियार) से हमला कर दिया। अधिकारियों ने जरा भी समय बर्बाद नहीं किया और उसके खिलाफ मीसा के तहत मामला दर्ज किया गया।

1972 में जेल से रिहा होने के बाद शशि ने मुंबई सेंट्रल रेलवे स्टेशन के पास मालम मार्केट में अवैध शराब का धंधा शुरू कर दिया। प्रतिदिन लगभग 2,000 रुपये की आय से वह एक जीप और अन्य वाहन रखने में सक्षम था।

एक बार शशि ने नेपियन सी रोड पर तस्करी के सामान से लदे एक ट्रक को रोका और इसकी सूचना पुलिस को दी। यहीं से हाजी मस्तान, करीम लाला और वरदराजन मुदलियार के नेतृत्व वाले तस्करी गिरोहों के साथ उनकी जंग शुरू हुई।

कुछ ही समय बाद पुलिस ने उस पर कोबरा गैंग बनाने का आरोप लगा दिया। इसकी वजह यह थी कि उसके दोस्तों और साथियों ने अपनी बांहों पर फन वाले सांप का टैटू बनवा रखा था। उसके दोस्त आर सावंत याद करते हुए बताते हैं, "वह अकेला ही सब कुछ संभाल लेता था। वह इस बात का पूरा ध्यान रखता था कि उसके दोस्त उसके झगड़ों में न पड़ें। वह एक स्वदेशी डॉन था: कभी तस्करी या जबरन वसूली में शामिल नहीं हुआ।"

शशि की गैंगस्टर कुंदन दुबे से दोस्ती ही उसके पतन का कारण बनी। उसका रामा नाइक की बायकुला कंपनी से भी टकराव हुआ था।

25 अगस्त 1978 को, शशि की मुंबई सेंट्रल ब्रिज पर रामा नाइक के गुर्गों अवध रेगो और कालिया धनराज ने चाकू मारकर हत्या कर दी थी।

शिवाजी गावडे (शिव)

गावडे को पास की दगड़ी चॉल के विक्रेताओं से प्रोटेक्शन मनी वसूलने के लिए नियुक्त किया गया था। जल्द ही वह एक कुशल ड्राइवर के रूप में भी काम करने लगा और मुंबई सेंट्रल क्षेत्र में अवैध शराब की आपूर्ति करने लगा। बाद में, वह मुंबई में छोटा शकील के दाहिने हाथ, डोंगरी से सक्रिय ज़हूर मकांडा के रूप में काम करने लगा। मकांडा मुंबई में डी-कंपनी के नेटवर्क की देखरेख करता था। बाद में गावडे ने नासिक के पास चांदगढ़ में बांदीवेडेकर की हत्या कर दी। आर्थर रोड जेल में उसने छोटा राजन के लेफ्टिनेंट बालू डोकरे से हाथ मिला लिया।

शॉपिंग कर ले बेटा (जो चाहो खरीद लो बेटे)

गिरोह में नए सदस्यों को भर्ती करने के लिए 'पॉकेट मनी' का इस्तेमाल किया जाता है। यह कोई कॉलेज का छात्र भी हो सकता है और राशि मात्र 5,000 रुपये भी हो सकती है।

यह रिश्वत एक चूहेदानी की तरह काम करती है। एक बार अंदर जाने के बाद, भर्ती हुए व्यक्ति के लिए पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं होता। उसे जल्द ही पहरा देने या हथियार पहुंचाने जैसे छोटे-मोटे काम सौंप दिए जाते हैं।

थोड़े अनुभव के बाद, नए रंगरूट को शूटर के पद पर पदोन्नत कर दिया जाता है। एक सफल मिशन के बाद, शूटर धीरे-धीरे गिरोह जगत में ऊपर चढ़ता जाता है।

बेटा (बेटा) भावी सैनिकों के लिए स्नेह का एक आम शब्द है। गैंगस्टर बनने की चाह रखने वाला व्यक्ति इस शब्द के आगे झुक जाता है और सम्मानित महसूस करता है।

सर (सैमी सर)

श्रीनिवास स्वामीनाथन, जिन्हें सैमी सर के नाम से भी जाना जाता था, वह व्यक्ति थे जिन्होंने छोटा राजन गिरोह के सदस्यों को शिष्टाचार और अंग्रेजी सिखाई थी।

कल्पना कीजिए छोटा राजन को धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलते हुए। तिलक नगर, चेंबूर के एक नगरपालिका स्कूल से पांचवीं कक्षा की पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने वाले इस बच्चे को कोचिंग देना कितना मुश्किल रहा होगा।

केंबूर के पास स्थित घाटला गांव के रहने वाले विद्युत अभियंता स्वामीनाथन उर्फ सैमी, दो दशकों से अधिक समय तक छोटा राजन से जुड़े रहे।

राजन के प्रमुख सहयोगी और स्कूल के साथी, फरीद तनाशाह भी अपनी अंग्रेजी बोलने की क्षमता के लिए सैमी सर के ऋणी हैं।

बालू डोकरे और भरत नेपाली जैसे गैंगस्टरों ने भी दक्षिण पूर्व एशिया में छिपते समय सैमी सर से अंग्रेजी और पश्चिमी संस्कृति की शिक्षा ली थी। यूरोप में अपने प्रवास के दौरान यह शिक्षा उनके लिए उपयोगी साबित हुई।

स्वामिनाथन स्वयं एक विलासितापूर्ण जीवन शैली का आनंद लेते थे और नियमित रूप से सिंगापुर, हांगकांग और मुंबई के बीच यात्रा करते रहते थे। वे दक्षिण पूर्व एशिया में होटलों की एक श्रृंखला चलाते थे।

स्वामिनाथन की 2004 में ठाणे के वागले एस्टेट के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। संदेह है कि उसने राजन को धोखा दिया था।

मलिन बस्तियों

1970 के दशक के अंत तक, अंडरवर्ल्ड झुग्गी-झोपड़ियों के विकास का फायदा उठाने लगा था, उनका इस्तेमाल नए सदस्यों की भर्ती करने और शहर की राजनीति में घुसपैठ करने के लिए कर रहा था।

झुग्गी-झोपड़ियों के तेजी से विस्तार के साथ-साथ उपनगरों में संगठित अपराध में भी खतरनाक वृद्धि हुई। बिल्डर इमारतों के निर्माण के लिए बस्तियों को खाली कराने के लिए विभिन्न गिरोहों का इस्तेमाल कर रहे थे।

शांत कंजर मार्ग गांव में, झुग्गी बस्ती की आबादी महज दो साल में 30,000 बढ़ गई। झुग्गी बस्ती के मालिक नानजी शाह का स्थानीय गुंडे अशोक जोशी से झगड़ा हो गया। उनकी इस दुश्मनी में शाह समेत तीन साल से भी कम समय में 20 लोगों की जान चली गई।

अशोक जोशी जल्द ही कई राष्ट्रीय राजनीतिक नेताओं के साथ देखे जाने लगे। शिवसेना के नगर पार्षद खिम बहादुर थापा और उनके प्रतिद्वंद्वी अवधूत बोंडे और विलास माने का भांडुप पश्चिम की बड़ी झुग्गी बस्तियों पर दबदबा था।

झोपड़ियाँ बनाई गईं और 5,000 रुपये से लेकर 20,000 रुपये तक की कीमत पर बेची गईं। यह पैसा उन गिरोहों के पास गया जो झुग्गी-झोपड़ी मालिकों की रक्षा करते थे।

तमिल डॉन वर्धराजन मुदलियार उर्फ वर्धाभाई ने गुंडों को धारावी और कोलीवाड़ा क्षेत्रों में कलेक्टर की जमीन हड़पने के लिए उकसाया। अपने गढ़ में, उसने छोटे-मोटे शराब तस्करों को संरक्षण दिया और उनकी मार्केटिंग और वितरण का काम ऐसे संभाला जैसे वे कोई कॉर्पोरेट कंपनी हों।

अब्दुल मजीद अब्दुल्ला पटेल, जिन्हें यूसुफ पटेल के नाम से जाना जाता है, ने शहरी भूमि सीमा अधिनियम से बचने के तरीके खोजे। उन्हें आपातकाल के दौरान गिरफ्तार

किया गया और उन्होंने 32 महीने जेल में बिताए।

स्क्वायर-फीट भाई (स्थानीय हुडलूम)

इलाके के एक गुंडे को 'स्क्वायर फीट भाई' के नाम से भी जाना जाता है। यह उस सरगना को संदर्भित करता है जो शायद ही कभी अपने मोहल्ले से बाहर निकलता है और ज्यादातर इलाके के छोटे व्यापारियों से मिलने वाली मामूली रिश्वत पर ही अपना गुजारा करता है।

वह अक्सर एक स्थानीय गुंडा होता है, जिसका किसी बड़े गिरोह से कोई संबंध नहीं होता।

एक छोटा सा दलाल इलाके के स्थानीय मटका संचालकों, जुआ अड्डों और अवैध निर्माणों से खूब पैसा कमाता है। वह एक अहम मामले में मुखबिर और कभी-कभी गवाह की भूमिका भी निभाता है।

वह माफिया की आमदनी में बड़ा हिस्सा पाने की चाह रखने वाले बड़े गिरोहों से टकराव से बचता है। वह अपने हिस्से से संतुष्ट है।

सीधा (चाकू)

जब कोई गुंडा 'स्ट्रेटगुमा दिया' कहता है तो उसका असल मतलब होता है कि उसने किसी को चाकू मारा है।

कोबरा गिरोह के सरगना की हत्या ने बायकुला कंपनी को मुंबई के अंडरवर्ल्ड के शीर्ष स्तरों में पहुंचा दिया।

लगभग आधी रात के समय, रंगीन मिजाज शशि रसम बॉम्बे सेंट्रल रेलवे स्टेशन के पास एक टैक्सी से उतरीं।

वह मूंगफली खरीद रहा था तभी अचानक उसे अपने पेट में किसी तेज धार वाले चाकू से वार महसूस हुआ। इससे पहले कि वह ऊपर देख पाता, उसके धड़ पर कई बार चाकू से वार किया गया। नागपाड़ा पुलिस ने बाद में हत्या के सिलसिले में रमा नाइक, विलास चौगुले, विलास सावंत और छोटा बाबू को गिरफ्तार किया।

बायकुला स्टेशन से कुछ ही दूरी पर स्थित एक्स लेन में पुष्पा से विदा लेने के बाद रसम ने रामा नाइक और उसके साथियों को टैक्सी में उसका पीछा करते हुए नहीं देखा था। पुष्पा की मां के उसे विदा करने आने के बाद उन्होंने रसम का पीछा करना बेहतर समझा।

हमले के बाद रसम किसी तरह लड़खड़ाते हुए पास के रेलवे अस्पताल तक पहुंचा। कुछ घंटों बाद चोटों के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

संघर्षरत

"Shot dikha dunga. Main ab independent hoon. Mujhe paise chahiye" (I will ask my goons to open fire. I am idependent now and I want money), breakway gangster Ravi Pujari told a clearing agent at Mumbai's Chhatrapati Shivaji International Airport.

और पुजारी अकेला नहीं है। अश्विन नाइक गिरोह का कुमार पिल्लई और छोटा राजन गिरोह से अलग हुआ एजाज लकड़ावाला भी मुंबई के अंडरवर्ल्ड से सबसे बड़ा हिस्सा हासिल करने की होड़ में शामिल हैं।

राजन गिरोह से भागा हुआ एक और व्यक्ति हेमंत पुजारी भी मुंबई में कई लोगों को फिरौती के लिए फोन कर रहा है। ऐसा लगता है कि गिरोह से भागे हुए गैंगस्टर फिर से सक्रिय हो रहे हैं। लेकिन उनके स्रोत पुराने हो चुके हैं और उनके पास अनुभवी 'हैंडलर्स' की कमी है, जो मुख्य शूटरों का मार्गदर्शन कर सकें। महानगर में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए उन्हें अभी तक कोई बड़ा प्रभाव डालना बाकी है।

सुभाष सिंह ठाकुर

सुभाष सिंह मुंबई के अंडरवर्ल्ड में आज भी एक रहस्य बना हुआ है। जेल की कोठरी में दिन में दो बार किया जाने वाला उसका व्यायाम किसी उभरते हुए मुक्केबाज को भी शर्मिंदा कर सकता है।

1982 में, महाराष्ट्र में फतेह सिंह गायकवाड़ (जो अब सहायक पुलिस आयुक्त हैं) के नेतृत्व वाली पुलिस टीम की छह गोलियों से वह बच गए थे।

छह फुट से अधिक लंबा यह गैंगस्टर, जिसका वजन 100 किलो से अधिक है, एक साधु की तरह मौन रहता है।

लंबी दाढ़ी रखने वाले इस व्यक्ति को सुभाषभाई के नाम से भी जाना जाता है और वह उन कुछ गैंगस्टरों में से एक है जो जेल का 'भत्ता' या भत्ता प्राप्त करते हैं, जो कि कुछ करोड़ रुपये तक की संपत्ति रखने वाले व्यक्ति के लिए एक मामूली जीवन शैली है।

उल्हासनगर के कुछ वरिष्ठ राजनेता और मंत्री उनके शुभचिंतक माने जाते हैं। उनका कोई शिष्य नहीं है, लेकिन आजीवन कारावास की सजा काट रहे होने के बावजूद प्रतिद्वंद्वी डॉन हमेशा उनके साथ हाथ मिलाने को तैयार रहते हैं।

सुभाष सिंह ने एंथोनी वीरस्वामी उर्फ कालिया एंथोनी के मार्गदर्शन में अपना गिरोह शुरू किया। शुरुआत में यह गिरोह मुंबई के खार इलाके में महंगी कारों के ऑडियो सिस्टम चुराता था।

He was named in the murders of Satyavan Panchal, Abbas, John, Ayub, Ramesh Bhogle and smuggler Bakshi in 1989.

सुभाष सिंह ने 1992 में जे जे अस्पताल में हुई गोलीबारी में सुनील सावंत के साथ मिलकर काम किया था। उन्होंने अगले वर्ष नेपाल में पांच छोटा राजन गैंगस्टरों की हत्या को भी अंजाम दिया था।

सुनील सावंत (सौत्या)

सौत्या दाऊद इब्राहिम के गिरोह का एक प्रमुख सदस्य था। वह मुंबई में एक दर्जन से अधिक हत्याओं में शामिल था, जिनमें से सबसे प्रमुख 3 दिसंबर, 1988 को पनवेल में अशोक जोशी और चार अन्य लोगों की हत्या थी। वह जे जे अस्पताल गोलीबारी में भी मुख्य शूटर था।

यह कुख्यात गैंगस्टर लगभग 1984 के आसपास गिरगाँव के पास भूताची वाडी में रहता था। गिरगाँव में एक गुंडे से झड़प होने के बाद उसने रामा नाइक और अरुण गावळी की मदद मांगी।

नेपाल में छोटा राजन के पांच गुर्गों की हत्या में शामिल होने के प्रतिशोध में, सौत्या को उत्तम धोइपोडे, विलास जाधव और अब्दुल कादिर के साथ 1995 में दुबई के एक होटल के बाहर मार दिया गया था।

सुपारी (ठेके पर हत्या)

सुपारी या कॉन्ट्रैक्ट किलिंग, माफिया की भाषा में दशकों पहले शामिल होने के बावजूद आज भी एक चर्चित शब्द बना हुआ है। यह आमतौर पर किसी दुश्मन को जान से मारने या चाकू मारने का प्रस्ताव या अनुबंध होता है। इसे स्वीकार या अस्वीकार किया जा सकता है। सुपारी स्वीकार करने के बाद बड़ी रकम का लेन-देन होता है।

रामा नाइक, जो गैंगस्टरों की एक पीढ़ी को संवारने वाले गॉडफादर थे, ने बायकुला के पास स्थित अपने लाल विटे की चॉल से राजन महादेव नायर उर्फ बड़ा राजन के नेतृत्व वाले तिलक नगर के गैंगस्टरों के साथ गठबंधन किया। छोटा राजन उस समय महज उनका शिष्य था।

दाऊद इब्राहिम, रामा के भूतल वाले आवास पर अक्सर आता-जाता था। उसने नाइक से अपने भाई शब्बीर की मौत का बदला लेने में मदद करने की गुहार लगाई।

नायर ने आखिरकार सुपारी स्वीकार कर ली। लेकिन यह काम कौन करेगा? यह काम किसी ऐसे नए व्यक्ति को करना था जो पठान अमीरजादा की ताकत से अनजान हो।

उन्होंने बेरोजगार युवक डेविड परदेसी पर ध्यान केंद्रित किया, जिसने कुछ ही सप्ताह पहले ऑटो रिक्शा चालक अमर खोदगांवकर के माध्यम से काम के लिए बड़ा राजन से संपर्क किया था।

"Beta ek bahut bada kaam hain (son there is a significant task). Are you interested?" Rajan asked Pardesi.

"हां भाई" (हां), परदेसी ने उत्तर दिया।

परदेसी को 5 लाख रुपये की पेशकश की गई थी और काम पूरा होने के बाद और अधिक पैसे देने का वादा किया गया था।

Underworld don Vardharajan Mudaliar alias Vardhabhai despised the idea of accepting money to finish-off an adversary. "Tu mera beta jaisa hain. Yeh kaam mat le Dawood tuje marva dega." (You are like my son. Don't accept the money. Dawood will get you killed), Vardhabhai apparently warned Bada Rajan.

तिलक नगर के रहने वाले और राजन के पूर्व सहयोगी के सिंह, 1983 में सत्र न्यायालय में हुए सुनियोजित निष्पादन का जिक्र करते हुए कहते हैं, "राजन के सहयोगियों ने योजना पर काम करने में कुछ दिन बिताए।"

सादिक कालिया

रहस्यमय सादिक इस्माइल जलवार, उर्फ सादिक कालिया, उर्फ बाबा राजू, उर्फ बूथ, या नरसिम्हा का अपराध की दुनिया में उदय रहस्यमय था, जब उन्होंने 1995 में अपने पूर्व गुरु अरुण गावळी से नाता तोड़ लिया था।

उसका अगला कदम प्रतिद्वंद्वी गिरोह के सरगना छोटा शकील से हाथ मिलाना था। लेकिन शकील उस आदमी पर कैसे भरोसा करता, जो उसके प्रतिद्वंद्वी अरुण गावली का करीबी था? कालिया को अगले 30 दिनों में डोंगरी में अपने बहनोई को खत्म करने का आदेश दिया गया। कालिया द्वारा काम पूरा करने के बाद उसकी वफादारी साबित हो गई और मुंबई सेंट्रल के पास अग्रिपाड़ा के झूला मैदान के उस युवक ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

सादिक और उसका भाई आरिफ कौशल राज जैन और पूर्व सीमा शुल्क निरीक्षक फारूक बटाटावाला की हत्या में भी शामिल थे। उसने छह महीने से भी कम समय में छह साथियों की हत्या करके छोटा राजन गिरोह के सदस्यों में दहशत फैला दी थी।

पुलिस इंस्पेक्टर प्रदीप शर्मा, अरुण बोरुडे और पीएसआई दया नायक की एक टीम ने 12 दिसंबर, 1999 को उसे मार डाला।

Saman (Gun)

कुख्यात गैंगस्टर मेहदी इमरान ने भागने की योजना बनाना शुरू कर दिया और उसे पुलिस को डराने के लिए एक 'सामन' की जरूरत थी।

अली बुदेश के शीर्ष सहयोगी को जल्द ही कैदियों शब्बीर हुसैन शेख उर्फ मतीम, मोहम्मद उमर पाटकी उर्फ जावेद और यूसुफ हसन उर्फ यूसुफ टकला के रूप में भरोसेमंद लेफ्टिनेंट मिल गए।

मेहदी को जेल से भगाने की साजिश रची गई। शब्बीर, जावेद और यूसुफ जमानत पर रिहा होने के बाद भी मेहदी से मिलने जाते रहे और जेल अधिकारियों को जल्द ही तीनों को मेहदी के लिए फल लाते हुए देखने की आदत हो गई, कभी-कभी तो वे कई तरह के फल लाते थे।

उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि मेहदी पर बरसाया गया प्यार और देखभाल असल में उसके भागने की एक बड़ी और खतरनाक साजिश का हिस्सा था। गिरोह ने 27 मार्च, 2000 को दक्षिण मुंबई के डोंगरी इलाके से एक यामाहा मोटरसाइकिल चुराकर भागने की योजना को अंजाम दिया। अगले दिन, नल बाजार के पास एक फल विक्रेता से एक बड़ा तरबूज खरीदा गया। यूसुफ तकला ने प्लास्टिक सर्जन की कुशलता से तरबूज में एक गहरा चीरा लगाया और उसमें एक काले

पॉलीथीन बैग में लिपटी हुई बंदूक छिपा दी। वरिष्ठ निरीक्षक जयंत सरमोकदम बताते हैं कि तरबूज का जो टुकड़ा निकाला गया था, उसे पहेली के टुकड़ों की तरह वापस लगा दिया गया था। अगले दिन, तीनों आदमी तरबूज लेकर आर्थर रोड जेल के प्रवेश द्वार पर मेहदी के सत्र न्यायालय से लौटने का इंतजार कर रहे थे, जहां उसे सुनवाई के लिए ले जाया गया था।

जैसे ही गैंगस्टर पुलिस वैन से उतरा, उसे पुलिसकर्मियों की निगरानी में तरबूज पेश किया गया। मेहदी बिना किसी संदेह के तुरंत अपनी कोठरी में चला गया।

31 मार्च 2000 को मेहदी उर्फ दिलावर को माज़गाँव अदालत ले जाया जाना था। इस अवसर का लाभ उठाते हुए, हट्टे-कट्टे निशानेबाज ने दोपहर लगभग 2:30 बजे सुरक्षा दल से उसे अदालत की कैंटीन ले जाने का अनुरोध किया।

जल्दी से मिसल पाव और चाय पीने के बाद, मेहदी ने बिल का भुगतान किया, जबकि एक कांस्टेबल, हिम्मत अधाव, ने उसका दाहिना हाथ पकड़ रखा था। पुलिसकर्मियों को उस समय हैरानी हुई जब विचाराधीन कैदी ने अपना हाथ छुड़ा लिया और अपनी कमीज के नीचे छिपाई हुई रिवॉल्वर निकाल ली।

मेहदी ने पुलिसकर्मियों को डराने के लिए हवा में एक गोली चलाई और फिर गेट की ओर भाग गया। कुछ ही सेकंड में, मेहदी शब्बीर के पीछे यामाहा मोटरसाइकिल पर सवार हुआ, एक और गोली चलाई और डॉकयार्ड रोड की दिशा में तेजी से निकल गया। बाद में वह वाहन वडाला रोड रेलवे स्टेशन के पास लावारिस हालत में मिला।

सईद बटला

सरगना हाजी मस्तान के दफ्तर का दरवाजा खुला और फुर्तीला सैयद बटला अंदर आ गया। छोटे कद के उस गैंगस्टर ने मेज पर पैर रखे और उम्रदराज डॉन की आंखों में

आंखें डालकर देखा।

"बटला किसी का गुलाम नहीं है कि उसके गले में पट्टा डाल दो," (बटला तुम्हारा गुलाम नहीं है कि तुम उसे पट्टा बांध दो), डोंगरी के उस दिलेर युवक ने दफ्तर से बाहर निकलते हुए कहा।

यह सन् 1970 के दशक का मध्य था और हाजी मस्तान ने बाटला के साहसिक कारनामों के बारे में सुनकर उसे अपने लिए काम पर रखना चाहा। डॉन के साथ काम करने का मतलब था इलाके में अपने व्यापारिक हितों की रक्षा करना और बॉस को दुश्मनों के हमलों से बचाना।

मस्तान की आशंकाएं निराधार नहीं थीं। बाटला ने वास्तव में डोंगरी और आसपास के इलाकों में आतंक मचा रखा था और दाऊद इब्राहिम और उसके बड़े भाई शब्बीर में भय पैदा कर दिया था।

मस्तान ने इलाके के व्यापारियों से पैसे वसूलने और अपने माल को ग्राहकों तक सुरक्षित पहुंचाने के लिए दाऊद-शबीर की जोड़ी को काम पर रखा था। ये दोनों भाई बाटला का मुकाबला नहीं कर सकते थे।

Shrikant (The Mama/Fool)

श्रीकांत देसाई को 'मामा' उपनाम मिला। 1985 में, जुहू स्थित मायावी प्रतिद्वंद्वी जॉन, छोटा नायर की हिट लिस्ट में था, साथ ही राजन के गुरु राजन नायर उर्फ बड़ा राजन की हिट लिस्ट में भी था।

बड़ा राजन, छोटा राजन, अनिल परब, डैनी और श्रीकांत देसाई सहित कई गैंगस्टरों ने जॉन की उसके घर के पास हत्या करने की साजिश रची।

अगले कुछ ही मिनटों में जॉन कई घावों के साथ खून से लथपथ पड़ा था। जैसे ही जॉन के समर्थक मौके पर पहुंचे, हत्यारे तेजी से भाग निकले। छह फुट लंबे देसाई को जुहू बीच की ओर जाते देखा गया, जो आत्महत्या के समान होता। बड़ा राजन चिल्लाया, "अरे मामा, कहां भागता है?" (मूर्ख कहां जा रहे हो?) यही नाम उसके साथ जुड़ गया। बाद में, यह गुजराती राजन के सबसे भरोसेमंद गुर्गों में से एक बन गया और सहार हवाई अड्डे के आसपास के मालवाहक क्षेत्रों पर उसका नियंत्रण था।

3 फरवरी, 1993 को, वरिष्ठ निरीक्षक प्रदीप शर्मा और उनके पूर्व साथी विजय सालस्कर ने मलाड के दिंडोशी में एक मुठभेड़ में अपने आरोपी को मार गिराया।

रवि पुजारी ने मामा के कारोबार की बागडोर संभाल ली।

सिख जोड़ी

अंधेरी पूर्व के रहने वाले सिख कुलविंदर सिंह बेनाल ने छोटे-मोटे कॉलेज प्रोफेसर गुरचरण सिंह उर्फ मिक्की के साथ हाथ मिला लिया।

ये दोनों एक स्थानीय कॉलेज के छात्र थे। कुछ ही समय बाद अंधेरी में उनका संपर्क कनिया से हुआ, जो छोटा राजन गिरोह का एक प्रमुख सदस्य था।

शक्तिशाली सिखों ने मीरा रोड स्थित एक अपार्टमेंट में अनवर की हत्या कर दी और उसके शव को एक टेलीफोन बूथ में फेंक दिया। इसके बाद दोनों ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। जेल में कुछ समय बिताने के दौरान मिक्की और बेनाल का राजन से संबंध टूट गया और उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी छोटा शकील से हाथ मिला लिया।

कॉलेज की पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने वाला वह व्यक्ति जल्द ही दक्षिण पूर्व एशिया में शकील का खास आदमी बन गया और उसे पिछले साल 25 मई 2003 को बैंकॉक में

एजाज लकड़ावाला को खत्म करने का काम सौंपा गया।

पुलिस को संदेह है कि मिक्की और बेनाल के ये दोनों व्यक्ति पंजाब और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के बीच आवागमन कर रहे होंगे।

छह मार्च डे

जब किसी गैंगस्टर को 'चार मार देना' कहा जाता है, तो इसका मतलब होता है कि उसे पीड़ित को डराकर उससे पैसे वसूलने के लिए कहा जा रहा है। दाऊद के लेफ्टिनेंट मोहम्मद कंजारी ने जब अपने आदमियों को 'छह मार दे' का निर्देश दिया, तो इसका मतलब था कि लक्षित व्यक्ति की हत्या कर दी जाए।

सुभाष मकड़वाला

सुभाष मकड़वाला उर्फ सुभाष कुंचिकुर्वे, दाऊद इब्राहिम के सबसे कुख्यात हत्यारों में से एक था, जिसका नाम मुंबई के उत्तरी उपनगरों में 30 से अधिक हत्याओं में आया था। सुभाष कुंचिकुर्वे के रूप में जन्मा, वह शोलापुर के पास बंदरों को वश में करने वाले मकड़वाला कबीले से था।

सब कुछ ठीक चल रहा था, जब तक कि स्थानीय गुंडे प्रभाकर जाधव का विनोद मोहिते की बहन के साथ झगड़ा नहीं हो गया। मोहिते, मकड़वाला का बचपन का दोस्त था। मामला तब और बिगड़ गया जब मोहिते की बहन ने इस मुद्दे पर खुद को आग लगा ली। दोस्तों के समूह ने जाधव को सबक सिखाने की कसम खाई और कंजर मार्ग पर अनिल परब से संपर्क किया, जो अशोक जोशी गिरोह से अलग हो गया था।

परब ने समूह के साथ अपने अनुभव साझा किए, जिसके परिणामस्वरूप जाधव की 72 बार चाकू से वार करके हत्या कर दी गई।

इस घटना के बाद, लगभग 1988-89 में, एक नया गिरोह बना और मकड़वाला उसका नेता बन गया। उपनगरों के कुख्यात बदमाशों कृष्णा पिल्लई, लाल सिंह चौहान और अशोक जोशी की हत्याओं में नाम आने के बाद मकड़वाला अंडरवर्ल्ड में जाना जाने लगा।

पुलिस ने दावा किया कि मकादवाला हमेशा एके 56 असॉल्ट राइफल और .38 कैलिबर रिवॉल्वर से लैस रहता था।

Makadwala was killed on May 6, 1993, in an encounter near Amrut Nagar in Ghatkopar, in north Mumbai.

Sunil Asolkar

32 वर्षीय सुनील असोलकर, जो गैंगस्टर सुरेश मांचेकर का करीबी सहयोगी था, अपने गुरु की टीएडीए के तहत गिरफ्तारी के बाद ठाणे और कल्याण के बीच के क्षेत्र में गतिविधियों को संभाल रहा था।

चिंतामन ज़ौकर उर्फ चिंट्या और कल्याणी ने लगभग 1988 में असोलकर को अपराध की दुनिया में धकेल दिया। स्कूली छात्र के रूप में, मुंबई के पूर्वी एक्सप्रेसवे से सटे घाटकोपर के निम्न-मध्यम वर्गीय इलाके नायडू कॉलोनी में ज़ौकर के दबदबे ने उसे प्रभावित किया।

असोलकर ने अपराध की शुरुआती शिक्षा तब सीखी जब सुरेश मांचेकर और गुरु सतम भूमिगत हो गए थे और पास के पंत नगर में ज़ौकर के ठिकाने पर रह रहे थे।

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, असोलकर का नाम न्हावा शेवा में लक्ष्मण भाई, वाडा में सुरेश किनी और ठाणे के मनपाड़ा में केशू और प्रफुल्ल केनी की हत्याओं में आया था। कल्याण में सुनील जाधव की हत्या भी उसके निशाने पर थी। असोलकर 3 अक्टूबर, 1998 को एक मुठभेड़ में मारा गया था।

सुनील घाटे (गावली के पहले नगर निगम उम्मीदवार)

अरुण गावली के प्रमुख सहयोगी सुनील घाटे - वार्ड नंबर 28 से अखिल भारतीय सेना के उम्मीदवार - पार्टी के पहले नगर निगम पार्षद बने।

संयोगवश, घाटे मुठभेड़ में मारे जाने के डर से मजिस्ट्रेट के सामने आत्मसमर्पण करने वाला पहला गैंगस्टर भी है। उसने 26 सितंबर, 1997 को अपने प्रमुख सहयोगी सदा पावले उर्फ मामा की हत्या के एक दिन बाद अदालत में खुद को पेश किया।

घाटे, अपने गुरु गावळी की तरह, कानून के शिकंजे में आने से पहले एक मिल मजदूर थे। 1977 में उनकी नौकरी चली गई और दोनों वैकल्पिक नौकरियों की तलाश में थे।

घाटे और गावली को 1990 में टीएडीए के प्रावधानों के तहत गिरफ्तार किया गया था। घाटे को तीन साल के भीतर रिहा कर दिया गया था, जबकि गावली को 1997 तक हिरासत में रखा गया था।

रामा नाइक की मृत्यु के बाद गावळी ने बायकुला कंपनी की बागडोर संभाली और घाटे एक भरोसेमंद पड़ोसी और गिरोह के अग्रिम पंक्ति के लेफ्टिनेंट के रूप में बने रहने से संतुष्ट थे।

सनी डांसर

लंबे, सांवले और आकर्षक व्यक्तित्व वाले वीरेंद्र सिंह जनकसिंह वर्मा आसानी से भारतीय सशस्त्र बलों के एक गौरवशाली सैनिक बन सकते थे, लेकिन उनके नृत्य के जुनून ने उन्हें 'सनी डांसर' का खिताब दिलाया और मुंबई के सबसे वांछित अपराधियों की सूची में उनका नाम शामिल कर दिया।

"1996 में मुलुंड चेकनाका पर संयोग से हमारी मुलाकात सनी से हुई। उसने 55 से अधिक डकैतियों का जुर्म कबूल किया," सनी को पकड़ने वाली टीम के सदस्य सहायक पुलिस निरीक्षक राजन वनमाने याद करते हैं। वे आगे कहते हैं, "वह दिखने में आकर्षक था, बहुत सभ्य लगता था और धाराप्रवाह अंग्रेजी भी बोल सकता था।"

"दरअसल, पूछताछ के दौरान सनी ने अभिनेता अजय देवगन के घर में हुई चोरी की बात कबूल कर ली थी।" वनमाने का कहना है कि सनी के पास से बरामद सामान में देवगन का रिवॉल्वर भी मिला था। बताया जाता है कि सनी ने सांताक्रूज़ स्थित अजय देवगन के घर में सेंध लगाई थी और शूटिंग के सिलसिले में शहर से बाहर गए अभिनेता से 25 लाख रुपये भी चुरा लिए थे।

कोली से पूछें

9 सितंबर, 1993। नागपुर जाने वाली एक लंबी दूरी की ट्रेन कल्याण रेलवे स्टेशन पर रुकी। अरुण गावली के भरोसेमंद सहयोगी तान्या कोली को सुरक्षा दे रहे तीन सशस्त्र

पुलिसकर्मी डिब्बे से बाहर निकल गए, जिससे गैंगस्टर कोली वहीं रह गई। अगले ही पल, अमर नायक और उसके साथी डिब्बे में घुस आए, कोली पर गोलियां चलाईं और भाग गए। पुलिसकर्मी वापस लौटे तो उन्होंने कोली को खून से लथपथ पाया।

अपराध शाखा के अधिकारियों के अनुसार, यह हत्या अमर नायक के छोटे भाई अश्विन के ससुर हरकिशन जेठवा की हत्या का परिणाम थी। कोली की हत्या अरुण गावली गिरोह के लिए एक बड़ा झटका था।

कोली ने मध्य मुंबई के कुम्भरवाड़ा में एक छोटे-मोटे गुंडे के रूप में अपना करियर शुरू किया, इससे पहले कि उसे 1980 के दशक के अंत में गिरफ्तार कर आर्थर रोड जेल में बंद कर दिया गया। जल्द ही, जेल में विचाराधीन कैदियों से सुरक्षा राशि की वसूली को लेकर उसका गैंगस्टर अमर नाइक और उसके भाई अश्विन से टकराव हो गया।

कोली 1991 में बांद्रा के काला नगर के पास दाऊद इब्राहिम के सहयोगी राज्जी मेहंदी की हत्या में शामिल प्रमुख शूटरों में से एक था। संयोगवश, अलग होने से पहले कोली मेहंदी का निजी अंगरक्षक था।

Tapka Diya

6 सितंबर, 1983 को सुबह 11:30 बजे का समय था। पुलिस सब-इंस्पेक्टर इसहाक बागवान कुख्यात गैंगस्टर अमीरजादा नवाब खान को दाऊद इब्राहिम के बड़े भाई शब्बीर की हत्या के सिलसिले में सेशन कोर्ट ले गए थे।

वकील सत्र न्यायाधीश एस.वी. जोशी द्वारा मामले की कार्यवाही शुरू करने का इंतजार कर रहे थे। तभी जब चहल-पहल थोड़ी शांत हुई, तो एक 20 वर्षीय लगभग अज्ञात युवक पुलिस घेरा तोड़कर अदालत में प्रवेश करने में कामयाब हो गया।

अचानक, युवक ने 180 डिग्री का मोड़ लिया और कैदी के बाड़े की ओर वापस दौड़ पड़ा। उसकी तेज गति ने अमीरजादा को आश्चर्यचकित कर दिया।

युवक ने अपनी कमीज के नीचे छिपाई हुई .38 कैलिबर की रिवॉल्वर निकाली और पांच फीट से भी कम दूरी से गोली चला दी। कुछ ही सेकंड में, अमीरजादा खून से लथपथ पड़ा था, उसकी छाती, गर्दन के ऊपरी हिस्से और पेट में तीन-तीन गोलियां लगी थीं।

अदालत कक्ष में अफरा-तफरी मच गई और लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। सह-आरोपी जाफर जमाल सिद्दीकी ने अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया।

"रुको! भागो मत। रुको," अपराध शाखा से जुड़े सब इंस्पेक्टर इशाक बागवान ने चिल्लाकर कहा।

भगवान ने तुरंत मोर्चा संभाला और अपने .38 कैलिबर टाइटन टाइगर सर्विस रिवॉल्वर से गोलीबारी करके हमलावर को भागने से रोक दिया। घायल हमलावर को काबू में कर निहत्था कर लिया गया, जिसने अपना नाम डेविड परदेसी बताया, जो चेंबूर के तिलक नगर का रहने वाला एक बेरोजगार युवक था।

इसी बीच, भागने वाले वाहन के चालक मनोहर उर्फ मंग्या ने बॉस को सूचित किया, "टपका दिया"।

इस ऑपरेशन ने पल भर में एक किंवदंती का रूप ले लिया और मुंबई के अंडरवर्ल्ड के समीकरण को पूरी तरह बदल दिया। दाऊद अंडरवर्ल्ड का सरगना बन गया।

किशोर

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'टीन ऑर थ्री' का मतलब मौत होता है। यह किसी गैंगस्टर की मौत हो सकती है या परिवार के किसी सदस्य का निधन।

तेल (तेल)

1980 के दशक के मध्य में, दाऊद दुबई में अपने साथियों को फोन करता और पूछता कि क्या वे अपने माल के साथ कुछ तेल (सोने की तस्करी का एक नरम शब्द) की तस्करी करना चाहेंगे। सोना और तेल लगभग एक ही रंग के होते हैं। भोले-भाले लोग मान जाते। दाऊद उनके द्वारा दिए गए अधिकांश सोने को दुबई में बेच देता और माल का एक छोटा हिस्सा भेजता। वह सीमा शुल्क विभाग में अपने संपर्कों के माध्यम से सोने को जब्त करवाता और 20 प्रतिशत इनाम का दावा करता। वह अपने साथियों को बताता कि वे बदकिस्मत थे। चूंकि उन्हें जब्ती के बारे में पता चल जाता था, इसलिए उनके पास दाऊद पर भरोसा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता था।

(1,000 रुपये)

अंडरवर्ल्ड में 'थान' का अर्थ 1,000 रुपये भी होता है। डोंगरी और आसपास के इलाकों के वरिष्ठ निवासी आज भी इस शब्द का प्रयोग करते हैं।

चीता

इब्राहिम मुश्ताक मेमन दक्षिण मुंबई में कड़िया बिल्डिंग के आसपास की संकरी गलियों में पले-बढ़े। पांच भाइयों के परिवार में जन्मे, उनके पिता मुश्ताक चाहते थे कि वह क्रिकेट खेलें और उनका नाम टाइगर पटौदी के नाम पर टाइगर रखना चाहते थे।

नौवीं कक्षा से पढ़ाई छोड़ने के बाद, वह इतना आक्रामक हो गया कि उसके पिता ने उसका नाम टाइगर रख दिया। टाइगर का संबंध तस्करों मोहम्मद डोसा और मुस्तफा डोसा उर्फ मजनून से हो गया, जो लगभग 1984 में उस इलाके में अक्सर आते-जाते थे।

टाइगर की बहादुरी से प्रभावित होकर उसे ड्राइवर और बॉडीगार्ड के रूप में काम पर रख लिया गया। एक बार दुबई में रहने वाला तस्कर याकूब भट्टी व्यापारिक यात्रा पर मुंबई आया था और किसी तरह पुलिस को उसकी मौजूदगी की सूचना मिल गई और वे उसका पीछा करने लगे। मेमन ने पुलिस की पकड़ से बचते हुए भट्टी को कम से कम समय में हवाई अड्डे तक पहुँचाकर उसका दिल जीत लिया। तस्कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने मेमन को दुबई आने का न्योता दिया और उसे कारोबार में पाँच प्रतिशत हिस्सेदारी भी दी। मेमन ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और उसके बाद उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

मेमन ने आरडीएक्स की तस्करी की साजिश रची थी, जिसका इस्तेमाल बाद में 1993 के सिलसिलेवार बम धमाकों में किया गया। यह भी माना जाता है कि उसने पाकिस्तानी आईएसआई के एजेंटों के इशारे पर दुबई से 25 युवाओं को प्रशिक्षण दिलवाया था। आज मेमन कराची में छिपा हुआ एक सफल व्यवसायी है।

Tilak Nagar

उत्तरी मुंबई में अंडरवर्ल्ड की गतिविधियों का केंद्र।

यह निम्न आय वर्ग का इलाका उत्तरी मुंबई के औद्योगिक क्षेत्रों के बीच स्थित था। यहाँ के अधिकांश निवासी ठाणे-बेलापुर औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत थे।

तिलक नगर के कुछ गैंगस्टरों ने बाद में गलत रास्ते पर जाने से पहले पास की कंपनियों में कुशल कामगार के रूप में काम किया था।

फिलिप्स पंधारे पास की एक ऑटोमोबाइल फैक्ट्री में टर्नर का काम करते थे। उनके कट्टर प्रतिद्वंद्वी राजन नायर भी वहीं मशीनिस्ट के रूप में कार्यरत थे।

छोटा राजन के पिता सदाशिव निखलजे मुलुंड की एक दवा कंपनी में कार्यरत थे। 1970 के दशक के उत्तरार्ध में हत्याओं का सिलसिला शुरू होने से पहले लगभग सभी गैंगस्टरों का औद्योगिक क्षेत्र से संबंध था।

राजन नायर उर्फ बड़ा राजन को तिलक नगर गिरोह का सरगना माना जाता है। उनके शिष्य छोटा राजन ने 1983 में कमान संभाली। अन्य लोगों में मोहन कोटियन, प्रदीप मदगोनकर उर्फ बंद्या मामा, रमेश शर्मा उर्फ गंगा, गणेशसिंह बिष्ट उर्फ डैनी और फरीद तनशाह शामिल थे।

जब छोटा राजन दाऊद इब्राहिम का मुख्य सरगना था, तब तिलक नगर उसके गिरोह के सदस्यों का प्रमुख ठिकाना बन गया था। 1993 में दाऊद से अलग होने के बाद भी राजन कॉलोनी से नए सदस्यों की भर्ती करता रहा।

तेरे मरने से मैं जिउ तो तू मर जा

अगर मैं तुम्हारी मौत के बाद ज़िंदा रहूँ तो बेहतर है कि तुम मर जाओ - यह वाक्य अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम अक्सर इस्तेमाल करता था। शायद ये वो आखिरी शब्द होते हैं जो एक गद्दार को फांसी से पहले सुनने को मिलते हैं। ये शब्द तब इस्तेमाल किए जाते हैं जब उसका कोई साथी या तो दुश्मन बन जाता है या उसके लिए गंभीर समस्या बन जाता है।

थापा की हत्या (दाऊद-राजन का विभाजन)

नगर निगम पार्षद खिम बहादुर थापा की हत्या के कारण छोटा राजन और उसके गुरु दाऊद इब्राहिम के बीच दरार पड़ गई।

1 फरवरी, 1992 को मुठभेड़ में अपने प्रमुख सहयोगी नरेश अवतु उर्फ जुक्कर की हत्या के बाद छोटा राजन काफी परेशान था।

अवतु ने अपने बड़े भाई अमर, दिवाकर चुरी और संजय रुग्गड़ के साथ मिलकर राजन का कोर ग्रुप बनाया।

यह ज्ञात था कि जिस क्षेत्र में अवतु की हत्या हुई थी, वह शिवसेना के पार्षद थापा के 'नियंत्रित' क्षेत्र में था।

राजन, जो उस समय दाऊद का दूसरा सबसे बड़ा कमांडर था, को बताया गया कि थापा ने पुलिस को अवतु के ठिकाने के बारे में जानकारी दी थी।

राजन मुंबई के उत्तरी उपनगरों में थापा के तेजी से बढ़ते प्रभाव को लेकर चिंतित थे, जो कभी उनके नियंत्रण में हुआ करता था।

थापा राजनीतिक रूप से काफी मजबूत थे। इसके अलावा, भांडुप के आसपास के उपनगरों में उनके बहुत सारे समर्थक थे।

चौकीदार से नेता बने राजन को कंजरमार्ग के उनके प्रमुख प्रतिद्वंद्वी अशोक जोशी की मृत्यु के बाद लगभग कोई चुनौती नहीं मिली। दाऊद इब्राहिम के प्रमुख सहयोगी सतीश राजे की अरुण गावली गिरोह के अशोक जोशी द्वारा हत्या किए जाने के बाद सत्ता का समीकरण बदल गया था, यही एक कारण था कि राजन ने थापा की हत्या की साजिश रची। राजन ने जल्द ही अवधूत बोंडे और विलास माने के साथ गठबंधन कर लिया - ये दोनों स्थानीय गुंडे थे जिनका थापा से टकराव चल रहा था।

थापा की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जा रही थी। राजन के साथियों ने 23 अप्रैल, 2001 को भांडुप के मंगतराम पेट्रोल पंप के पास उसे घेर लिया और उसकी हत्या कर दी।

इस हत्या से दाऊद को गहरा सदमा लगा था। थापा की हत्या से पहले राजन ने दाऊद की अनुमति नहीं ली थी। अंडरवर्ल्ड में यह धारणा बन गई थी कि राजन का अहंकार बढ़ गया था और वह बेहद असुरक्षित महसूस कर रहा था।

तीसरा गियर

तीसरे गियर का मतलब है किसी को चकमा देना या तेज़ी से निकल जाना। यह शब्द कार में गति बढ़ाने के लिए इस्तेमाल होने वाले तीसरे गियर से बना है।

तूफ़ानी (सीबीआई की फाइलें अभी भी खुली हैं)

मोहम्मद शफी शेख उर्फ शफी तूफानी कई खुफिया एजेंसियों के करीबी थे और उन्होंने कई अहम सूचनाएं दीं, जिनसे बड़ी मात्रा में ड्रग्स जब्त की गईं, और खासकर एक विदेशी ड्रग तस्कर के ठिकाने का पता चला। हैरानी की बात यह है कि उन्हें उनके छिपने के ठिकाने से बाहर निकाला गया और दक्षिण मुंबई के नल बाजार के पास दिनदहाड़े मुठभेड़ में मार दिया गया। हालांकि कुछ अपुष्ट रिपोर्टों में कहा गया है कि एक खुफिया अधिकारी ने तूफानी के ठिकाने की जानकारी दी थी, वहीं कुछ लोग इसका आरोप शेख मोहम्मद हुसैन उर्फ हुसैन उस्तारा पर लगाते हैं। हुसैन उस्तारा भी खुफिया एजेंसियों के करीबी माने जाते थे और हो सकता है कि उन्होंने ही पुलिस को अपने प्रतिद्वंद्वी के ठिकाने की जानकारी दी हो।

लेकिन ड्रग्स से जुड़ी थ्योरी सबसे ज्यादा विश्वसनीय लगती है। तूफानी ने मुंबई में ड्रग तस्करी नेटवर्क के बारे में पुलिस को कुछ अहम जानकारी दी थी। तूफानी को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि ड्रग माफिया के मुखबिर नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो और इंटेलिजेंस ब्यूरो जैसी केंद्रीय खुफिया एजेंसियों में मौजूद थे। मुखबिर को चुप कराकर चौंकाने वाली कार्रवाई करने में उन्हें देर नहीं लगी। वह एक भाड़े का गुंडा था जो महमूद कालिया और फजलू जैसे छोटे-मोटे गिरोहों के सरगनाओं के लिए काम करता था। तूफानी मोहम्मद शकील शेख बाबू शेख उर्फ छोटा शकील के भी काफी करीब था, जब वह डोंगरी के टेमकर स्ट्रीट पर शाम्स ट्रैवल एजेंसी चला रहा था। यह रिश्ता ज्यादा समय तक नहीं चला, क्योंकि शकील 1988 में देश छोड़कर भाग गया।

1995 में तूफानी के साथ हुई मुठभेड़ की जांच करने का आदेश केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को दिया गया था। जांच के नतीजे अभी भी रहस्य बने हुए हैं।

टोपी (द ऐस ट्रिकस्टर)

सईद टोपी, दाऊद इब्राहिम के भाई नूरा इब्राहिम कास्कर का एक प्रमुख सहयोगी है। टोपी अंधेरी के एक रेस्तरां में एक बिल्डर को सुरक्षा राशि के भुगतान को "निपटाने" के लिए बुलाता है। बातचीत शुरू होने के कुछ ही मिनटों बाद, टोपी के मोबाइल पर एक कॉल आती है और वह अपनी सीट से उछल पड़ता है। "भाई, जी, भाई, जी" वह बार-बार दोहराता है। माइक्रोफोन पर हाथ रखे हुए, वह बिल्डर से फुसफुसाता है, "दूसरी तरफ दाऊद है।" वह बातचीत जारी रखता है, "भाई, बड़े ही विनम्र आदमी हैं। वह मेरा आदमी है। बस उसे कुछ घंटे दे दीजिए," वह गिड़गिड़ाने का नाटक करता है। टोपी फोन काट देता है और कहता है, "उसे समझाना बहुत मुश्किल है। वह तुम्हें

मारना चाहता है, लेकिन मैंने कुछ और समय मांगा है, जल्दी करो।" डरा हुआ बिल्डर इस बात से अनजान है कि "भाई" टोपी का ही एक सहयोगी है, जो सड़क के उस पार एक टेलीफोन बूथ से फोन कर रहा है। वह धमकी के आगे झुक जाता है और कुछ लाख रुपये दे देता है। अंडरवर्ल्ड की भाषा में, धोखेबाज को 'टोपी' भी कहा जाता है। सईद के मामले में, यह उपनाम उस पर पूरी तरह से लागू होता था क्योंकि वह एक माहिर धोखेबाज था।

(टैक्सी) के नीचे

'काम होने के बाद उंदिर में निकल जद" (टैक्सी में अपराध स्थल से भागना)।

यह शब्द सुरेश मांचेकर के सहायक संतोष नायक उर्फ महाराज ने मुख्य निशानेबाज किसान शिंदे उर्फ मैनेजर के साथ मिलकर साजिश रचते समय इस्तेमाल किया था। दरअसल, 'उंदिर' (मराठी में चूहा) का मतलब टैक्सी होता है।

इस साजिश के सभी विवरणों का घड़ी की सुई की तरह सटीक रूप से पालन किया गया। 22 मार्च, 2002 को परेल स्थित अपने कार्यालय की पहली मंजिल पर बिल्डर महेंद्र खानविलकर की गोली मारकर हत्या करने के बाद हमलावर टैक्सी में बैठकर फरार हो गए।

Upar Se Phone Aaya Tha

इसका सीधा मतलब यह है कि दाऊद इब्राहिम का फोन आया था। यह वाक्य, "ऊपर से फोन", आमतौर पर दाऊद के सहयोगी दक्षिण मुंबई के डोंगरी और बोरी मोहल्ला स्थित अपने गढ़ों में इस्तेमाल करते हैं।

यू टर्न

एक गैंगस्टर तब यू-टर्न लेता है जब वह अपने मूल स्थान पर लौटता है या कुछ समय के अंतराल के बाद गिरोह में फिर से शामिल हो जाता है।

साइमन थॉमस मैनुअल उर्फ सिकंदर उर्फ शानू रातोंरात सांप पालने वाला क्रूर अपराधी नहीं बन गया। उसे एक मामूली लुटेरे से छोटा शकील गिरोह का शूटर बनने में लगभग 15 साल लगे।

माफिया डॉन राजन से अपने गिरोह में शामिल होने का प्रस्ताव मिलने से पहले साइमन का नाम डकैती, जबरन वसूली और लूटपाट के 34 से अधिक मामलों में दर्ज था।

हालांकि, यह व्यवस्था कारगर नहीं रही और साइमन जल्द ही प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम के साथ मिल गया। साइमन को 1994 में गिरफ्तार कर ठाणे जेल में डाल दिया गया। जेल से निकलने के बाद साइमन छोटा शकील के साथ फिर से जुड़ गया। 1997 में विक्रोली स्थित एक अदालत के बाहर गोलीबारी में छोटा शकील के प्रमुख सहयोगी इस्माइल मलबारी की मौत के बाद वह उसका दूसरा सबसे बड़ा सरगना बन गया। उसने जल्द ही सिकंदर नाम से काम करना शुरू कर दिया और कम से कम 15 हत्याओं में शामिल रहा। 1998 में उत्तर पश्चिम क्षेत्र को सौंपी गई एक विशेष टीम ने उससे 13 बंदूकें बरामद कीं।

कर्नाटक के मंगलौर के पास करकला गांव का यह गैंगस्टर, छोटा शकील से एक बार फिर भिड़ गया, जब वह 25 लाख रुपये और भारी मात्रा में हथियार लेकर गायब हो गया। फिर वह सामने आया और शकील के साथ मिलकर प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर छोटा राजन से भिड़ गया। उसने पश्चिमी उपनगरों में गोरेगांव और बोरीविली के बीच आतंक मचा रखा था।

अपराध शाखा द्वारा पीछा किए जाने के कारण, साइमन को 22 अप्रैल, 2000 को बोरीविली में सहायक पुलिस निरीक्षक प्रदीप शर्मा, अरुण बोरुडे और दया नायक की टीम द्वारा की गई मुठभेड़ में गोली मार दी गई।

Uski Zindagi Kuch Lambi Ho Gayi (His Life Just Got Another Extention)

मुठभेड़ विशेषज्ञ विजय सालस्कर उन अग्रणी लोगों में से एक थे जिन्होंने दगड़ी चॉल से जुड़े लैंडलाइन और मोबाइल फोन पर नजर रखी थी और गैंगस्टरों और उनके साथियों के बीच होने वाली बातचीत को सुन रहे थे। उनका बड़ा सा हैंडसेट हर कुछ मिनट में बजता रहता था, लेकिन उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।

सालस्कर के आदमियों ने दगड़ी चॉलों में तलाशी अभियान चलाया - यह शिकारियों द्वारा अपने शिकार का पता लगाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक रणनीति है, जिसमें अक्सर शिकारी कुत्तों की मदद ली जाती है। सालस्कर, सादे कपड़ों में, बिना समय बर्बाद किए पुलिस उपायुक्त परमबीर सिंह के कार्यालय पहुंचे और बोले, "सर, हमने सदा पावले उर्फ मामा को दगड़ी चॉलों के अंदर देखा। वह भागने में कामयाब हो गया।"

सिंह: "उसकी जिंदगी कुछ लंबी हो गई है। कम से कम हम उसे उसके ठिकाने से बाहर निकालने में कामयाब तो हो गए। मुझे नहीं लगता कि उसे ढूंढने में ज्यादा समय

लगेगा।"

इसी बीच, सालस्कर का मोबाइल फोन लगातार बजता रहता है। निगरानी में रखी गई लाइनों में से एक पावले के छोटे भाई आनंद की है, जो सेंट्रल रेलवे में टिकट कलेक्टर है। वह विद्याविहार रेलवे स्टेशन के पास सरकारी क्वार्टर में रहता था।

सालस्कर हरकत में आ जाता है। "ये पावले हैं। ये कल शिरडी के लिए रवाना होने वाले हैं। चलो तैयार हो जाते हैं।"

डिप्टी अविनाश सावंत, हेमंत देसाई, सतीश मायकर, सचिन कदम और कुछ कांस्टेबल घाटकोपर में विद्याविहार को मुख्य एमजी रोड से जोड़ने वाले एक किलोमीटर के खंड पर एक टैक्सी और एक नीली मारुति वैन में तैनात हो गए।

26 सितंबर, 1997 को दोपहर लगभग 1:30 बजे, पावले, उनके शीर्ष सहयोगी विजय टंडेल और चार अन्य लोग एक पुरानी फिएट कार में सवार हुए। जैसे ही कार रेलवे कॉलोनी से धीरे-धीरे निकली, मुखबिर ने अलार्म बजा दिया।

सालस्कर अपनी मारुति 1000 से नीचे उतरे। उन्होंने चिल्लाते हुए कहा, "मैंने उससे हथियार छीन लिए और उसे कार से बाहर घसीट लिया।"

लेकिन पावले और टंडेल बिल्कुल आसान शिकार थे। कुछ ही सेकंड बाद दोनों की मौत हो गई।

उस्तरा

1970 के दशक में उस्तारा अंडरवर्ल्ड के पसंदीदा हथियारों में से एक था। हालांकि इसे अपने पास रखना गंभीर दंड का कारण नहीं बनता, लेकिन कुशल हाथों में यह जानलेवा साबित हो सकता है।

मोहम्मद हुसैन जाफर शेख को 'उस्तारा' उपनाम तब मिला जब उसने एक दुश्मन की गर्दन से लेकर कमर तक रेजर से वार कर दिया। सरकारी अस्पताल के डॉक्टर यह देखकर हैरान रह गए कि उनका मरीज सड़क पर हुई लड़ाई में घायल हुआ था। बताया जाता है कि उन्होंने मरीज से कहा था कि इतनी सटीकता से चीरा सिर्फ एक सर्जन ही लगा सकता है। हुसैन उस्तारा जल्द ही मुंबई के अंडरवर्ल्ड के बड़े सरगनाओं में मशहूर हो गया।

उस्तारा मुंबई के उन गिने-चुने गैंगस्टरों में से एक था जिन्होंने दक्षिण मुंबई में दाऊद इब्राहिम को उसी के गढ़ में चुनौती देने की हिम्मत दिखाई। संयुक्त पुलिस आयुक्त राकेश मारिया के अनुसार, उसने शफी तूफानी और फारूक बटाटावाला के साथ मिलकर एक घातक गठबंधन बनाया था।

छोटा राजन और बबलू श्रीवास्तव जैसे गैंगस्टर भी दाऊद इब्राहिम से अपना हिसाब चुकता करने के लिए उसके साथ मिल गए थे। पायधोनी स्थित अपने किलेबंद आवास से काम करते हुए वह कुछ केंद्रीय खुफिया एजेंसियों का भी चहेता बन गया था।

उस्तारा की हत्या 11 सितंबर, 1998 को अग्रिपाड़ा के पास दाऊद इब्राहिम के गुर्गे मोहम्मद कंजारी ने कर दी थी।

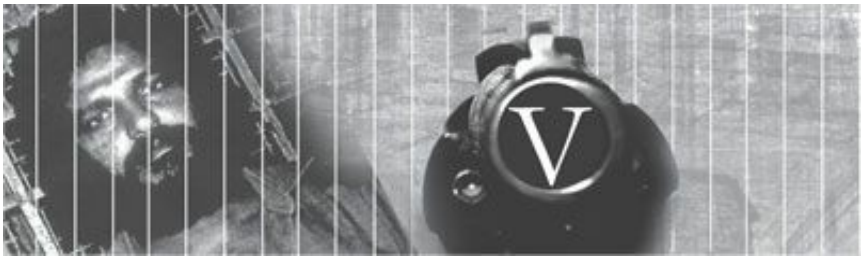

Vaman Salgaonkar

मुंबई के मध्य उपनगरों में डॉन के रूप में सक्रिय वामन सालगांवकर ने अपने करियर की शुरुआत एक लुटेरे के रूप में की थी। सालगांवकर, अपने समकालीन सुहास भाटकर उर्फ पोत्या की तरह, बाद में एक गिरोह का सरगना बन गया, लेकिन जल्द ही उसका प्रभादेवी के खेड़ गली में रहने वाले उस बदमाश और उसके पड़ोसी बाबा घुडे से टकराव हो गया।

जहां सालगांवकर और घुडे ने खेद गुल्ली साझा की, वहीं पोत्या यादव पाटिल वाडी पर हावी था।

ये गिरोह अधिकतर डकैती और मटका अड्डों को लूटने में शामिल थे। 1980 के दशक की शुरुआत में क्लबों से मिलने वाली सुरक्षा राशि और अवैध शराब की भत्तियाँ आय के अन्य स्रोत थे।

उस समय के आसपास, अमर नायक, मान्या सर्वे, तुकाराम टंडेल और दिलीप प्रभु के नेतृत्व वाले गिरोह दादर और प्रभादेवी में हफ्ता के बंटवारे को लेकर आपस में भिड़ गए थे। गिरोहों की संख्या बढ़ रही थी और उनके क्षेत्र सिकुड़ते जा रहे थे। स्वाभाविक रूप से, झड़पें अक्सर होती रहती थीं।

Venkatesh Kamath

पुलिस इंस्पेक्टर प्रफुल जोशी के अनुसार, वेंकटेश कामथ जेल में नजरबंदी के दौरान अमर नायक गिरोह के सदस्यों के साथ घनिष्ठ संपर्क में आया। यहीं पर उसका संपर्क अंडरवर्ल्ड से हुआ।

1986 में रिहा होने के बाद, उसने अपना पक्ष बदल लिया और सुरेश मांचेकर गिरोह से जुड़ गया। पुणे पुलिस द्वारा 2003 की शुरुआत में एक मुठभेड़ में मारे जाने से पहले वह ठाणे-कल्याण-लोनावला क्षेत्र में काफी सक्रिय था।

इससे पहले, कामथ को अपनी साली की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया था क्योंकि उसने उसे जेब खर्च के तौर पर 200 रुपये देने से इनकार कर दिया था।

Vardarajan Mudaliar

गॉडफादर वर्धाभाई को गैंगस्टरों और पुलिस से निपटने में असाधारण महारत हासिल थी। संभवतः वे अंडरवर्ल्ड के उन पहले लोगों में से एक थे जिन्होंने यह महसूस किया कि पुलिस और सरकार के समर्थन के बिना कोई साम्राज्य टिक नहीं सकता।

वर्धाभाई ने बंदरगाह में प्रवेश करके और सीमा शुल्क अधिकारियों, बॉम्बे पोर्ट ट्रस्ट के कर्मचारियों, पुलिसकर्मियों और बीमा एजेंटों के साथ मिलकर तस्करी के गिरोह बनाकर बड़े पैमाने पर तस्करी की दुनिया में कदम रखा। प्रारंभिक जांच से पता चला कि 1982 में अकेले तस्करी से ही उनकी वार्षिक आय लगभग 40 करोड़ रुपये थी।

कम से कम 20 प्रतिशत पुलिस बल किसी न किसी समय वर्धाभाई के संपर्क में रहा था। 1980 के दशक की शुरुआत में मुंबई के 50 से अधिक कुख्यात गैंगस्टर उनके प्रति वफादार थे।

बेबी खोपड़े, राजन नायर उर्फ बड़ा राजन, रमा नाइक और बाबू रेशिम नियमित रूप से उसकी सभाओं में आते थे। वह शहर के लगभग सभी कुख्यात अपराधियों को कानूनी और आर्थिक सहायता प्रदान करता था। उसने धारावी और सायन-कोलीवाड़ा के आसपास के इलाकों के झुग्गी-झोपड़ी मालिकों से दो करोड़ रुपये से अधिक की रकम वसूल की थी। इसके अलावा वह बार, वेश्यावृत्ति रैकेट और होटल जैसे अन्य व्यवसाय भी चलाता था।

समस्या तब शुरू हुई जब तत्कालीन पुलिस आयुक्त जे. एफ. रेबेरो ने पुलिस उपायुक्त वाई. सी. पवार को अत्यधिक तनावपूर्ण धारावी क्षेत्र में तैनात कर दिया। डॉन के

नेटवर्क का भंडाफोड़ करने और लगभग 1983 में सायन-कोलीवाड़ा में उसके मजबूत ठिकानों पर छापा मारने में अधिकारियों को लगभग दो साल लग गए।

पुलिस ने 1986 में एक डकैती मामले में वर्धाभाई को मुख्य आरोपी बनाया। वह अपने पैतृक शहर भाग गया, लेकिन 5 जनवरी, 1987 को वापस आकर अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

वर्धाभाई को जमानत पर रिहा कर दिया गया और उन्होंने जल्द ही अपने नेटवर्क पर फिर से मजबूत पकड़ बना ली। उन्होंने मुंबई में रहने वाले तमिल प्रवासियों के कल्याण के लिए एक सामाजिक संगठन, बॉम्बे तमिलर पेरावई की स्थापना भी की।

पुलिस के साथ उनका अगला टकराव मतुंगा रेलवे स्टेशन के पास उनके द्वारा आयोजित भव्य गणपति उत्सव के कारण हुआ।

वर्धाभाई के पूर्व सहयोगियों को संदेह है कि पठान गिरोहों ने ही उनके पतन की साजिश रची होगी। उन्होंने अपनी गतिविधियों का विस्तार बंदरगाहों में किया था, जो कभी उनका गढ़ हुआ करता था।

वर्धाभाई का 2 जनवरी, 1990 को चेन्नई में निधन हो गया। धारावी और माटुंगा में अंडरवर्ल्ड की गतिविधियां धीरे-धीरे निचले स्तर पर आ गईं।

Vinod Matkar

मतकर, गैंगस्टर छोटा राजन के कुख्यात हत्यारों में से एक था। मुंबई और नेपाल में 20 से अधिक हत्याओं में उसका नाम सामने आया था, जिनमें नेपाली सांसद मिर्जा दिलशाद बेग की हत्या भी शामिल है।

उसने मतुंगा में एक छोटे-मोटे लुटेरे के रूप में शुरुआत की और गिरोह की दुनिया में ऊपर चढ़ते हुए राजन के सबसे भरोसेमंद लेफ्टिनेंटों में से एक बन गया। मतकर ने बालू डोकरे और रोहित वर्मा के साथ मिलकर मुंबई में बम धमाकों के आरोपियों को निशाना बनाते हुए एक घातक गठबंधन बनाया।

बम विस्फोट के आरोपी मोहम्मद सलीम कासिम अली उर्फ सलीम पासपोर्ट, जो दाऊद इब्राहिम का एक प्रमुख सहयोगी था, की हत्या करने के बाद उसे मुंबई के दस सबसे वांछित गैंगस्टरों में शामिल किया गया था।

मतकर मध्य मुंबई के परेल स्थित एमडी कॉलेज का पूर्व छात्र था, जो उसके घर से कुछ ही दूरी पर था। 27 जनवरी, 1999 को खार में सब-इंस्पेक्टर दया नायक और इंस्पेक्टर प्रदीप शर्मा ने उसकी गोली मारकर हत्या कर दी थी। इस पूरी घटना की पड़ताल तत्कालीन पुलिस उपायुक्त के.एल. प्रसाद ने की थी।

विरार भूमि (जिसके कारण रामा नाइक की हत्या हुई)

विरार में संपत्ति को लेकर हुए विवाद के कारण रामा नाइक की मौत हो गई, जो एक गैंगस्टर था और जिसने दाऊद इब्राहिम को उसके प्रतिद्वंद्वियों, पठान गिरोह को खत्म करने में मदद की थी।

स्थानीय गुंडे जयेंद्र ठाकुर उर्फ भाई ठाकुर द्वारा विरार में उसकी जमीन पर कब्जा करने की धमकी दिए जाने के बाद एक बिल्डर ने रामा नाइक से संपर्क किया। रामा ने ठाकुर से विवादित जमीन छोड़ने का अनुरोध किया।

ठाकुर ने विवाद सुलझाने के लिए दाऊद इब्राहिम के प्रमुख सहयोगी शरद शेट्टी से संपर्क किया। शरद शेट्टी ने रामा से मामले में हस्तक्षेप न करने का अनुरोध किया।

राम ने शेट्टी की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह खुद को वरिष्ठ समझता था। लेकिन जब दाऊद ने उसे विरार भूमि सौदे से दूर रहने को कहा तो राम थोड़ा परेशान हो गया। बाद में वह दाऊद को अपने पक्ष में मामला सुलझाने के लिए मनाने दुबई गया, लेकिन उसे ज्यादा सफलता नहीं मिली।

दाऊद इस बात पर अड़ा हुआ था कि विरार की ज़मीन भाई ठाकुर को ही मिलनी चाहिए। रामा ने मुंबई लौटने से पहले अपने पूर्व शिष्य को खूब खरी-खोटी सुनाई। कुछ ही हफ्तों बाद दाऊद के गुंडों ने चेंबूर में उसकी हत्या कर दी।

Vithala Vithala

(महाराष्ट्र के प्रसिद्ध देवता विठ्ठल, जिनका नाम किसी की मृत्यु के समय लिया जाता है, उन्हें उनके स्वर्गलोक भेज दिया गया है)।

छोटा राजन के धुरंधर निशानेबाज बालू डोकरे और बाबा बुग्गा रेड्डी मुंबई के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास सहार गांव में स्थित एक मंजिला साधारण सी इमारत के प्रवेश द्वार पर लापरवाही से इंतजार कर रहे थे।

8 मई, 1998 की उमस भरी दोपहर थी। निम्न-मध्यम वर्गीय बस्ती के निवासियों को शायद ही पता था कि दो अन्य निशानेबाज सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा के प्रति बेपरवाह, क्लीयरिंग एजेंट राजू पिल्लई अपनी फाइलों को देखने में व्यस्त थे।

राजन के निशानेबाजों ने उसका पीछा किया था और बंटी पांडे ने अपनी कमीज के नीचे छिपाई हुई .38 कैलिबर की स्मिथ एंड वेसन पिस्तौल निकाली और करीब से गोलीबारी शुरू कर दी।

छत्रपति शिवाजी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर जाने वाली सड़क पर व्यस्त यातायात के कारण गोलियों की आवाज दब गई। पड़ोसियों को सतर्क होने में कुछ समय लगा।

कुछ ही मिनटों बाद, पांडे और विनोद मतकर सीढ़ियों से नीचे उतरे और डोकरे और रेड्डी के साथ मिल गए। चारों घातक हमलावर तेजी से एक मारुति 800 कार की ओर बढ़े जो उनका इंतजार कर रही थी और वह कार व्यस्त सड़क पर निकल गई।

'विठ्ठला। विठ्ठला' (मिशन पूरा होने का सांकेतिक शब्द) डोकरे ने अपने गुरु राजन से फुसफुसाते हुए कहा।

यह एक सुनियोजित और सटीक हमला था। सटीक सूचना मिलने के बाद, हत्या के गिरोह ने हमला करने से पहले घंटों तक रेकी की, जो मुंबई के अंडरवर्ल्ड की पहचान है।

डब्ल्यू (हथियार)

'W मत रख अपने पास' (अपने पास W मत रखो) वह संदेश है जो गोलीबारी या हत्या के तुरंत बाद दिया जाता है।

वालकॉट गिरोह

वालकॉट गिरोह 1965 से 1968 के बीच वर्ली की झुग्गी-झोपड़ियों से सक्रिय था। इसके सदस्य अवैध रूप से सामान चुराने में माहिर थे और कभी-कभी अपने प्रतिद्वंद्वियों के तस्करी के सामान को भी लूट लेते थे।

इस गिरोह का नेतृत्व जग्या-राग्या की जोड़ी कर रही थी। पूर्व पुलिस कांस्टेबल केशव भोसले की भी इस गिरोह के प्रमुख सदस्य के रूप में पहचान की गई।

वज़न (वज़न)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में वज़ान का अर्थ हथियार भी होता है। एक हैंडगन का वजन आमतौर पर लगभग पाँच किलोग्राम होता है और इसे भारी माना जाता है। वज़ान शब्द इसी भारीपन को दर्शाता है।

सफ़ेद

अंडरवर्ल्ड में हेरोइन को 'सफेद' कहा जाता है। मुंबई का इस्तेमाल पाकिस्तान और अफगानिस्तान से आने वाली खेपों के लिए एक सुरक्षित पारगमन बिंदु के रूप में किया जाता है।

सफेद और सफेद

दो दशकों से अधिक समय तक 'दादा' लोगों का पहनावा सफेद ही था, जब तक कि 1980 के दशक के मध्य में 'भाई' संस्कृति का बोलबाला नहीं हो गया। लगभग हर दादा या गैंगस्टर सफेद कमीज और सफेद पतलून पहनता था। यहां तक कि चप्पलें या महंगे जूते भी पहनावे से मेल खाते थे।

उस समय बाजार में ब्रांडेड कपड़े नहीं आए थे और कपड़े प्रतिष्ठित दर्जी ही सिलते थे। दादा युग के साथ ही यह फैशन फीका पड़ गया, खासकर दाऊद इब्राहिम और छोटा राजन के नेतृत्व में बंदूक चलाने के शौकीन गैंगस्टरों की नई पीढ़ी द्वारा शहर के अपराध जगत पर कब्जा करने के बाद।

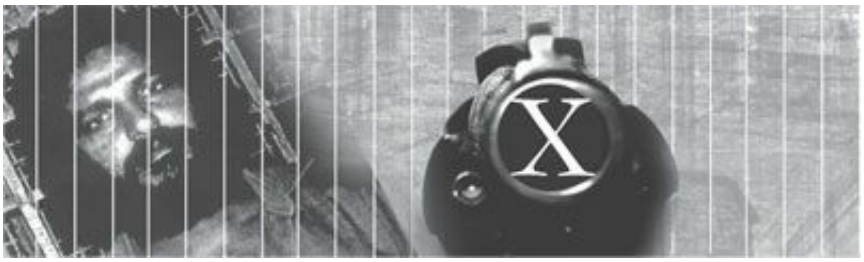

अतिरिक्त

एक्स्ट्राज़ वे लोग होते हैं जो हत्या में मुख्य शूटर की मदद करते हैं। वे निगरानी रखने से लेकर गोलीबारी में इस्तेमाल किए गए हथियार को लेकर भागने तक कई तरह के काम करते हैं। एक एक्स्ट्रा भागने वाली कार के ड्राइवर की भूमिका भी निभा सकता है।

Yeda (Mad Gopal)

येदा गोपाल शायद मुंबई के अंडरवर्ल्ड के सबसे शातिर गैंगस्टरों में से एक था।

गोपाल को उसके सनकी व्यवहार के कारण 'येदा' (पागल) उपनाम मिल गया था। पैसे इकट्ठा करने के अलावा उसने कभी कुछ सही नहीं किया। मंगलौर के पास स्थित अपने गृहनगर से पलायन करने के बाद, गोपाल ने ग्रांट रोड पर अलंकार सिनेमा के

पास पूर्णिमा रेस्तरां में वेटर के रूप में काम करना शुरू किया, इससे पहले कि वह व्यापारी से वित्तपोषक बने महेश ढोलकिया के साथ जुड़ गया। दाऊद इब्राहिम और उसका बड़ा भाई शब्बीर बांद्रा के पास लिंकिंग रोड पर स्थित सीजर पैलेस में नियमित रूप से आते-जाते थे, जो ढोलकिया के स्वामित्व में था।

होटल मालिकों के समूह ने गोपाल की एक गैंगस्टर के रूप में क्षमता का फायदा उठाने में जरा भी देर नहीं की। उन्होंने गोपाल को अपने देनदारों से अपनी ओर से पैसा वसूलने के ठेके देने शुरू कर दिए।

इससे पहले कि वह उस पैसे का इस्तेमाल कर पाता, इंस्पेक्टर प्रदीप सूर्यवंशी के नेतृत्व में एक विशेष दस्ते ने 18 अगस्त, 1991 को बोरीवली पूर्व में उसे गोली मार दी।

Yeh Accha Nahin Hua

दाऊद-राजन युद्ध की शुरुआत।

लगभग 1983 में, जब मुंबई पुलिस ने अंडरवर्ल्ड पर शिकंजा कसना शुरू किया, तो पुलिसकर्मी इब्राहिम कास्कर के बेटे को मुंबई से भागने पर मजबूर होना पड़ा। शहर में कई गंभीर अपराधों में नाम आने के बाद छोटा राजन को दाऊद का पीछा करना पड़ा।

दाऊद ने उदारतापूर्वक राजन को दुबई में खुली छूट दी और मुंबई के अंडरवर्ल्ड के संचालन की देखरेख का जिम्मा उसे सौंप दिया। यह कदम डी-कंपनी के अन्य सदस्यों को रास नहीं आया।

राजन की गिरोह जगत में लगातार बढ़ती लोकप्रियता ने सुनील सावंत, शरद शेट्टी, छोटा शकील और दाऊद के परिवार के कुछ सदस्यों जैसे उसके साथियों की ईर्ष्या

और क्रोध को आमंत्रित किया।

मामला तब और बिगड़ गया जब राजन के खास साथियों ने 23 अप्रैल 1992 को भादुप में शिवसेना पार्षद खिम बहादुर थापा की गोली मारकर हत्या कर दी। दाऊद के भाई नूरा और अनीस ने राजन के खिलाफ वोट दिया। खुद डॉन अपने लेफ्टिनेंट के इस अजीबोगरीब कदम से हैरान रह गया। खून के रिश्ते जीत गए और डॉन ने अपने भाई-बहनों को गिरोह के रोज़मर्रा के कामों में दखल देने की इजाज़त दे दी।

गिरोह के कुछ सदस्यों ने राजन को दाऊद के खिलाफ़ बोलने के लिए उकसाने की कोशिश भी की। लेकिन, लेफ्टिनेंट या तो बहुत चालाक था या वफादार, और उसने पलटकर कहा, 'दाऊद मेरा भाई है!' जब यह चाल नाकाम हो गई, तो उसे मारने और उसकी लाश समुद्र में फेंकने की एक और साजिश रची गई। दबाव में आकर राजन अपने गुरु को बिना बताए दुबई भाग गया।

"तीन दिनों तक दाऊद को पता ही नहीं चला कि उसका प्रमुख सहयोगी देश छोड़कर भाग गया है। संदेह से बचने के लिए उसके अपार्टमेंट में लाइट और एयर कंडीशनर चालू रखे गए थे," एक पूर्व सहयोगी ने बताया।

यह चाल दाऊद को अस्थायी रूप से धोखा देने में कामयाब रही होगी, लेकिन इसके दीर्घकालिक परिणाम गंभीर थे। कहा जाता है कि उसने धमकी भरे स्वर में कहा, "यह अच्छा नहीं हुआ।" संयोगवश, राजन का भागना मुंबई में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों के साथ हुआ, जिसने उसे डी-कंपनी से अलग होने की घोषणा करने का एक अच्छा कारण दिया।

जल्द ही गिरोह युद्ध ने घातक रूप ले लिया और दोनों गिरोह मुंबई की सड़कों पर एक-दूसरे का खून बहाने लगे।

यंग कंपनी (बाद में 'डी कंपनी' बन गई)

पठानों और दाऊद तथा उसकी 'यंग कंपनी' (जिसे आज डी कंपनी के नाम से जाना जाता है) के बीच गिरोहवार दुश्मनी बेहद भयंकर थी। यंग कंपनी डोंगरी और आसपास के इलाकों में सामाजिक अन्याय से लड़ने की इच्छा रखने वाले स्थानीय युवाओं का एक संगठन था।

12 फरवरी 1982 को दाऊद के बड़े भाई शब्बीर इस प्रतिद्वंद्विता का शिकार हुए। इसके बाद दाऊद ने स्थानीय दबंग बाऊजी साहब और रामा नाइक के साथ गठबंधन किया। नाइक और उसके गिरोह के सदस्यों का इस्तेमाल करते हुए उसने शहर में पठानों का सफाया करना शुरू कर दिया। योजनाबद्ध तरीके से, एक-एक करके, पठानों का सफाया कर दिया गया।

यूसुफ पटेल

अब्दुल मजीद अब्दुल्ला पटेल के रूप में जन्मे, मेमन मुस्लिम ने लगभग 1963 में अपने सहयोगी हाजी मस्तान के साथ मिलकर वस्त्र और चांदी की तस्करी में भाग लिया। वित्तीय विवाद के बाद उनके बीच मतभेद होने तक सब कुछ ठीक चल रहा था।

1977 में जनता सरकार ने तस्करों को माफी दे दी। पटेल ने भी जल्द ही इस योजना का फायदा उठा लिया। जहां कई लोग उनके संदिग्ध अतीत को भूल चुके थे, वहीं पटेल ने चुपचाप अपनी निर्माण कंपनी शुरू कर दी और पायधोनी की एक पुरानी इमारत से काम करते हुए अतिरिक्त एफएसआई (अतिरिक्त विशेष निवेश) हथिया लिया, जिससे उन्हें जल्द ही करोड़ों के जमीन सौदे मिल गए। नगर निगम को यह पता लगाने में लगभग 16 साल लग गए कि पटेल ने जमीन के रिकॉर्ड में हेराफेरी की थी

और दक्षिण मुंबई की कुछ इमारतों में अवैध रूप से एफएसआई का इस्तेमाल किया था।

अगले तीन वर्षों में, पटेल लगभग 50 अन्य मामलों में भूमि अभिलेखों में बड़े पैमाने पर हेरफेर से संबंधित पाए गए, जिनमें से अधिकांश में उन्होंने बीएमसी अधिकारियों के साथ मिलीभगत की थी।

Yogesh Paradkar (Pardya)

परद्या ने अपराध की दुनिया में कदम इसलिए रखा था ताकि वह उत्तरी मुंबई के उपनगर कंजर मार्ग के एक झुग्गी-झोपड़ी मालिक नजनी शाह पर कड़ी नजर रख सके।

परद्या ने अपने सहयोगी दिलीप भुवा के साथ मिलकर अपने गुरु अशोक जोशी के कहने पर शाह की बाजार में हत्या कर दी।

नांजी शाह के छोटे भाई हंसराज ने भी उनका अनुसरण किया। इसके बाद परद्या ने पांडुरंग माडवी के साथ साझेदारी की और उन्हें अक्सर परद्या-पांड्या के नाम से जाना जाता था। बाद में इस जोड़ी ने 1994 में अंधेरी में शिवसेना विधायक रमेश मोरे की गोली मारकर हत्या कर दी।

बाद में परद्या छोटा राजन गिरोह में शामिल हो गया। 2 मार्च 2000 को पुलिस इंस्पेक्टर प्रकाश जॉर्ज द्वारा मुठभेड़ में उसे मार गिराया गया।

यूसुफ बचकाना

यूसुफ बचकाना उर्फ यूसुफ सुलेमान कादरी, छोटा राजन गिरोह का सदस्य है। उसने अपने पूर्व गुरु राजू बचकाना के मार्गदर्शन में फाकलैंड रोड के रेड लाइट एरिया के आसपास चेन छीनने का काम शुरू किया, जहां वह 1980 के दशक के मध्य में रहता था।

अपने गुरु से ही उन्हें 'बचकाना' उपनाम मिला था। अपने करीबी लोगों के बीच वे नरेंद्र कुमार शर्मा के नाम से भी जाने जाते थे।

जेल में रहने के दौरान उनकी मुलाकात हाजी मुख्तार से हुई। मुख्तार ने यूसुफ का परिचय परवेज़ सिद्दीकी से कराया, जिन्होंने आगे चलकर यूसुफ को छोटा राजन के प्रमुख सहयोगी रोहित वर्मा से मिलवाया।

उसके बाद से यूसुफ का आपराधिक इतिहास बड़े स्तर पर चला गया, जिसकी शुरुआत कांदिवली स्थित मेहदी बार के मालिक लाला पर गोली चलाने से हुई। इसके बाद उसने मोहन कोटियन और दाऊद के वित्तपोषक मनीष लाला सहित कई हत्याएं कीं।

शून्य/शून्य डायल

जीरो डायल अक्सर दक्षिण मुंबई के डोंगरी और आसपास के इलाकों में दाऊद इब्राहिम के गढ़ में मौजूद मुखबिर को संदर्भित करता है। असल में इसका मतलब है दूर रहो, वरना मुखबिर या 'खबरी' पुलिस को सूचना दे देगा।

Ziauddin Bhukari Murder

अंडरवर्ल्ड के हलकों में यह धारणा फैल गई थी कि विधायक जियाउद्दीन भुकारी दाऊद इब्राहिम के करीबी थे। 1993 में बायकुला कंपनी के सदस्य विजय नरसले ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी थी।

ज़िंगाडा (छोटा गुरु)

बैंकॉक में छोटा राजन पर हमला करने वाले छह सदस्यीय आतंकी दस्ते का नेतृत्व सैयद मुद्दसिर हुसैन कर रहा था। राजन हमले में बच गया, लेकिन उसका मुख्य सहयोगी रोहित वर्मा गोली लगने से मारा गया। छोटे कद के हुसैन उर्फ मुन्ना जिंगाड़ा (अंडरवर्ल्ड में जिंगाड़ा का मतलब झींगा होता है) ने 1990 में अपराध की दुनिया में कदम रखा, जब उसने जोगेश्वरी (पूर्व) के पास इस्माइल यूसुफ कॉलेज के बाहर छेड़छाड़ की घटना को लेकर एक सहपाठी की चाकू मारकर हत्या कर दी।

हुसैन के निर्मम स्वभाव ने जल्द ही माफिया सरगना छोटा शकील के करीबी सहयोगी इस्माइल मालबारी का ध्यान आकर्षित कर लिया। कॉलेज के दिनों से ही हुसैन माफिया सरगना बनना चाहता था और अक्सर उसे चाकू के साथ देखा जाता था। जोगेश्वरी पूर्व का निवासी जिंगाड़ा आखिरकार शूटर बन गया जब उसे शकील के कहने पर बांद्रा के पास प्रकाश नायक उर्फ गोट्या को मारने का काम सौंपा गया।

मालबारी का अनुमान सही निकला। एक साल से भी कम समय में, 'लिटिल मास्टर' ने सात हत्याएं करके अपनी काबिलियत साबित कर दी। अंडरवर्ल्ड के सूत्रों का कहना है, "उसका कद उसकी क्रूरता को झुठलाता था।"

ज़िंगाड़ा की पहली बड़ी हत्या 4 अक्टूबर, 1997 को हुई, जब उसने गैंगस्टर अरुण गावली की अखिल भारतीय सेना के महासचिव जितेंद्र धबोलकर की गोली मारकर हत्या कर दी। उसी वर्ष छह अन्य हत्याओं को अंजाम दिया गया। ज़िंगाड़ा की हत्याओं

का सिलसिला तब रुका जब उसे 1997 में सांताक्रूज़ में हथियारों के एक छोटे जखीरे के साथ पकड़ा गया। 16 सितंबर, 2000 को ज़िंगाड़ा और उसके साथियों ने बैंकॉक, थाईलैंड में छोटा राजन और रोहित वर्मा पर उनके अपार्टमेंट में हमला किया।

जिंगाडा डी-कंपनी के प्रमुख कॉन्ट्रैक्ट किलर्स में से एक बना हुआ है।

To quote an old cliché, Mumbai spawns a dream a minute. On the surface and off it. In the twisted lanes and mohallas of Pydhonie and Dongri, those dreams have a language and character of their own. Dark, ruthless and wildly exciting.

As a journalist on the crime beat, the author has spent long hours talking to those in uniform, those in the underworld and those in the grey zone – people who work as police informers.

Much of what he has seen, heard and observed in over a decade of covering crime has found its way into print. But there's a lot that's spoken of in hushed tones, or buried in underworld lore.

The underworld speaks its own language, and words are invented on the spur of the moment. A shooter is referred to as an "artist", an informer is simply "zero dial", Dubai is "Delhi", while arrest is "get admitted". Most of these are aimed at sending the police or adversaries on a wild goose chase. It's a world that thrives on the spirit of enterprise, actively courts power and danger, and has conquered fear. The rules are straight and the ethics sacrosanct.

The principles of 'dhanda' apply equally here – risk, profit and competition are at the very core. An informer will think nothing of selling precious information on a rival if it can earn him extra bucks or goodwill from the police.

In these pages, the author shares some of the stories that take you through this universe – vibrant, dynamic and, yes, dangerous.

About the Author

J. Dey is a Mumbai-based journalist with over a decade's experience in crime reporting and investigation. He has worked with *The Indian Express, Channel 7, Hindustan Times* and is currently Editor–Investigations with *MiD-DAY*.

Elevate Your Life. Transform Your World.

JAICO BOOKS

www.jaicobooks.com Reference/Current Affairs

ISBN-13: 978-81-7992-850-9

₹ 275